फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 57 प्रभात जयपुर, शुक्रवार 27 सितम्बर, 2024 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

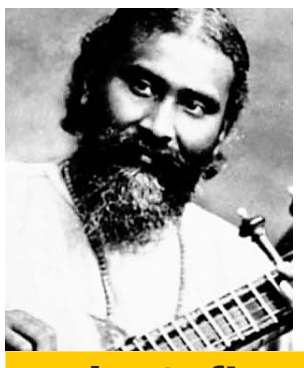

The Sufi Hazrat Inayat Khan

The founder of the present dispensation, Ruhollah Khomeini's grandfather, Syed Ahmad Musavi, migrated from Kintoor in Barabanki.

Brain changes in people who lost sense of smell

Covid-19's direct impact on the olfactory system often leads to a more pronounced, and sometimes, longer-lasting loss of smell.

हिमाचल की कांग्रेस सरकार ने यू.पी. की योगी सरकार को भी पीछे छोड़ा

योगी सरकार ने कांवड़ यात्रा के दौरान ढाबे के मालिक का नाम ''डिसप्ले'' करने का अस्थायी आदेश जारी किया था, पर, हिमाचल सरकार ने स्थायी नोटिफिकेशन जारी किया

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 सितम्बर। कांग्रेस-शासित हिमाचल प्रदेश की सरकार ने भी उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड सरकारों के उन आदेशों का अनुकरण किया है, जिनमें भोजनालयों एवं रेस्टोरेन्टों को अपनी आई.डी. प्रदर्शित करने के निर्देश दिये गये थे। हिमाचल सरकार के इस आदेश पर राजनेताओं और ऐक्टिविस्टों ने घोर आक्रोश व्यक्त किया है तथा सुखविन्दर सिंह सुक्खू सरकार के स्थायित्व पर सवाल खड़े किये हैं।

- पर, हिमाचल की सरकार का आदेश अनायास या गलती से नहीं निकला था। हिमाचल में स्थानीय व बाहरी का सवाल व विवाद इन दिनों काफी गर्माया हुआ है और इस तरह की तीन चार ''साम्प्रदायिक'' घटनाएं हो चुकी हैं।
- कांग्रेस भी इस बाहरी व स्थानीय विवादों से अछूती नहीं है। एक खेमा रोहिंग्या व बांग्लादेशियों को स्वीकार करने के पूर्णतया खिलाफ है। अतः वे ढाबों व थड़ियों के मालिकों का पहचान पत्र ''डिसप्ले'' करने के पक्ष में हैं।
- दूसरा खेमा इस पहचान पत्र की प्रक्रिया को, कांग्रेस की मूल धर्मनिरपेक्ष सोच के विरूद्ध मानता है।

कांवड़-यात्रा के दौरान, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा जारी किये गये आदेश की पुनरावृत्ति के अन्तर्गत, हिमाचल सरकार ने 25 सितम्बर को आदेश जारी किये कि राज्य के भोजनालयों एवं रेस्टोरेन्टों को उनके नाम प्रदर्शित करने होंगे। पी.डब्ल्यू.डी. एवं शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने कहा है कि यह आदेश यह सुनिश्चित करने के लिये जारी किया गया है कि ग्राहकों को किसी प्रकार की असुविधा का सामना नहीं करना पड़े। प्रसंगवश बता दें कि सर्वोच्च न्यायालय ने उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड सरकारों के इन आदेशों पर उस समय स्टे लगा दिया था, जब कई याचिकाकर्ताओं ने अदालत में यह कहा था कि इस आदेश का उपयोग जाति एवं धर्म के आधार पर भेदभाव करने में किया जा सकता है। हिमाचल सरकार का आदेश, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड सरकारों के इसी किस्म के आदेशों के एक कदम आगे हैं, उन दोनों सरकारों ने तो अस्थाई आदेश जारी किये थे, जबकि हिमाचल की अधिसूचना स्थाई है।

ऐसे समय, जब राहुल गांधी ''मोहब्बत की दुकान'' के नारे को काम में लेते हुये प्रचार कर रहे हैं, सुक्खू सरकार का यह आदेश विसंगत एवं भिन्न स्वर लिये हुये है तथा कांग्रेस की धर्मनिरपेक्ष राजनीति पर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाला है। हिमाचल के कांग्रेस नेता भी इस मुद्दे पर विभाजित बताये जाते हैं तथा ऐसी रिपोर्ट हैं कि विक्रमादित्य सिंह तथा मुख्यमंत्री स्पष्टीकरण के लिये दिल्ली तलब किये जायेंगे।

एक हिन्दू-समर्थक लहर पूरे राज्य में पिछले कुछ महीने से चलती दिखाई दे रही है तथा राज्य के निवासियों तथा बाहरी लोगों के बीच हुई आधा दर्जन से अधिक झड़पों की जानकारी मिली है। मार्च में, धर्मशाला के पास स्थानीय लोगों के साथ हुये किसी विवाद के चलते, एक सिख पर्यटक की पिटाई कर दी गई, जिससे उसकी मृत्यु हो गई थी। जून में सिरमोर जिले के नाहन नामक कस्बे में मुस्लिमों की दुकानों पर हमले किये गये, जिसके बाद कई मुस्लिम परिवार कस्बा छोड़ कर चले गये थे। सितम्बर में, सोलन में एक मुस्लिम दुकानदार पर हमला किया गया।

राज्य में गैर-हिन्दुओं के खिलाफ होते जा रहे माहौल के चलते, राज्य कांग्रेस के कुछ ग्रुप हिन्दू-समर्थक रूख इख्तियार कर रहे हैं, जबकि पार्टी के अन्य ग्रुपों का कहना है कि ऐसी नीतियाँ कांग्रेस के मूल धर्मनिरपेक्ष मूल्यों के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पूर्व मंत्री महेश जोशी के पुत्र को दुष्कर्म केस में फिलहाल राहत नहीं

जयपुर, 26 सितंबर। दिल्ली हाईकोर्ट ने पूर्व मंत्री महेश जोशी के बेटे रोहित जोशी के खिलाफ दुष्कर्म के मामले में फिलहाल राहत नहीं दी है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में दिल्ली पुलिस से जवाब मांगते हुए प्रकरण की सुनवाई 25 अक्टूबर को तय की है। अदालत ने यह आदेश रोहित जोशी की आपराधिक याचिका पर दिए। याचिका में उसके खिलाफ दर्ज दुष्कर्म की एफआईआर और आरोप पत्र को रद्द करने की गुहार की गई है।

- रोहित जोशी ने दुष्कर्म की एफ.आई.आर. तथा आरोप पत्र रद्द करने की याचिका दिल्ली हाई कोर्ट में लगाई थी। अदालत ने दिल्ली पुलिस से जवाब मांगते हुए 25 अक्टूबर की सुनवाई तय की।

सुनवाई के दौरान आरोपी याचिकाकर्ता की ओर से कहा गया कि जब तक याचिका तय नहीं होती, तब तक निचली अदालत में चल रही कार्रवाई पर रोक लगाई जाए। याचिकाकर्ता की ओर से सीनियर एडवोकेट हरिहरन ने कहा कि शिकायतकर्ता व रोहित के बीच सहमति से संबंध बने थे, और यह मामला हनीट्रैप का है। शिकायतकर्ता ने रोहित पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चीन की आक्रामक विदेशी नीति का आधार है अंधी राष्ट्रीयता, जो बचपन से कूट-कूट कर भरी जाती है

यहां कौमपरस्ती की इतनी इन्तिहा हो गई है कि आम नागरिक भी शर्मिंदगी महसूस कर रहा है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 सितम्बर। चीन का कट्टर राष्ट्रवाद अपने आप के लिए घातक होता जा रहा है।

चीन के शेनझेन शहर में एक मां ने उस शहर में मारे गए एक जापानी बच्चे की याद में फूल अर्पित करते हुए लिखा, ''आशा करती हूँ, स्वर्ग में नफरत नहीं होगी।''

विदेशियों के लिए नफरत को बढ़ावा देने के चीन के घोषित कार्यक्रमों को लेकर इस समय देश में दुःख और आत्म संदेह का जो भाव व्याप्त है, यह उसका लक्षण है। नफरत भरे कार्यक्रमों का निशाना जापानी थे और राज्य मीडिया ने उस देश के बारे में झूठी अफवाहें फैलाई थीं।

जापानियों के विरूद्ध ''हेट क्राइम'' की एक घटना में चीन के शेनझेन शहर में गत सप्ताह एक स्कूली बच्चे को चाकू मारे गए, जिसकी अस्पताल जाते समय मृत्यु हो गई। जापानी नागरिकों, जिनमें स्कूल जाने वाले बच्चे भी शामिल हैं, के विरूद्ध बढ़ते आक्रोश को दर्शाते हुए एक चीनी आदमी ने इस घटना को अंजाम दिया।

- चीन की इस कौमपरस्ती का लक्ष्य आजकल जापान है और जापानियों से घृणा का सबक छोटे बच्चों को प्रारम्भ से पढ़ाया जाता हैं, स्कूलों में, सरकारी मीडिया आदि द्वारा भी।
- नतीजा यह है कि चीनी युवकों के गिरोह पनप गये हैं, जो अपनी कौमपरस्ती साबित करने के लिये कुछ भी करने को तत्पर हैं।
- हाल ही में शेनझैन में एक जापानी बच्चे की स्कूल जाते समय, ऐसे ही एक युवक ने चाकू से गोद-गोद कर हत्या कर दी।
- चीन की आम जनता भी इस वीभत्स घटना से हिल गई और शोक व ग्लानि में डूब गई। देश में माहौल दुःख व अन्तरआत्मा को झकझोरने का व दिशा भ्रम का है। देश के कोने-कोने से मृत जापानी बालक के लिये सहानुभूति के संदेश पहुंच रहे हैं। एक मां ने लिखा, ''मैं यह ही प्रार्थना करती हूं कि स्वर्ग लोक में ऐसी घृणा तो न हो।''

बच्चे की मृत्यु से चीन सकते में आ गया तथा सामान्य चीनी नागरिकों में भारी पछतावा देखा गया। देश के दूरस्थ कोनों से भी इस जापानी स्कूल में पुष्पांजलियाँ भेजी जा रही हैं तथा देश में हो रही इन घटनाओं को लेकर सोशल मीडिया पर शोक तथा संताप की भावनाएं वायरल हो रही हैं।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्र.मंत्री मोदी ने डॉ. मनमोहन सिंह को जन्म दिन की बधाई दी

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह 92 वर्ष के हो गए हैं

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 सितम्बर। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह आज 92 वर्ष के हो गये। इस अवसर पर कांग्रेस सहित, विभिन्न पार्टियों के प्रमुख नेताओं ने उन्हें जन्म दिन की बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। सोशल मीडिया पर बधाइयों की बाढ़ जैसी आ गई।

- सभी दलों के नेताओं ने पूर्व प्रधानमंत्री को जन्म दिन की बधाई दी तथा उनके अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घ जीवन की शुभकामनाएं दीं। सभी नेताओं ने भारत को ग्रोथ और विकास के रास्ते पर ले जाने के लिए उनके योगदान की प्रशंसा की।
- राहुल गांधी ने कहा, आपकी विनम्रता, विद्वत्ता और देश के भविष्य को आकार देने में निस्वार्थ सेवाभाव हमेशा मुझे प्रेरित करता रहेगा।
- आम आदमी पार्टी के प्रमुख अरविंद केजरीवाल और असम के मुख्यमंत्री हिमान्त बिस्वा सरमा, एन.सी.पी. प्रमुख शरद पवार ने भी पूर्व प्रधानमंत्री को जन्म दिन की शुभकामनाएं दीं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने पूर्ववर्ती को उनके जन्म दिन पर बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री ने कहा, ''पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को जन्म दिन की बधाई। ईश्वर आपको स्वस्थ रखे एवं लम्बा जीवन प्रदान करे।''

सभी नेताओं ने भारत की ग्रोथ एवं विकास में उनके योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। सिंह 2004 से 2014 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे तथा 1991-96 के दौरान वे पी.वी. नरसिम्हा राव सरकार में देश के वित्त मंत्री थे। वित्त मंत्री के रूप में उनका कार्यकाल रूपान्तरकारी आर्थिक सुधारों के लिये जाना जाता है।

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी, जो आधुनिक भारत के स्वरूप में सिंह की केन्द्रीय भूमिका के बारे में अक्सर बोलते रहते हैं, ने विनम्रता एवं बुद्धिमता के लिये पूर्व प्रधानमंत्री की प्रशंसा की। गांधी ने ''एक्स'' पर अपने हृदयस्पर्शी मैसेज में कहा, ''डॉ. मनमोहन सिंह जी को जन्म दिन की बधाई। आपकी विनम्रता, बुद्धिमता एवं देश के भविष्य को स्वरूप देने में आपकी निस्वार्थ सेवा मुझे और करोड़ों भारतीयों को प्रेरित करती आ रही है। ईश्वर आपको सदैव स्वस्थ एवं प्रसन्न रखे। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने सिंह को भारत में उदारीकरण एवं आर्थिक सुधारों के अग्रदूत के रूप में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ऑर्गन ट्रांसप्लांट मामले में हाई कोर्ट ने चिकित्सकों को जमानत दी

जयपुर, 26 सितंबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने फर्जी एन.ओ.सी. के जरिए ऑर्गन ट्रांसप्लांट करने से जुडे मामले में आरोपी डॉक्टर्स संदीप गुप्ता व जितेन्द्र गोस्वामी सहित कंपाउंडर भानू लववंशी को जमानत पर रिहा करने के आदेश दिए हैं, जबकि किडनी ट्रांसप्लांट करवाने वाले बांग्लादेशी नागरिक अहसान उल कोबिर, नुरूल इस्लाम सहित सुखमय नंदी, सुमन जाना व कोऑर्डिनेटर विनोद सिंह को जमानत देने से इनकार कर दिया

- न्यायालय ने माना कि दोनों डॉक्टर फर्जी एन.ओ.सी. बनाने की कार्यवाही में शामिल नहीं हैं।
- किडनी ट्रांसप्लांट कराने वाले बांग्लादेशी नागरिक व कोऑर्डिनेटर व अन्य को जमानत देने से कोर्ट ने इन्कार किया।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कर्नाटक ने सी.बी.आई. की एन्ट्री पर रोक लगाई

कर्नाटक की सिद्धारमैया सरकार ने सी.बी.आई. को जाँच के लिए दी गई सहमति वापस ले ली है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 सितम्बर। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में राज्य में जाँच के लिए सी.बी.आई. को दी गई मंजूरी वापस ले ली गई है और एक तरह से केन्द्र बनाम कर्नाटक के बीच खुली जंग छिड़ गई है। इस फैसले को सिद्धारमैया व उनकी पत्नी के खिलाफ जमीन घोटाले में अदालत द्वारा जाँच के आदेश दिए जाने से जोड़ कर देखा जा रहा है।

कोर्ट द्वारा जाँच के आदेश देने के बाद मुख्यमंत्री के इस्तीफे की माँग तेज हो गई है और कर्नाटक के कानून मंत्री एच.के. पाटिल ने कहा कि राज्य सी.बी.आई. की पक्षपातपूर्ण कार्यवाही को रोकना चाहता है। कांग्रेस का दावा है कि सी.बी.आई. भाजपा के आदेश पर इसके नेताओं को निशाना बनाती है, खासकर चुनावों से पहले। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार के इस फैसले का सिद्धारमैया पर लगे आरोपों से कोई संबंध नहीं है।

- कर्नाटक सरकार के इस फैसले को, हाई कोर्ट द्वारा मुख्यमंत्री के खिलाफ जाँच की अनुमति दिए जाने से जोड़कर देखा जा रहा है।
- कर्नाटक सरकार के इस फैसले के बाद अब सी.बी.आई. राज्य सरकार की अनुमति के बिना मामले की जाँच नहीं कर सकती है।
- भाजपा तथा उसकी सहयोगी पार्टी जनता दल-एस ने सिद्धारमैया सरकार के इस फैसले की कड़ी आलोचना की तथा उनके इस्तीफे की मांग की।
- कांग्रेस का कहना है कि सी.बी.आई. के पक्षपाती रवैये के कारण यह कदम उठाया गया है और अब तक हमने जितने भी केस सी.बी.आई. को भेजे उनमें से कुछ में तो सी.बी.आई. ने जाँच भी शुरु नहीं की है और कुछ केसों में चार्जशीट फाइल नहीं की है।

कानून मंत्री पाटिल ने कहा, ''हम राज्य में सी.बी.आई. जाँच की खुली मंजूरी वापस ले रहे हैं। हम एजेंसी के दुरुपयोग के प्रति चिंता व्यक्त कर रहे हैं। एजेंसी पक्षपाती है, इसलिए हमने यह निर्णय लिया है। सारी कैबिनेट मुख्यमंत्री के साथ है, हमने उन्हें जवाबी कार्यवाही के लिए प्रोत्साहित किया है।''

इसका अर्थ है कि राज्य सरकार की लिखित अनुमति के बिना राज्य में सी.बी.आई. किसी भी केस की जाँच नहीं कर सकती है।

पाटिल ने कहा कि सी.बी.आई. के एक्शन से राज्य सरकार के मन में संदेह पैदा हो रहा है। हमने जितने भी केस सी.बी.आई. को रैफर किए हैं उन सभी में सी.बी.आई. ने चार्जशीट दायर नहीं की है। कई केस लंबित हैं। यही नहीं कई मामलों में तो उन्होंने जाँच तक करने से मना कर दिया है। विपक्षी दल शासित अधिकांश राज्यों पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल आदि ने पहले ही सहमति वापस ले ली है। अब इसमें कर्नाटक भी शामिल हो गया है।

अब ट्रायल कोर्ट ने सी.एम. को पुलिस केस फेस करने का आदेश दिया है और विपक्षी पार्टी भाजपा मुख्यमंत्री के इस्तीफे की मांगकर रही है। पार्टी का कहना है कि राज्य की पुलिस मुख्यमंत्री

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

100 करोड़ रूपए के मानहानि केस में संजय राउत को 15 दिन जेल की सजा

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। भाजपा नेता की पत्नी द्वारा दायर मानहानि के मुकदमे में उद्धव ठाकरे गुट के नेता संजय राउत दोषी करार दिए गए हैं। भारतीय जनता पार्टी के नेता किरीट सोमैया की पत्नी मेधा द्वारा शिवसेना उद्धव ठाकरे गुट के नेता संजय राउत पर मानहानि का केस दर्ज कराया था। आज इस मामले में मजगांव कोर्ट ने मानहानि

- राउत ने भाजपा नेता किरीट सोमैया व उनकी पत्नी पर शौचालय निर्माण की राशि के घोटाले में शामिल होने का आरोप लगाया था। जिसके बाद सोमैया ने 100 करोड़ रूपये की मानहानि का केस दायर किया था।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर, आधुनिकतम शहर बनेगा कर्नाटक में

इस इकोफ्रेंडली शहर को ''नॉलेज, रिसर्च और इनोवेशन'' का वैश्विक केन्द्र बनाया जाएगा

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 26 सितम्बर। कर्नाटक, जो कि हमेशा भाजपा- नीत केन्द्र सरकार के सौतेले व्यवहार की शिकायत करता है, ने अपने अत्याधुनिक शहर के.डब्ल्यु.आई.एन. (नॉलेज, वैलबीईंग, एण्ड इनोवेशन अर्थात क्विन) बनाने का काम शुरु कर दिया है। यह मेगा प्रोजैक्ट बैंगलूरु के समीप है। इसका लक्ष्य बैंगलुरु की भीड़ को कम करना है। यहां उन वैश्विक कम्पनियों को विश्वस्तरीय इन्फ्रास्ट्रक्चर दिया जाएगा, जो भारत को अपना घर बनाना चाहती है। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने शहर के डिज़ाइन का अनावरण किया और कहा कि क्विन सिटी का लक्ष्य एक गतिशील, इकोफ्रैंडली महानगर बनाने का है, जिसमें 5 लाख लोग रह सकेंगे।

यहां 465 एकड़ में फैला सोलर फार्म होगा, जो पूरे शहर की बिजली की जरुरत पूरी करने के लिए 0.69 मिलियन मेगावॉट बिजली बनाने में सक्षम होगा। यह भविष्य का महानगर होगा। जिसमें चार जिलों नॉलेज, हैल्थ, इनोवेशन और रिसर्च के लिए पर्याप्त बिजली, पानी होगा, हरियाली होगी और यहां सर्वश्रेष्ठ इन्फ्रास्ट्रक्चर मिलेगा।

क्विन सिटी किसी भी राज्य सरकार का अब तक सबसे विस्तृत रियल एस्टेट प्लान होगा, राज्य की राजधानी के अलावा। यह डाबास्पेट और डोड्डाबल्लापुर के बीच में होगा जो कि कैम्पेगौडा एयरपोर्ट से 60 किलोमीटर दूर और बैंगलुरु -पुणे ग्रीन फील्ड एक्सप्रैस वे से मात्र 5 किलोमीटर दूर है। इस प्रकार इसका इन्ट्रा व इंटर ट्रांसपोर्ट सिस्टम एकदम सुनियोजित होगा तथा

- बैंगलूरु के समीप स्थित यह शहर 5,800 एकड़ में बसेगा, जिसमें 465 एकड़ में फैला सोलर फार्म बनाया जाएगा जो शहर के उपयोग के लिए पर्याप्त बिजली उत्पादन करेगा।
- इस शहर में 5 लाख लोगों को बसाने का लक्ष्य है। विश्वस्तरीय कम्पनियों को इस शहर में लाने के प्रयास किए जाएंगे।
- यह शहर बैंगलूरु-पुणे-ग्रीन फील्ड एक्सप्रैस वे से मात्र 8 किलोमीटर दूर होगा। इस प्रकार इसकी, राज्य के व राज्य के बाहर के शहरों से बेहतर कनैक्टिविटी होगी।

इसका बैंगलौर -हुबली- मुम्बई एक्सप्रैस रेल मार्ग से सीधा सम्पर्क है और यह नैशनल हाइवे 44 तथा 648 के भी निकट है। उद्योग विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कर्नाटक लम्बे समय से भारत का ''इन्टलैक्चुअल पावर हाउस'' रहा है। यहां 50 से ज्यादा विश्वविद्यालय, 230 इंजीनियरिंग कॉलेज, 1700 आई.टी.आई. हैं। हमारे राज्य में देश का सबसे बड़ा ''नॉलेज पूल'' है। ये सिर्फ संस्थान नहीं हैं, बल्कि बदलाव के उत्प्रेरक और राज्य को की ग्रोथ को बढ़ाने वाले हैं।''

क्विन सिटी का लक्ष्य विश्व के 500 प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों को भारत में कैम्पस स्थापित करने के लिए आकर्षित करना है। ये कदम शिक्षा व उद्योग के रिश्ते को मजबूत करेंगे और कर्नाटक को वैश्विक शिक्षा के क्षेत्र में आगे लाएंगे। यहां लाइफ साईंस पार्क भी बनेगा जो क्विन सिटी को एशिया का प्रमुख मैडिकल शिक्षा केन्द्र बना देगा। इसके लिए देश और दुनिया के टॉप अस्पतालों को यहां आने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा।

इस वॉक-टू-वॉक मॉडल में यहां के निवासी प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ के सही तालमेल का लुत्फ उठा पाएंगे। इसमें कार्बन उत्सर्जन में भी भारी कमी होगी। इसमें उच्चस्तरीय जीवन शैली का प्रतिनिधित्व करने वाली आधुनिक सुविधाएं होंगी।

क्विन सिटी के विज़न में योगदान देने वाले एडवायज़री बोर्ड में बायोकॉन की अध्यक्ष किरण मजूमदार शॉ, नारायणा हैल्थ के संस्थापक डॉ. देवी शैट्टी, बॉस्टन युनिवर्सिटी के बोर्ड ट्रस्टी रैंच किम्बैल, वैक्सफर्ड साईन्स एण्ड टैक्नॉलजी के एग्ज़ीक्युटिव वाइस प्रैसिडैंट थॉमस ओशा, इन्फोसिस के पूर्व सी.एफ.ओ. एवं बोर्ड सदस्य मोहनदास पै, जैरोधा के सहसंस्थापक निखिल कामथ, एक्सेल के पार्टनर प्रशांत प्रकाश, चीफ कार्डियोथोरैसिक एवं वैस्कुलर सर्जन डॉ. विवेक जावाली, यू.टी. ऑस्टिन में इनोवेशन ऑन्त्रैप्रैन्यॉरशिप के स्टीफन एस. एक्कर और पेरिस के पॉलिटैक्नीक इंस्टीट्यूट के उपाध्यक्ष डॉमिनिक रॉसिन शामिल हैं।

यमुना एक्सप्रेस वे पर 1 अक्टूबर से टोल बढ़ेगा

ग्रेटर नोएडा, 26 सितंबर। यमुना एक्सप्रेस का सफर एक अक्टूबर से महंगा हो जाएगा। यमुना प्राधिकरण के बोर्ड की मीटिंग में टोल बढ़ाने की मंजूरी मिल गई है। जानकारी के अनुसार, यमुना प्राधिकरण ने टोल की दरें चार प्रतिशत बढ़ा दी हैं। टोल की नई दरें एक अक्टूबर से लागू होंगी। इससे पहले

- ग्रेटर नोएडा से आगरा तक अब कार चालकों को 295 रुपये तथा बस चालकों को 935 रुपये टोल देना पड़ेगा।

प्राधिकरण ने साल 2022 के मार्च में टोल की दरों में 12 प्रतिशत इजाफा किया था।

जानकारी के अनुसार, ग्रेटर नोएडा से आगरा तक कार चालकों को अब 295 रुपये टोल देना होगा। इससे, कार

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

सच्चा पड़ौसी वह नहीं जो तुम्हारे साथ उसी गली में रहता है बल्कि वह है जो तुम्हारे विचार स्तर पर रहता है। –रामतीर्थ

मानवता की सफलता सामूहिक शक्ति में है, युद्ध के मैदान में नहीं - पीएम मोदी

भारत का अपना संविधान है, जिसे भारत के लोगों द्वारा बनाया गया है और स्वयं को समर्पित किया। इसे संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर, 1949 को अंगीकार किया गया। यह संविधान 26 जनवरी, 1950 से पूर्ण रूपेण लागू हुआ। भारत एक गणराज्य है। यह विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।

भारत में सन् 1951-52 को पहली बार आम चुनाव हुये थे। लोकसभा और विधान सभाओं के चुनाव एक साथ कराये गये थे। सन् 1967 में राज्य की विधान सभायें भंग हुई थीं, उस समय तक यह व्यवस्था रही। एक देश-एक चुनाव होता रहा। 1967 के बाद अब यह स्थिति पैदा हो गई है कि देश में लोकसभा और विधान सभा के चुनाव कभी भी होते रहते हैं। हमारे देश में पंचायतों व लोकसभा आदि का कार्यकाल 5 वर्ष का है। कभी भी चुनाव होने के फलस्वरूप देश का विकास रूक जाता है। शासन पर भी भारी दवाब बढ जाता है। चुनाव के दौरान सरकारें अपनी नई योजनाओं की घोषणा नहीं कर पाती हैं। चुनावों का खर्चा भी बढ जाता है। व्यवस्थायें ढ़ीली पड जाती हैं। राजनीतिक गतिविधियां उलझ जाती हैं। नेतागण अपने क्षेत्र में काम न कर, चुनाव क्षेत्र में दिखाई देते हैं। व्यवस्थायें शिथिल हो जाती हैं। दुर्भाग्य है आपसी कटुता गहरी हो जाती है। समरसता खो जाती है।

कई वर्षों से इस ओर सुधार के कदम उठाने की बातें उठती हैं और सुधार न होकर अव्यवस्थायें अधिक पनप रही हैं।

वर्तमान में राजनीति में कटुता बढ रही है। नेतागण एक दूसरे की शक्ल नहीं देखना चाहते। सभी नेतागण यह तो मानते हैं कि चुनाव सुधारों की दिशा में कुछ योजनायें बनायें। खर्चा कम करने व समय की बरबादी को रोकें; किन्तु स्थिति बिगडती जा रही है।

विशेषतौर पर कांग्रेस व बीजेपी के मध्य जो अविश्वास की लकीरें खिंच रही हैं, वे बढती जा रही हैं। मोदीजी व राहुलजी के मध्य संबंध इतने कटु हो चुके हैं कि मोदीजी की प्रत्येक बात को, कार्य को, योजना को राहुलजी नकारते दिखाई देते हैं।

देश की राजनीति हरियाणा व जम्मू कश्मीर के चुनावों में फंसी हुई है और इसी समय वन नेशन वन इलेक्शन का नारा भाजपा ने दे दिया। दूसरी ओर राहुलजी ने जाति जनगणना कराने को आरक्षण के लिये आवश्यक एजेण्डा निर्धारित कर दिया है।

केन्द्र सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक देश एक चुनाव की समस्या को हल करने के हेतु एक कमेटी बनाई थी। उस कमेटी ने अपनी सिफारिशों के साथ रिपोर्ट राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू को सौंपी है। इसके अनुसार दो चरणों में सन 2029 तक इन सिफारिशों को लागू किया जावेगा। पहले चरण में लोकसभा व विधान सभाओं के चुनाव एक साथ होंगे और दूसरे चरण में 100 दिन के भीतन पंचायतों के व नगरपालिकाओं के चुनाव कराना प्रस्तावित है।

यह माना जाता है सन 2029 में सभी चुनाव एक साथ सम्पन्न होंगे। सभी चुनावों के लिये एक ही वोटर लिस्ट काम में ली जावेगी।

सरकार की मंशा है कि शीतकालीन सत्र में इस पर अमल प्रारम्भ हो जाये। सरकार का प्रयास होगा कि एक देश एक चुनाव के लिये सर्व सम्मति बनाई जावे। सभी पक्षों से वार्ता होगी। सरकार ने घोषणा की है कि एक क्रियान्वयन कमेटी का गठन भी किया जावेगा।

वन नेशन वन इलेक्शन के महत्व को समझने के लिये हमें पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की रिपोर्ट के महत्व को समझना होगा। श्री रामनाथ कोविंद यशस्वी देश के राष्ट्रपति रहे और गतिशीलता के साथ उन्होंने अपने दायित्व को निभाया। वे एक अच्छे एडवोकेट भी रहे हैं उन्हें संविधान की पूरी जानकारी है। उनकी अध्यक्षता में गठित कमेटी में भी देश के प्रसिद्ध बुद्धिजीवी थे। सभी राजनीतिक पार्टियों को वार्ता का अवसर दिया गया था। 47 राजनीतिक पार्टियों के नेताओं ने अपने विचार साझा किये थे। 15 राजनीतिक पार्टियों को छोड़कर शेष 32 ने एक राष्ट्र एक चुनाव के कार्यक्रम को समर्थन दिया था। देश के प्रसिद्ध संविधान विशेषज्ञों ने, जिनमें श्री सुभाष कश्यप व श्री हरीश साल्वे ने महत्वपूर्ण सुझाव दिये थे। कमेटी के अन्य सदस्य थे गृहमंत्री श्री अमित शाह, श्री गुलाव नवी आजद, श्री संजय कोठारी आदि थे। आमंत्रित सदस्यों में श्री अर्जुन मेघवाल व डा. नितिन चन्द भी थे। लगभग 191 दिनों में कमेटी ने अपनी रिपोर्ट तैयार की थी। रिपोर्ट 18626 पृष्ठों की है।

देश का शासन इस समय दृढ़ संकल्प और दृढ़ निर्णय लेने वाले प्रधानमंत्री मोदी के हाथ में है, जो कई बार परीक्षा में पास हो चुके हैं। चाहे वह नोटबंदी की हो अथवा कोरोना या सर्जिकल स्ट्राइक की अथवा अनुच्छेद 370 की समाप्ति का। इरादे बुलंद हों तो उन्नति के शिखर पर पहुंचना कठिन नहीं है। एक देश-एक चुनाव की प्रक्रिया एक क्रान्तिकारी कदम है जो भारत को विकास की ऊँची चोटी पर पहुंचायेगा।

एक देश-एक चुनाव का अधिकांश लोगों ने समर्थन किया था। विरोध करने वाली पार्टियों में मुख्य थे समाजवादी पार्टी, राष्ट्रीय जनता दल, तृणमूल कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, कांग्रेस आदि। मल्लिकार्जुन खडगे कांग्रेस अध्यक्ष ने एक देश-एक चुनाव को सर्वथा अव्यवहारिक कहा है। उन्होंने इस संविधान व संघवाद के विरूद्ध माना है।

समर्थन करने वालों ने न केवल साथ साथ चुनावों का समर्थन किया, अपितु संसाधनों की बचत होने का उल्लेख किया। इनका मत था कि साथ साथ चुनावों से सामाजिक तालमेल, समरसता को बल मिलेगा, आर्थिक विकास को गति मिलेगी। इन लोगों ने विकल्प अपनाने की पुरजोर अपील की और वकालत भी की।

एक देश-एक चुनाव के विकल्प का विरोध भी हुआ। विरोध करने वालों का कहना था कि इसे अपनाने से संविधान की मूल संरचना खण्डित होगी। यह व्यवस्था राष्ट्रपति शासन की ओर ले जायेगी। इस व्यवस्था को वे अलोकतांत्रिक मानते हैं। ओवेसी ने कहा इसके फायदे भी हैं, नुकसान भी।

सब पार्टियों ने स्वीकार किया है कि सन् 1951-52, 1957, 1962 व 1967 में जो चुनाव हुये उस समय लोकसभा व विधान सभा चुनावों की मतदाता सूची एक थी।

कमेटी की सिफारिश है कि (1) पहले हर दस साल में दो चुनाव होते थे; अत: व्यवस्था की दृष्टि से, विकास को गति देने हेतु एक देश-एक चुनाव उचित विकल्प है। (2) चुनाव दो चरणों में हो। (3) एक मतदाता सूची व पहिचान पत्र बने (4) संविधान में आवश्यक संशोधन हों। (5) पांच वर्ष में चुनाव होने से सरकार प्रत्येक वर्ष आलोचना से बचेगी और अधिक सक्रियता से अपना कार्य व देश का विकास करेगी (6) प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने घोषणा की है कि एक देश-एक चुनाव लोकतंत्र की मजबूती और विविधता की ओर बढ़ाया गया, बडा कदम है। (7) लोकसभा और राज्यों के चुनाव एक साथ कराने के लिये राज्यों के समर्थन की आवश्यकता नहीं है। अनुच्छेद 83 (संसद की अवधि) अनुच्छेद 172 राज्य विधान मंडलों की अवधि में संशोधन करना होगा नया संशोधन 82क लाया लावेगा और इस हेतु बिल प्रस्तुत करना होगा। यह कार्य बिना राज्यों की सहमति के होगा।

कुछ राजनीतिक पार्टियों का कथन है कि एक देश-एक चुनाव में खर्चा बहुत बढ जावेगा। एक चुनाव में 26 लाख ईवीएम भी कम पडेंगे। वेयर हाउस की समस्या की किल्लत परेशान करने वाली है। पोलिंग बूथों की संख्या लोकसभा के लिये चुनावों में सन् 2024 में 12 लाख थी अब 2029 में यह संख्या 13 लाख 47 हजार से अधिक होगी विधानसभा के यदि साथ-साथ चुनाव हुये तो यह संख्या और भी अधिक हो जावेगी। एक अनुमान के हिसाब से 7951 करोड का अतिरिक्त भार आयेगा।

पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने एक देश-एक चुनाव की महत्ता को अपनी रिपोर्ट में माना है। कानूनानुसार कार्यवाही करने में जो भी खर्चा आयेगा, उसे बहन तो करना ही होगा। देश अपने यान का चांद की सतह पर भेजने का खर्चा उठा रहा है, इसके खर्चे को भी वहन करेगा। देश सिर ऊँचा कर जीना जानता है। इसके किसी को शक करने की गुंजायश नहीं है, भारत विकास और उन्नति के मार्ग पर है।

देश का शासन इस समय दृढ़ संकल्प और दृढ़ निर्णय लेने वाले प्रधानमंत्री मोदी के हाथ में है, जो कई बार परीक्षा में पास हो चुके हैं। चाहे वह नोटबंदी की हो अथवा कोरोना या सर्जिकल स्ट्राइक की अथवा अनुच्छेद 370 की समाप्ति का। इरादे बुलंद हों तो उन्नति के शिखर पर पहुंचना कठिन नहीं है।

एक देश-एक चुनाव की प्रक्रिया एक क्रान्तिकारी कदम है जो भारत को विकास की ऊँची चोटी पर पहुंचायेगा। अमरीका, फ्रान्स, स्वीडन, साउथ अफ्रीका, फिलिपिन्स आदि देशों में सभी स्तर पर एक साथ चुनाव होते हैं।

पंचतंत्र की एक कहानी से अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा। देश के जंगल में सभी प्रकार के जानवर थे। शेर, हाथी, घोड़ा, ऊंट, गधा आदि। शेर जंगल का राजा शेर था। सभी जानवर शेर को बहुत इज्जत देते थे। यह भी सच था कि ऊँट सबसे कुरूप जानवर था और गधा आवाज सें कर्कश। ऊँट व गधे को अन्य जानवर अपने पास भी नहीं बिठाना पसन्द करते। सब शेर के गीत गाते थे। यह बात ऊँट व गधे को पसन्द नहीं थी। एक दिन उन्होंने यह निर्णय लिया कि जब कोई हमसे बात नहीं करता है तो हम तो एक दूसरे को महिमा मंडप कर सकते हैं। उन्होंने निर्णय लिया कि जब भी कोई शेर पक्ष के जानवर हमारे पास आवे तो हम दूसरे की प्रशंसा प्रारम्भ कर दें। ऊँट ने गधे से कहा तुम मेरे लिये कहना 'अहोरूपम' और मैं तुम्हारी आवाज सुनकर कहूँगा 'अहोध्वनि'। आज विपक्ष के नेताओं के चाहने वाले अपने ही लोगों के लिये 'अहोरूपम', 'अहोध्वनि' की वाणी बुलन्द कर रहे हैं। शासन पक्ष यह जानते हुये कि उनके पास पर्याप्त मत नहीं है, फिर भी एक देश-एक चुनाव का नारा बुलन्दगी से कर रहे हैं क्योंकि यह विकल्प देश के विकास के लिये, देश की एकता और अखण्डता के लिये परम आवश्यक है। मोदी जैसा विश्व नेता ही है जो यूएन में सिर ऊँचा कर गर्व के साथ कह सकता है, **Success of humanity does not lie in battle field** हम उस देश के लोग हैं जहां गंगा बहती है। 'अहोरूपम-अहोध्वनि' हमारी संस्कृति नहीं है। देश का विकास हमारी पहली पसंद है।

'एक देश-एक चुनाव' हमारा लक्ष्य है।

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

"डिजिटल अरेस्ट" की बढ़ती घटनाओं का खौफ और बेपरवाह मोबाइलधारक

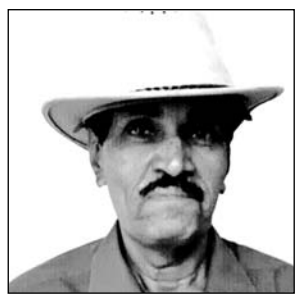

मिश्रीलाल पंवार

बदलते टैक्निकल दौर में मोबाइल एक तरफ आदमी की पहली प्राथमिकता बन गई है,वहीं इसके द्वारा साइबर माफिया खूब फल-फूलने लगा है। लोग इस खतरे से बेपरवाह है। परिणाम यह होता है कि वह साइबर फ्राड का आसानी से शिकार हो जाता हैं। इस बदलते आधुनिक युग में आम जनजीवन पर डिजिटलाइजेशन का खास प्रभाव है।डिजिटलाइजेशन की वजह से अब साइबर ठग भी दिन-प्रतिदिन हाईटेक होते जा रहे हैं। साइबर ठग हर दिन नए-नए तरीकों से ठगी की घटना को अंजाम दे रहे हैं। ऐसे में इन दिनों साइबर ठगी का एक नया तरीका 'डिजिटल अरेस्ट' सामने आया है। डिजिटल अरेस्ट एक ऐसा शब्द है जो कानून में नहीं है। लेकिन, अपराधियों के इस तरह के बढ़ते अपराध की वजह से इसका नामकरण हुआ है।

जोधपुर में पिछले कुछ दिनों से 'डिजिटल अरेस्ट' की हो रही घटनाओ ने लोगों का ध्यान इस तरफ खींचा है। अत्यंत चिंताजनक बात यह है कि लोग देख-सुन कर भी लापरवाही बरत रहे है। आश्चर्यजनक तो यह है कि इन घटनाओं का शिकार होने वाले हाई-फाई सोसायटी के लोग हैं। डिजिटल अरेस्ट के मामले इन दिनों तेजी से बढ़ रहे हैं। डिजिटल अरेस्ट के जरिए साइबर ठग आसानी से लोगों को अपना शिकार बना रहे हैं। जोधपुर में इसी माह तीन पढ़ी-लिखी महिलाएं इसका शिकार हो चुकी हैं।

साइबर ठगी का पहला मामला पिछले दिनों सामने आया था। ठग ने एक आईटीआई महिला प्रोफेसर को डिजिटल अरेस्ट कर उससे 13 लाख रुपये की ठगी कर ली। आरोपी साइबर ठग ने पकड़ा महिला प्रोफेसर को मनी लॉन्ड्रिंग में आरोपी बताकर और खुद को मुंबई क्राइम ब्रांच का बड़ा अधिकारी बात कर इतना डराया कि उसने उसकी हर बात माननी शुरू कर दी। उसके बाद उन्होंने आरटीजीएस और चेक के जरिये करीब 13 लाख रुपये की ठगी को अंजाम दे दिया। इसके एक सप्ताह बाद ही साइबर अपराधियों ने जोधपुर के डॉ. एसएन मेडिकल कॉलेज की सेवा निवृत्त प्रोफेसर को निशाना बनाया । इस सेवा निवृत्त महिला प्रोफेसर को लगभग 14 दिनों तक डिजिटल अरेस्ट कर उसके खाते से 87 लाख से अधिक की रकम हड़प ली है। पीड़ित महिला डॉक्टर को शातिरों ने कस्टम विभाग के अधिकारी बनकर बात की और पार्सल में ड्रग्स और फर्जी एटीएम कार्ड होने की जानकारी देते हुए 87 लाख रूपए खातों में डलवा दिए।

सेवानिवृत महिला डॉक्टर अरूणा सोलंकी ने बताया कि 31 जुलाई को उनके मोबाइल पर किसी शख्स प्रमोद कुमार का वाट्सअप कॉल आया था और खुद को मुंबई कस्टम विभाग का अधिकारी बताया। उसने कहा कि उनके द्वारा ग्लोबल इंटरनेशनल को एक पार्सल भेजा गया था जिसमें ड्रग्स, फर्जी एटीएम कार्ड और अन्य सामान भेजा गया है। आपको गिरफ्तार किया जाएगा। इस पर सेवानिवृत अरूणा सोलंकी ने कहा कि उनके द्वारा कोई पार्सल नही भेजा गया है तो शातिर प्रमोद कुमार ने अपने सीनियर ऑफिसर सुनील कुमार से बात कराई। इस पर सुनील कुमार ने उक्त जानकारी के साथ ही चार पत्र वाटसअप पर भेजे जिसमें सीबीआई अरेस्टिंग, वारंट, एसेज ऑर्डर एवं केस के बारे में जानकारी थी। फिर शातिर ने उनसे बैंक एकाउंट एवं प्रोपर्टी के बारे में जानकारी मांगते हुए आधार कार्ड नंबर आदि लिए। बाद में उन्हें किसी अनिल यादव से बात कराई।

अनिल यादव नाम के शख्स ने कहा कि उन्हें सब बातों से बचना है तो वे 51 लाख रूपए आर्मी डिमाउंड के नाम पर ट्रांसफर करें। इसके बाद उसने ब्यूइल एसीकेस में 8 लाख मांगे। अन्य 28 अगस्त को अरेस्ट की धमकी दी गई। बदमाशों ने 3 एफडीएस में लीगल एक्शन के लिए 21 लाख की डिमाण्ड रखी। सेवानिवृत डॉक्टर अरूणा सोलंकी घबरा गई और उन्होंने अपनी एफडी तुड़वाकर उनके खातों में 21 लाख रूपए जमा करवाए। 3 सितंबर को बदमाशों ने उन्हें नो क्राइम बॉण्ड प्राप्त करने के लिए जिसके एवज में 5 लाख रूपए मांगे गए। तब डॉक्टर अरूणा ने यह सब करने से मना कर दिया। इस पर उन्होंने धमकाया कि वे देश-विदेश में कहीं भी यात्रा नहीं कर पाएंगी। इसलिए बॉण्ड भरना पड़ेगा, तब उन्होंने फिर 2 लाख रूपए उनके खातों में भेज दिए। कुल मिलाकर सेवानिवृत महिला डॉक्टर अरूणा सोलंकी से 87 लाख रूपए ऐंठ लिए गए। बाद में उन्हें ठगी का अहसास हुआ। इसी तरह दो दिन पहले महिला दंत चिकित्सक को डिजिटल अरेस्ट का शिकार बनाते हुए साइबर ठग ने छह लाख रूपए ऐंठ लिए।

इस बार व्यास डेंटल कॉलेज की डॉक्टर ऋमता माथुर साइबर लूटेरों की शिकार हुई है। दर्ज रिपोर्ट के अनुसार 20 सितंबर को शाम 04.15 बजे उनके वाटसएप्प नंबर पर वीडियो कॉल आया । जिसमें आदमी दिखाई दे रहा था जिसके पुलिस की वर्दी पहनी हुई थी, उसने अपना नाम विजय खन्ना बताया एवं बोला कि आपके नाम का एक खाता कैनरा बैंक मुंम्बई में खोला गया। आपके खाते में अनाधिकृत रूप से पैसा आया है। फिर उन्होंने बोला आप, अस्पताल से सीधा घर पर चले जाओ किसी को इस बारे में बताना नहीं है। फिर उसने वाटसएप्प पर नरेश गोयल मनी लॉन्ड्रिंग केस के दस्तावेज की दो कॉपी भेजी। जिसमे लिखा था कुल 247 एटीएम कार्ड बरामद हुए है जो अलग-अलग कार्ड होल्डर के नाम के है एवं सीबीआई इसकी जांच कर रही है। यह जांच आकाश कुलकर्णी द्वारा निर्मित की गई है। उसके बाद उसने सर्विलांस रूल्स एंड रेगुलेशन का पीडिएफ भेजा ओर वाटसएप्प विडियों कॉल ऑन रखने का बोला व किसी से बात नहीं करने का बोला। यदि किसी से बात करना है तो वाटसएप्प कॉल ऑन करके बात करनी है। उसके बाद उसने बोला कि आप पूरी रात वीडियो कॉल ऑन करके हमारे सामने रेस्ट करोगी एवं बोला कि आपको 24 घंटे के लिए डिजिटल अरेस्ट पर रखा जा रहा है।

आरोपी द्वारा पूरी रात वीडियों कॉल ऑन रखा गया। 21 सितंबर की सुबह 8.55 मिनट पर वाटसएप्प नंबर पर वीडियो कॉल आया जिसने अपना नाम ऑफिसर विजय खन्ना बताया। फिर वह कॉल चलता रहा। फिर उसने वाटसएप्प पर डिजिटल कस्टडी का पीडिएफ भेजा। उसने बोला कि आप राहुल गुप्ता वेच नंबर एफ ए 263521 के नाम सिंकिग प्रायरटी इनवेस्टिकेशन के लिए एपलिकेशन लिखो। तब उनके कहे अनुसार एपलीकेशन लिखी तब उन्होंने एपलीकेश अप्रवुल का पीडिएफ भेजा। उसने सुप्रीम कोर्ट को सिक्रेट सुपरविजन एकाउंट के साथ एकाउंट जोड़ने का बोला तब उनके कहेनुसार एप्पलीकेशन लिखी।

-छह लाख भेजने को कहा

इस पर शातिर ने बाद में कहा कि तुरंत कैनरा बैंक में जाकर खाता नंबर बैंक आईसीआईसी बैंक आईएफएससी कोड पर 6 लाख रूप्ये भेजो। तब 06 लाख रूपए आरटीजीएस से किए थे। खाता धारक का नाम न्यु समा रोडवेज आया था। डाक्टर ने उसके खाते में 6 लाख रूपए भेज दिए।

डॉक्टर नम्रता माथुर के अनुसार आरोपी ने बोला कि आपके और भी किसी बैंक में खाता है। तब बोला मेरा एक खाता एसबीआई में है तब शातिर ने उस अकाउंट से 06 लाख रूपए दूसरे खाता संख्या पर भेजने को कहा। इस पर परिवादी को शक हो गया कि उन्हें डिजिटल अरेस्ट किया गया है और साइबर ठगी की जा रही है। इसके बाद उन्होंने रुपए नहीं भेजे और पुलिस की शरण ली।

एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि इसमें ठगी करने के 4-5 तरीके होते हैं। जैसे, किसी कूरियर का नाम लेकर कि इसमें गलत सामान आया है। कुरियर में ड्रग्स है, जिसकी वजह से आप फंस जाएंगे। आपके बैंक खाते से इस तरह के ट्रांजैक्शन हुए हैं जो फाइनेंशियल फ्रॉड रिलेटेड हैं। मनी लॉन्ड्रिंग, एनडीपीएस का भय दिखाकर अधिकतर उन लोगों को फंसाया जाता है, जो पढ़े-लिखे और कानून के जानकार होते हैं। ऐसे लोगों को डराकर उनसे डिजिटल माध्यम से फिरौती मांगी जाती है। अगर उनके खातों में पैसे नहीं हैं तो उनको लोन दिलवाया जाता है। कई बार उनके पास लोन लेने वाले एप्स नहीं होते हैं तो उन एप्स को भी डाउनलोड कराया जाता है। कई बार दो से तीन दिन तक डिजिटल अरेस्ट रखा जाता है। लोगों को चाहिए वे बेपरवाह ना रहे। किसी भी अज्ञात का फोन अटेण्ड करते समय पूरी सावधानी बरतनी चाहिए। किसी भी प्रकार का शक होने पर पुलिस को तुरंत सूचना देनी चाहिए।

-मिश्रीलाल पंवार, जोधपुर

मंडावा ठाकुर अंगद देव के सार्थक प्रयासों से श्रवण सिंह की रोमानिया से भारत वापसी हुई

- **ठाकुर अंगद देव ने रोमानिया में भारतीय दूतावास में राजनयिक वीरेन्द्र और रोमानिया की संसद में भारतीय मूल के सांसद भवानी जोबोट से बात कर श्रवण सिंह की भारत वापसी कराई**
- **तोगावास (चूरू) का श्रवण सिंह पुत्र मदन सिंह जो कि रोमानिया में नौकरी के लिए गया था,छः माह से उसका कोई अता-पता नहीं था**

जयपुर। मंडावा ठाकुर अंगद देव के सार्थक और उच्चस्तरीय प्रयासों से तोगावास (चूरू) के श्रवण सिंह पुत्र मदन सिंह की रोमानिया से सकुशल घर वापसी हुई है। श्रवण के चाचा जो हर तरह से निराश होकर अपने भतीजे की सकुशल घर वापसी के लिए एक माह पहले मंडावा ठाकुर अंगददेव से मिले और उनको अपने परिवार के सदस्य अपने भतीजे श्रवण जो पिछले दो साल से रोमानिया में नौकरी के लिए गया था, उसके बारे में विस्तार से जानकारी दी।

बताया कि पिछले छ: माह से उसका कोई अता-पता नहीं है और सरकार भी कोई मदद करने की स्तिथि में नहीं है क्योंकि उसका सभी से संपर्क नहीं हो पा रहा है वो रोमानिया में लापता हैं जो एक कंपनी में नौकरी करने गया था, कोई कारण वश वो कंपनी बंद हो गई और श्रवण और उसके साथियों को वापस वतन वापसी के लिए भेज दिया तो इनका वीजा खत्म हो गया और श्रवण का वहा पर पासपोर्ट खो गया। वह वहां पर छोटी उम्र होने और पराए देश में होने के कारण डर गया और उसी डर के कारण अपने आपको छुपाते रहा। ऐसे ही हालातों में छ: माह का समय बीत गया। इसी बीच यहां श्रवण के घर पर घरवालों ने सब जगह जाकर भी कोई उम्मीद नहीं दिख रही थी तो मंडावा के पास ही के गांव में श्रवण के परिजनों की रिश्तेदारी में ये बात पता चली तो उन्होंने श्रवण के परिजनों को ठाकुर अंगद देवजी से मिलवाया और अपने परिवार के लाडले के रोमानिया में लापता होने के बारे में बताया तो ठाकुर अंगददेव ने परिवारजनों को ढांढस बंधाते हुए आस्वश्त किया और उसी दिन से इस मुश्किल जिसके बारे में कोई अता-पता नहीं, मिशन की शुरुआत हुई।

ठाकुर अंगद देव जी ने अपने उच्चस्तरीय संबंधों से रोमानिया में भारतीय दूतावास में राजनयिक वीरेन्द्र को इस मामले से पूरी तरह से अवगत कराया और उनसे श्रवण को ढूंढने में मदद करने की बात की। इसी दौरान अपने और एक उच्चस्तरीय संबंध रोमानिया की संसद में भारतीय मूल के सांसद भवानी जोबोट से बात हुई। आखिरकार अंगद देवजी के अथक और उच्चस्तरीय प्रयासों का सार्थक परिणाम श्रवण को खोज निकाला। श्रवण जो छ: माह से लापता था। उसको ठाकुर अंगद देव और उनके साथ भारतीय दूतावास के वीरेंद्र और रोमानिया सांसद भवानी जोबॉट ने खोज निकाला। इस खबर से चिंतित परिवार जनों के चेहरे की चिंता बहुत हद तक दूर हुई।

ठाकुर अंगद देव के कहने पर भारतीय दूतावास ने और भारतीय मूल के सांसद भवानी रोबॉट ने श्रवण का जो ना बोलने की स्थिति में था ना चलने की स्थिति में था का वहां पर उपचार करवाया और फिर उसके सारे डॉक्यूमेंट जो खो गए थे उनको वापस बनवाए और श्रवण को भारत वापसी करवाई। आखिरकार ठाकुर अंगददेव जी के एक माह के सघन प्रयासों से श्रवण की भारत वापसी हुई।

गांधीसागर झील को स्वच्छ एवं अतिक्रमणमुक्त कर सौंदर्यीकरण हेतु एनजीटी में याचिका दायर

भीलवाड़ा, (निसं)। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल सेन्ट्रल जोन भोपाल के न्यायिक सदस्य शिवकुमार सिंह व एक्सपर्ट मेम्बर डॉ. अफरोज अहमद की बैंच ने भीलवाड़ा निवासी पर्यावरणविद् बाबूलाल जाजू की अधिवक्ता लोकेंद्र सिंह कच्छावा के मार्फत प्राचीन गांधीसागर झील को स्वच्छ एवं अतिक्रमणमुक्त कर सौंदर्यीकरण हेतु दायर की गई याचिका दर्ज करते हुए स्थानीय निकाय विभाग के प्रमुख सचिव, प्रदूषण नियंत्रण मंडल के सदस्य सचिव, भीलवाड़ा जिला कलेक्टर एवं नगर परिषद आयुक्त को नोटिस जारी कर 11 नवंबर से पूर्व जवाब मांगा है।

याचिकाकर्ता पर्यावरणविद् जाजू ने बताया कि गांधीसागर झील में जा रहे गंदे पानी के नालों को रोकने, अतिक्रमण हटाने एवं झील के सौंदर्यीकरण हेतु पूर्व में भी याचिका नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल में दर्ज कराई थी जिसमें नगर परिषद भीलवाड़ा द्वारा 6 माह में गंदे पानी के नालों को झील में जाने से रोकने व तालाब का सौंदर्यीकरण करने का आश्वासन दिया था जो 10 साल बीत जाने के बाद भी नहीं हुए। जिसके चलते जाजू को फिर से एनजीटी में गुहार के लिए मजबूर होना पड़ा। एनजीटी ने जिला कलेक्टर भीलवाड़ा एवं प्रदूषण नियंत्रण मंडल से संयुक्त कमेटी बनाकर गांधीसनगर झील की वास्तविक स्थिति की 6 सप्ताह में रिपोर्ट प्रस्तुत करने के भी आदेश दिए। जाजू ने बताया कि गांधीसागर तालाब के विकास पर अब तक लगभग 8 से 10 करोड़ रूपया खर्च होने के बावजूद इसका विकास के बजाय विनाश ही हुआ है। जाजू ने याचिका में गंदे पानी के नालों को रोकने, झील की सफाई करने, ईटीपी प्लांट लगाने, झील का सीमांकन कराने, अतिक्रमण हटाकर सौंदर्यीकरण करने, एनवायरनमेंट कंपनसेशन वसूल करते हुए उसे गांधीसागर झील की बेहतरी के लिए खर्च करने, नौका विहार शुरू करवाकर इसे पर्यटन स्थल के रूप में विकसित कर भीलवाड़ा वासियों को सौगात देने की मांग की है। उल्लेखनीय है कि नगर परिषद द्वारा तालाब की भूमि का पेट्रोल पंप के लिए अवैध रूप से पूर्व में बेचान किया था उसे भी जाजू ने 18 साल तक प्रयास कर न्यायालय में याचिका दायर कर निरस्त करवाया था। गांधी सागर तालाब को तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने देखकर सबसे गंदा तालाब बताकर नाराजगी व्यक्त की थी। वहीं भीलवाड़ा में पिछले 15 वर्षों में जो भी जिला कलेक्टर रहे उन्होंने गांधी सागर तालाब की गंदगी साफ कर परिषद को सौंदर्यकरण के लिए निर्देश दिए, बावजूद इसके गांधी सागर तालाब की स्थिति बजाये सुधरने की बिगड़ी है।

राशिफल शुक्रवार 27 सितम्बर, 2024

पंडित अनिल शर्मा

अश्विन मास, कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2081, पुष्य नक्षत्र रात्रि 1:21 तक, शिव योग रात्रि 11:33 तक, विष्टि करण दिन 1:21 तक, चन्द्रमा कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-वृष, शुक्र-तुला, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा दिन 1:21 तक है। आज एकादशी का श्राद्ध है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:51 तक, लाभ-अमृत 7:51 से 10:49 तक, शुभ 12:18 से 1:47 तक, चर 4:45 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:21, सूर्यास्त 6:14

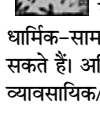

मेष

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

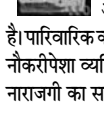

सिंह

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

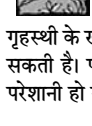

धनु

घर-परिवार में कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

वृष

परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मकर

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त होंगे।

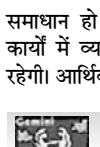

मिथुन

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। आय के नवीन स्त्रोत सामने आयेंगे। व्यावसायिक यात्रा संभव है। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

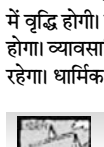

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

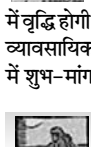

कुंभ

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुविधाएं बढ़ेगी।

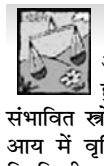

वृश्चिक

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

भाजपा के सदस्यता अभियान में कम सदस्य बनने से नाराज हुए राष्ट्रीय संगठन महामंत्री

15 अक्टूबर तक सवा करोड़ सदस्य बनाने थे, जबकि अभी 23 लाख बने

जयपुर। भाजपा के प्रदेश में चल रहे सदस्यता अभियान की पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन बीएल संतोष ने समीक्षा बैठक की। बैठक को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि लक्ष्यों को अर्जित करने के लिए पूर्व योजनाओं और पूर्ण योजना के साथ कार्यकर्ता जुट जाए। इसके साथ ही उन्होंने जिलाध्यक्षों से आव्हान किया कि वे मंडल और बूथ स्तर पर प्रवास कार्यक्रम बनाए तथा वहां स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर सदस्यता अभियान को गति प्रदान करें। बैठक में भाजपा के जिलाध्यक्ष, अभियान से जुड़े प्रभारी, संयोजक और जिलों की टोली के प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बीएल संतोष ने प्रदेश में भाजपा के सदस्यता अभियान की धीमी गति को लेकर नाराजगी जताई है। उन्होंने भाजपा के प्रदेश स्तर और जिला संयोजकों की बैठक में कम सदस्य बनाने के पीछे कारण पूछे। इस पर संयोजकों ने कहा कि इस समय खेती का समय चल रहा है, जिसके चलते सदस्यता कम रही है। बीएल संतोष ने कहा कि लोग खेती में व्यस्त हैं तो खेतों में जाकर सदस्य बनाएं। उन्होंने कहा कि मैं यहां एक-एक व्यक्ति का रिकॉर्ड देखने आया हूं। किस व्यक्ति ने अपने मोबाइल से कितने सदस्य बनाए।

हालांकि मीटिंग के दौरान उन्होंने भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ की तारीफ भी की और कहा कि उन्होंने टारगेट से दोगुने सदस्य बनाए हैं। इसी तरीके से बाकी लोगों को भी काम करना चाहिए। राजस्थान में अभी 23 लाख सदस्य ही बने हैं। जबकि प्रदेश में 15 अक्टूबर तक सवा करोड़ सदस्य बनाने का लक्ष्य है।

संतोष ने कहा कि अपने साथी कार्यकर्ताओं में नेतृत्व के गुण विकसित करें, उनके नेता बनने से आपका कद स्वत: बढ़ जाएगा। उन्होंने कहा कि भाजपा विचार आधारित पार्टी है, यहां कार्यकर्ता अपने कार्य के बल पर महत्वपूर्ण है। सदस्यता अभियान कार्यकर्ता निर्माण की दिशा में पहला कदम है, इसलिए इस पर गंभीरता से काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने अभियान की सफलता के लिए त्रि सूत्री मंत्र देते हुए कहा कि प्रतिदिन सदस्य बनाए, मंडल के हर बूथ पर सक्रियता बढ़ाए और सदस्यता अभियान में व्यक्तिगत रेफरल की संख्या बढाई जाए।

- भाजपा में कार्यकर्ता महत्वपूर्ण, उनमें करें नेतृत्व के गुण विकसित : बीएल संतोष
- भाजपा आरक्षित वर्ग के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध, कांग्रेस मानती रही वोट बैंक : मदन राठौड़

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा आरक्षित वर्ग के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध है। केंद्र और राज्य में बहुमत मिलने पर सदा उन वर्गों के कल्याण के लिए कदम उठाए गए है। जबकि कांग्रेस और अन्य दल उन्हें केवल वोट बैंक मानते है। पहले आरक्षण लागू करने में कौताही बरतने वाली कांग्रेस आज विदेश की धरती पर जाकर आरक्षण समाप्त करने की बात करती है।

भाजपा प्रदेश प्रभारी डॉ राधा मोहन दास अग्रवाल ने कार्यकर्ताओं से आव्हान किया कि वे कमजोर मन से नहीं, मजबूत मन के साथ संगठन के कार्य में जुटे, क्योंकि भाजपा की ताकत उसके कार्यकर्ता है। भाजपा सदस्यता अभियान के प्रदेश प्रभारी ऋतुराज सिन्हा ने कहा कि अगले 18 दिनों में सदस्यता को गति देने के लिए 3 महा अभियान चलेंगे। इन सभी अभियानों में प्रदेश से बूथ तक के कार्यकर्ताओं और जनप्रतिनिधियों की भागीदारी सुनिश्चित हो। उन्होंने कहा कि देशभर में सदस्यता को लेकर सकारात्मक रूझान सामने आया है। लोग भाजपा के साथ जुड़कर राष्ट्रीय विचार को राजनीतिक क्षेत्र में मजबूती देने के लिए आगे आ रहे है।

सदस्यता अभियान के प्रदेश संयोजक डॉ अरूण चतुर्वेदी ने समीक्षा बैठक की प्रस्तावना रखते हुए बताया कि सदस्यता अभियान का प्रथम चरण बुधवार को समाप्त हो गया है। अब 15 अक्टूबर तक अभियान का दूसरा चरण चलेगा। इसमें 29 सितंबर को प्रधानमंत्री जी के मन की बात कार्यक्रम, 5 और 6 अक्टूबर तथा 13 से 14 अक्टूबर को सदस्यता का महा अभियान चलाया जाएगा।

सैन्यकर्मी का कोर्ट मार्शल कर बर्खास्त करने का 22 साल पुराना आदेश रद्द

जयपुर। सशस्त्र सेना प्राधिकरण ने साथी के बैंक खाते से रुपए निकालने के मामले में सैन्यकर्मी का कोर्ट मार्शल कर बर्खास्त करने के 22 साल पुराने आदेश को रद्द कर दिया है। इसके साथ ही अधिकरण ने उसे समान रैंक पर मानते हुए समस्त परिलाभ व पेंशन देने को कहा है। अधिकरण ने स्पष्ट किया है कि बर्खास्तगी आदेश से बाद की अवधि का उसे वेतन नहीं दिया जाएगा। अधिकरण ने यह आदेश पूर्व सीएफएन चंद्रभान की याचिका पर दिए। अधिकरण ने कहा कि वास्तव में बैंक कर्मचारी ने अपने फायदे के लिए याचिकाकर्ता को फंसाया है और उसे सेवा से बर्खास्त कर उसके साथ घोर अन्याय किया है। इसके साथ ही अधिकरण ने आदेश की कॉपी बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक को उचित कार्रवाई के लिए भेजा है।

याचिका में अधिवक्ता प्रवीण बलवदा ने अधिकरण को बताया कि याचिकाकर्ता 7011 ईएमई बटालियन जालंधर में सीएफएन के पद पर कार्यरत था। उस पर आरोप था कि उसने 4 दिसंबर, 2001 को एसबीआई बैंक की जालंधर कैंट शाखा में सीएफएन एसपी सिंह के खाते से उसके फर्जी साइन कर 35 हजार रुपए निकाल लिए। इस मामले में उस पर कोर्ट मार्शल की कार्रवाई की गई और 5 मार्च, 2002 को उसे तीन माह का सिविल कारावास देते हुए सेवा से बर्खास्त कर दिया। याचिका में कहा गया कि उसे रुपए की जरुरत थी और उसने बैंककर्मी जीपी सिंह को इस बारे में बताया था। इस पर जीपी सिंह ने उसे दस दिन के लिए यह राशि एक हजार रुपए ब्याज काटकर दी थी। इस दौरान बैंक के निकासी फॉर्म पर जीपी सिंह ने साइन किए थे। वहीं तय समय पर याचिकाकर्ता ने यह राशि लौटा दी भी थी। मामले में कोर्ट मार्शल की कार्रवाई में घटना के मुख्य आरोपी जीपी सिंह को सरकारी गवाह बनाया गया और उसकी गवाही पर याचिकाकर्ता को दंडित किया गया। जबकि उसकी गवाही विश्वसनीय नहीं थी और उसने खुद को बचाने के लिए याचिकाकर्ता पर दोष मढ़ दिया। जिस पर सुनवाई करते हुए अधिकरण ने कोर्ट मार्शल के आदेश को निरस्त करते हुए याचिकाकर्ता को समान रैंक का परिलाभ देने को कहा है।

हिंदू आध्यात्मिक व सेवा मेले का उद्घाटन

जयपुर। हिन्दू आध्यात्मिक एवं सेवा मेला के उद्घाटन के दौरान उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि मुझे चिंता होती है कुछ लोग विदेश में देश को तोड़ने वालों के साथ बैठते हैं। वे नासमझी से उत्साहित हैं। एक नैरेटिव चला रहे हैं। जब पड़ोस के देश में कुछ हुआ, तब के संवैधानिक पद पर बैठा व्यक्ति कहता है कि हमारे देश में ऐसा हो सकता है। उपराष्ट्रपति ने कहा कि इतने हिस्सों में भी मत बंटो कि बाद में याद आए कि हमारे हिस्से में कुछ नहीं बचा है।

चौथे हिन्दू आध्यात्मिक एवं सेवा मेला में गुरुवार को उद्घाटन भाषण दे रहे थे। 5 दिन चलने वाले इस हिन्दू मेले में देशभर के संतों ने भाग लिया। इस दौरान साध्वी ऋतम्भरा ने कहा कि मुझे चित्तोड़ की धरती को प्रणाम करना है जहां देवियों ने लाशों के साथ दुष्कर्म करने वालों के खिलाफ अग्नि स्नान कर जौहर किया। जब वह लोग अपने प्राण को त्याग सकते हैं। तो हम भय और लालच के लिए अपना धर्म क्यों त्यागे। साध्वी ने कहा कि एक दो बेटियों की मां रात को चैन से नहीं सो पाती है। लेकिन मैं संन्यासी होने के बाद हजारों बेटियों की मां हूं। उन्हें पढ़ने से लेकर शादी तक करने की जिम्मेदारी मेरी है।

सरकारी अस्पतालों में बदलेगा समय

जयपुर। जयपुर के एसएमएस समेत दूसरे अस्पतालों में का समय बदलेगा। शीतकालीन व्यवस्था के तहत 1 अक्टूबर से समय बदलेगा। 1 अक्टूबर से 31 मार्च तक सुबह 9 बजे से ओपीडी शुरू होगी। सामान्य दिनों में दोपहर 3 बजे तक चलेगी।

जिसको लेकर एसएमएस अस्पताल अधीक्षक डॉ. सुशील भाटी ने आदेश जारी किए। रजिस्ट्रेशन का काम सुबह 8.30 बजे से शुरू होगा, जो दोपहर 3 बजे तक जारी रहेगा। रविवार और राजपत्रित अवकाश के दिन दो घंटे सुबह 9 से 11 बजे तक ओपीडी चलेगी।

कैथल में दिया कुमारी ने भाजपा के लिए मांगे वोट

कैथल/अंबाला। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने आज हरियाणा के कैथल में भाजपा उम्मीदवारों के पक्ष में चुनाव प्रचार किया। दिया कुमारी ने अपने दो दिवसीय चुनावी दौरे के शुरुआत में कैथल के जिला सैनी भवन में भाजपा उम्मीदवार लीलाराम के पक्ष में एक महिला सम्मेलन को संबोधित किया और फिर पाडला में राजपूत समाज के लोगो से मुलाक़ात की। दोपहर में उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने मुलाना से भाजपा उम्मीदवार संतोष सारवान के पक्ष में वोट माँगे। इसके बाद दिया कुमारी ने अंबाला शहर के क्षित्रय समाज के प्रबुधजन से जनसंपर्क किया और भाजपा उम्मीदवार असीम गोयल के समर्थन में एक सभा को संबोधित किया।

कैथल में महिला शक्ति सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने भाजपा के उम्मीदवार लीला राम को जीत की अग्रिम बधाई दी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश की आधी आबादी रखने वाले महिला वर्ग के उत्थान व सम्मान के लिए अनेको ऐतिहासिक कार्य किये। नारी शक्ति वंदन अधिनियम, प्रसवकालीन अवकाश, सेना में अवसर, लखपति दीदी, आंगनबाड़ी अपग्रेडेशन जैसे कई निर्णय केन्द्र सरकार ने किये। दिया कुमारी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सभी फ्लैगशिप योजनाओं को सबसे ज्यादा लाभ महिलाओं को मिला है। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए उन्होने कहा कि संवैधानिक पद पर रहते हुए भी राहुल गांधी द्वारा विदेश में जा कर समाज को बांटने के लिए गलत बयानबाजी की गई जो कि दुर्भाग्यपूर्ण है। दूसरी ओर आम आदमी पार्टी के मंत्री और मुख्यमंत्री भ्रष्टाचार के मामलों में जेलों में बन्द है या जमानत पर है।

उन्होंने उपस्थित जनसमूह से अपील की और कहा कि हरियाणा में विकास का क्रम आगे भी चलता रहे इसके लिए तीसरी बार हरियाणा में भाजपा की डबल इंजन सरकार बननी चाहिए। मुलाना में भाजपा उम्मीदवार संतोष सारवान के समर्थन में जनसभा को संबोधित करते हुए उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने किसानों, सैनिको, महिलाओं और युवाओ के कल्याण की विभिन्न योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि केन्द्र और राज्य सरकार की कड़ी से कड़ी जुड़ने से ही सही मायने में विकास संभव है।

अंबाला शहर से भाजपा उम्मीदवार असीम गोयल के पक्ष में क्षत्रिय समाज के प्रबुद्धजन सभा को संबोधित करते हुए दिया कुमारी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व देश की सीमाएँ सुरक्षित हुई है और सेना सशक्त हुई है।

दो आई.ए.एस. सहित अन्य अफसरों को अवमानना नोटिस

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने अदालती रोक के बावजूद भी नगर निगम के कर्मचारी को सेवा से हटाने के मामले में प्रमुख यूडीएच सचिव टी रविकांत और नगर निगम ग्रेटर की आयुक्त रुक्मणी रियाड सहित अन्य को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। जस्टिस उमाशंकर व्यास की एकलपीठ ने यह आदेश प्रदीप कुमार शर्मा की अवमानना याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

अवमानना याचिका में अधिवक्ता तरुण चौधरी ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता वर्ष 1996 में नगर निगम की विद्युत विंग में हेल्पर कम स्टोर कीपर के पद पर लगा था। इसके बाद से वह लगातार इस पद पर काम कर रहा था। इस बीच वर्ष 2014 में उसे सेवा से हटा दिया गया।

भगवा रैली 29 को

जयपुर। महान मराठा सम्राट छत्रपति शिवाजी के हिंदू राष्ट्र की मांग को पूरा करने और आमजन में हिंदू राष्ट्र के लिए जनजागृति पैदा करने के उद्देश्य से रविवार को भगवा रैली का आयोजन किया जाएगा। युवा शक्ति मंच की ओर से आयोजित इस रैली का नेतृत्व राज्य के सभी प्रमुख संत करेंगे। इसकी जानकारी देते हुए युवा शक्ति मंच राजस्थान के प्रदेश संयोजक सुनील सिंह शेखावत ने गुरूवार को प्रेसवार्ता के दौरान बताया कि हिंदू समाज को संगठित करने के उद्देश्य से यह रैली खोले के हनुमान मंदिर से शुरू होकर न्यू गेट स्थित रामलीला मैदान तक निकाली जाएगी।

उन्होंने बताया कि रैली में मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सीपी जोशी, भीलवाड़ा सांसद दामोदर अग्रवाल, जयपुर सांसद मंजू शर्मा, मुख्यमंत्री के पुत्र व युवा भाजपा नेता कुणाल शर्मा, विधायक बालमुकुन्दाचार्य, गोपाल शर्मा, महेन्द्र मीणा और विधानसभा चुनावों में भाजपा प्रत्याशी रहे चन्द्रमनोहर बटवाडा व रवि नैय्यर शामिल होंगे।

बिना आदेश वसूली रद्द की

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने लघु उद्योग इकाई को गलत तरीके से जारी अनुदान को वापस लेने के लिए बिना आदेश की जा रही वसूली की कार्रवाई को रद्द कर दिया है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में पुन: जिला उद्योग केन्द्र के जीएम को भेजते हुए विधि अनुसार कार्रवाई करने को कहा है।

जस्टिस अवनीश झिंगन की एकलपीठ ने यह आदेश इंडिया इमेज की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। अदालत ने कहा कि यह सुस्थापित कानून है कि अर्ध न्यायिक अधिकारी को तर्कपूर्ण आदेश पारित करना होता है, लेकिन मामले में अनुदान वापस लेने का कोई आदेश पारित किए बिना ही वसूली कार्रवाई शुरू कर दी गई।

याचिका में अधिवक्ता जय शर्मा ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने वर्ष 1990 में अनुदान के लिए आवेदन किया था। जिला स्तरीय कमेटी ने 29 सितंबर, 1997 को 10.83 लाख रुपए की अनुदान राशि स्वीकृत कर दी और बाद में याचिकाकर्ता को इस राशि का अनुदान मिल गया।

याचिका में बताया गया कि 11 मार्च, 1999 को जिला उद्योग केन्द्र के जीएम ने याचिकाकर्ता को पत्र भेजकर कहा कि उसे अनुदान राशि गलत जारी हो गई है और वह ब्याज सहित राशि लौटाए। इस पत्र का याचिकाकर्ता की ओर से जवाब दे दिया गया। वहीं वर्ष 2003 में याचिकाकर्ता को फिर से पत्र भेजकर कहा गया कि वह तीन माह में राशि लौटाए।

नम्बर मिलाइए 9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

खोया पाया सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि अचल सम्पति प्लॉट नम्बर F-9/494-A, चित्रकूट योजना, सेक्टर 09, वैशाली नगर, जयपुर जिसका क्षेत्रफल 54.00 वर्गमीटर है, के बाबत जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर द्वारा जारी मूल दस्तावेजो में से मूल कब्जा पत्र नं. सी-1547 दिनांक 26.12.2018 जो श्रीमती मंजू कंवर पत्नी श्री चैन सिंह सौलंकी के नाम पर जारी किया गया था वह कहीं गुम हो गया है, जिसकी गुमशुदगी रिपोर्ट साईबर ब्राइम पुलिस स्टेशन जयपुर में एल.आर. नं. 2363558/2024 दिनांक 12.09.2024 पर दर्ज है। इस प्रकार श्रीमती मंजू मदान उक्त सम्पति की एकमात्र रूप से विधिक रूप से मालकिन स्वामिनी अधिकारिणी व काबिज है। अब मेरे अभिभाष श्रीमती नैनसी मित्तल वित्तीय संस्था HDFC Bank Ltd. से ऋण ले रहे हैं। मिलने पर सूचित करे। मोबाईल नं. 9460943434 दि. 26.09.2024 केदार राम, एडवोकेट, ऑफ नं. 03, प्लाट नं. 2/536, चित्रकूट, वैशाली नगर, जयपुर-302021

आम-सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि,मेरे अभिभाष्य कमलेश जांगिड व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भारती जांगिड पता:33 बी,मुंड नगर,मांग्यावास,मानसरोवर जयपुर राज. ने अपने पुत्र दीपक जांगिड व पुत्रवधु भावना जांगिड को उनके गलत व्यवहार के चलते अपनी चल व अचल सम्पत्ती से बेदखल कर दिया है,अत: दीपक जांगिड व उसकी पत्नी भावना जांगिड से अगर कोई भी संस्था, दिगर व्यक्ति किसी प्रकार का लेनदेन करता है, तो उसकी समस्त जिम्मेदारी उसकी स्वंय की होगी सूचित रहे।

एडवोकेट-हेमन्त कुमार जांगिड़ 9982837756

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना

साधारण प्रारूप

व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4

न्यायालय उपखण्ड अधिकारी सांभरलेक जि. जयपुर

अब्दुल वहीद बनाम मु. गुलाब वगैरह

प्रार्थना पत्र 22/202-3

प्रार्थना पत्र रेस्टोरेशन

बनाम:-1. अब्दुल करीम पुत्र मकबूल खां निवासी मोहल्ला बरडोटी सांभरलेक हाल आबाद झोटवाडा जिला जयपुर 2-मो0 रमजान पुत्र मकबूल खां 3-दीन मोहम्मद पुत्र मो0 इब्राहिम, 4-मुन्नी पुत्री स्व0 मो0 इब्राहिम 5-मुस्तकीम खां पुत्र स्व0 मो0 इब्राहिम 6-अब्दुल सत्तार पुत्र स्व0 मो0 इब्राहिम, समस्त जाति मुसलमान निवासी 172-173 भट्ठा वस्ती शास्त्रीनगर जयपुर। 7-मोहम्मद शरीफ पुत्र स्व0 मोहम्मद इब्राहिम 8-परवीना पुत्री स्व0 मोहम्मद इब्राहिम, 9-जुल्फिकार अली पुत्र स्व0 मो0 इब्राहिम 10-रूबीना पुत्री स्व0 मो0 इब्राहिम 11-नियाज हुसैन पुत्र स्व0 मो0 इब्राहिम 12-हैदर अली पुत्र स्व0 मोहम्मद इब्राहिम 13-इस्लामुद्दीन उर्फ बाबू पुत्र स्व0 मो0 इब्राहिम, समस्त जाति मुसलमान निवासीवान वरडोटी मोहल्ला सांभरलेक जिला जयपुर राज0 14-अब्दुल हमीद पुत्र श्री अमीर खां निवासी सांभरलेक जिला जयपुर राज.

उक्त प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि

अत: आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 10/10/2025 को 10.00 बजे ए0एम0 पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो उपसंजात हो । यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश को सुनवायी और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।

अत: आज दि. 24/9/24 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुद्रा से जारी किया गया।

मोहर उपखण्ड अधिकारी, सांभर लेक

न्यायालय-अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश, संख्या-2 हिण्डौन सिटी

कैलाशचन्द बनाम हरखासआम आदि

प्रार्थना-पत्र बाबवत जारी किये जाने

उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र

यह कि सायल ने माननीय न्यायालय हाजा में विपक्षीगण के विरूद्ध मृतक कौशल्या देवी की विपक्षी नम्बर 06 व 07 के यहां से 240 शेयर क्रमांक 8061387474 से लेकर 8061387713 तक मुताबिक सर्टिफिकेट नम्बर 006316187 तथा विपक्षी नम्बर 07 द्वारा जारी किये गये 170 शेयर क्रमांक 2387700551 से लेकर 2387700720 तक मुताबिक सर्टिफिकेट नम्बर 2511251 को सायल हक में अन्तरण कर उनकी राशि को मय समस्त लाभ परिलाभ प्राप्त किये जाने तथा अन्य दीगर दादरसी प्राप्त करने के लिए अपने हक में उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र जारी किये जाने हेतु प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया है। लिहाजा जिस किसी को भी आवेदक कैलाशचन्द के हक में उक्त समस्त शेयरों के अन्तरण व उनकी राशि का उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र जारी किये जाने पर आपत्ति हो तो वह न्यायालय हाजा में दिनांक 30.11.24 को समय 10.00 बजे स्वयं असालतन या जरिये अधिवक्ता उपस्थित होकर अपनी उजरदारी प्रस्तुत करें, अन्यथा उक्त प्रार्थना-पत्र, एक तरफा में फैसल फरमा दिया जावेगा। अत: यह नोटिस हरखास आम न्यायालय की आज्ञा से आज दिनांक 25.9.24 को जारी किया गया।

मुहर आज्ञा से सीनियर रीडर अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश, संख्या-2, हिण्डौन सिटी

कार्यालय ग्राम पंचायत रामपुरा उँती

पंचायत समिति सांगानेर, जिला: जयपुर (राज.)

क्रमांक: ग्रा.पं.रामपुराऊति/45/2024-25 दिनांक: 25.09.2024

आपत्ति आमंत्रण सूचना

ग्राम पंचायत रामपुरा ऊती के समस्त ग्राम वासियों को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत के निम्न श्रेणी के व्यक्तियों द्वारा पट्टा चाहा गया है। जिसमें किसी प्रकार की आपत्ति हो तो वह ग्राम पंचायत रामपुरा ऊती में 7 दिवस में प्रस्तुत कर सकते है। इसके उपरान्त प्राप्त होने वाली आपत्तियों पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

क्र. सं.	नाम आवेदक	जाति	खसरा नं.	गाँव का नाम
1	दिलीप कुमार बैरवा पुत्र श्री नाथूलाल बैरवा	बैरवा	664	नरवरिया
2	ओमप्रकाश शर्मा पुत्र श्री रामकरण शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
3	कमलेश कुमार शर्मा पुत्र श्री गणेशनारायण शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
4	गोपाल शर्मा पुत्र श्री नारायण शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
5	सुभाष चन्द शर्मा पुत्र श्री दामोदर शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
6	पुनीत शर्मा पुत्र श्री ओमप्रकाश शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
7	कृष्ण कुमार बैरवा पुत्र श्री हरिमोहन बैरवा	बैरवा	664	नरवरिया
8	श्यामलाल पुत्र श्री ओमप्रकाश शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
9	रामचरण पुत्र श्री रूपनारायण शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
10	सौरभ शर्मा पुत्र श्री रामचरण शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
11	मोहनलाल शर्मा पुत्र श्री रामपाल शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
12	सोहनी देवी पत्नी श्री रामकिशोर शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
13	मनसुख शर्मा पुत्र श्री दामोदर शर्मा	शर्मा	664	नरवरिया
14	राजकीय उपस्वास्थ्य केन्द्र		664	नरवरिया
15	सार्वजनिक पुस्तकालय एंव वाचनालय		664	नरवरिया
16	फुल्या गुर्जर पत्नी श्री राजू गुर्जर	गुर्जर	872	रामपुरा ऊती
17	बाबुलाल बैरवा पुत्र श्री सुखाराम बैरवा	बैरवा	1349	रामपुरा ऊती
18	लक्ष्मीनारायण पुत्र श्री रामू बैरवा	बैरवा	1349	रामपुरा ऊती
19	रामकुवार बैरवा पुत्र श्री सुवाराम बैरवा	बैरवा	1347	रामपुरा ऊती
20	कैलाशी देवी पत्नी श्री प्रहलाद बैरवा	बैरवा	1347	रामपुरा ऊती
21	कमलेश कुमार बैरवा पुत्र श्री रामकुवार बैरवा	बैरवा	1347	रामपुरा ऊती
22	सुगना देवी पत्नी श्री शंकरलाल बैरवा	बैरवा	1347	रामपुरा ऊती
23	भंवर लाल बैरवा पुत्र श्री लादू राम बैरवा	बैरवा	1346	रामपुरा ऊती
24	ताराचन्द, रामकुवार, भगवान सहाय पुत्र दुलाराम मीणा	मीणा	872	रामपुरा ऊती
25	सीता देवी पत्नी श्योपाल बैरवा	बैरवा	1346	रामपुरा ऊती
26	शांति देवी पत्नी लालाराम, मंगली देवी पत्नी तोफान बैरवा	बैरवा	872	रामपुरा ऊती
27	ओमप्रकाश जांगिड पुत्र श्री हनुमान सहाय जागिड	जागिड	872	रामपुरा ऊती
28	सुभाष चन्द जागिड पुत्र श्री हनुमान सहाय नांगिड	जागिड	872	रामपुरा ऊती
29	चम्पा देवी पत्नी स्व. कैलाश मीणा, रामेश्वर, रामस्वरूप पुत्र गोविन्द राम मीणा	मीणा	872	रामपुरा ऊती
30	नन्दाराम, हरीराम, श्योजी पुत्र भवर लाल	जाट	872	रामपुरा ऊती
31	गंगाराम जाट पुत्र श्री जीवण राम जाट	जाट	872	रामपुरा ऊती
32	सीताराम पुत्र बोदुराम गुर्जर	गुर्जर	872	रामपुरा ऊती
33	बन्नाराम, कानाराम पुत्र छीतर जाट	जाट	872	रामपुरा ऊती
34	रामस्वरूप शर्मा पुत्र रामगोपाल शर्मा	शर्मा	872	रामपुरा ऊती
35	मीरा देवी पत्नी श्योदान गुर्जर	गुर्जर	872	रामपुरा ऊती
36	रामप्रकाश,नरेश पुत्र मांगुराम बैरवा, मनीष पुत्र कैलाश बैरवा	बैरवा	982,985	रामपुरा ऊती
37	जयसिंह हरिजन पुत्र श्री बाघु हरिजन	हरिजन	872	रामपुरा ऊती
38	कमला देवी पुत्र श्री रामू बैरवा	बैरवा	1349	रामपुरा ऊती
39	सीताराम पुत्र श्री नाथूराम बैरवा	बैरवा	982,985	रामपुरा ऊती
40	गीता देवी पत्नी सीताराम बैरवा	बैरवा	1349	रामपुरा ऊती
41	हीरालाल, नारायण, प्रधान, मोहन पुत्र कानाराम मीणा	मीणा	872	रामपुरा ऊती
42	रामजीलाल पुत्र भैरूराम बैरवा	बैरवा	872	रामपुरा ऊती
43	मदन पुत्र रामकरण	बागरिया	872	रामपुरा ऊती
44	कमरूदीन पुत्र सुल्तान खान	खान	872	रामपुरा ऊती
45	नारायण पुत्र बालु जाट	जाट	872	रामपुरा ऊती
46	गंगा देवी पत्नी रामअवतार जाट	जाट	872	रामपुरा ऊती
47	कानाराम, बन्नाराम पुत्र छीतर	जाट	872	रामपुरा ऊती
48	रामकिशोर शर्मा पुत्र श्री रूपनारायण शर्मा	शर्मा	309	अनोपपुरा
49	ग्यारसी देवी पत्नी रामकिशोर शर्मा	शर्मा	309	अनोपपुरा
50	महावीर प्रसाद शर्मा पुत्र श्री जगदीश प्रसाद	शर्मा	309	अनोपपुरा
51	सामुदायिक भवन		505	अनोपपुरा
52	रामकुवार, गंजानन्द पुत्र भूराराम जाट	जाट	525,551	लक्ष्मीनारायणपुरा
53	लालाराम, मदन लाल, छगन पुत्र कल्याण जाट	जाट	525,551	लक्ष्मीनारायणपुरा
54	हरजीराम, बालुराम, चांदकरण, गंगासहाय पुत्र भैरू जाट	जाट	525,551	लक्ष्मीनारायणपुरा
55	शिवचन्द पुत्र गंगाराम जाट	जाट	538	लक्ष्मीनारायणपुरा
56	स्याणी पत्नी राजाराम जाट	जाट	538	लक्ष्मीनारायणपुरा
57	शिवचन्द, राजाराम पुत्र गंगाराम जाट	जाट	551,534/725	लक्ष्मीनारायणपुरा
58	देवी लाल पुत्र शिवचन्द	जाट	551,534/725	लक्ष्मीनारायणपुरा
59	संजू पुत्र सुरेश कुमार जाट	जाट	551,534/725	लक्ष्मीनारायणपुरा
60	मंगलाल पुत्र शिवचन्द जाट	जाट	551,534/725	लक्ष्मीनारायणपुरा
61	सुरेश पुत्र राजाराम जाट	जाट	551,534/725	लक्ष्मीनारायणपुरा
62	मंगल, शिवचन्द, मोहनलाल पुत्र देवीलाल	जाट	551,534/725	लक्ष्मीनारायणपुरा
63	कल्याण सहाय पुत्र भूरा जाट	जाट	551,525	लक्ष्मीनारायणपुरा
64	बद्री पुत्र भूरा जाट	जाट	551,525	लक्ष्मीनारायणपुरा
65	राजकीय पशु चिकित्सालय		551,534/725	लक्ष्मीनारायणपुरा
66	भगवती देवी पत्नी सत्यनारायण कुमावत	कुमावत	208	श्योसिंहपुरा
67	रामनारायण पुत्र छीतर कुमावत	कुमावत	208	श्योसिंहपुरा
68	पुरण मल पुत्र सूरज सिंह	राजपुत	515	झुण्ड
69	जुगल किशोर, हरिनारायण शर्मा पुत्र कल्याण सहाय	शर्मा	498	झुण्ड
70	प्रेमचन्द, परमेश्वर, राजकुमार, राधाकिशन, शिवप्रकाश पुत्र हरबक्श शर्मा	शर्मा	498	झुण्ड
71	हरबक्श पुत्र श्रीनारायण शर्मा	शर्मा	498	झुण्ड
72	देवीसहाय, गोविन्दनारायण पुत्र श्री कल्याणसहाय शर्मा	शर्मा	498	झुण्ड
73	गोपाल सिंह पुत्र बाल सिह दरोगा	छरोगा	515	झुण्ड
74	केली देवी पत्नी प्रभूदयाल बैरवा	बैरवा	515	झुण्ड
75	नानूराम पुत्र लक्ष्मण बैरवा	बैरवा	515	झुण्ड

श्रीमती मन्नीदेवी थोरी (सरपंच), ग्राम पंचायत रामपुरा ऊती

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना

(साधारण प्रारूप)

व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक-4

न्यायालय श्रीमान ADJ No.1 साहब स्थान हिण्डौन सिटी निकीता विरूद्ध विष्णु वाद/प्रार्थना पत्र CM 13HMA प्रार्थना-पत्र संख्या 106/2023 सन् नाम विष्णु पुत्र निर्भय सिंह जाति गुर्जर पता निवासी कांवर पहाडी तह. महवा PS महवा जिला दौसा राज. उक्त प्रार्थीया ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि अत: आपको चेतावनी दी जाती है कि आप आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दि.07 माह 10 सन 2024 को 10 AM पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश की सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा। यह आज ता. 5 माह 9 सन् 2024 को मेरे हस

उदयपुर जिले में आदमखोर पैंथर का आतंक, बालिका समेत ग्रामीण को शिकार बनाया

बच्ची के शिकार के बाद ग्रामीण सवाल उठ रहे हैं कि क्या वन विभाग ने गलत पैंथर को पकड़ा है?

गोगुंदा में आदमखोर पैंथर ने बालिका को शिकार बनाया, मौत

उदयपुर, (निसं)। उदयपुर जिले के गोगुंदा थाना क्षेत्र में आदमखोर पैंथर का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा है। बुधवार रात छाली पंचायत से करीब छह किलोमीटर दूर मजावद पंचायत के कुंडाऊ गांव में आदमखोर पैंथर घर के बाहर खेल रही 5 वर्षीय बच्ची सूरज पुत्री गमेरा गमेती को उठा कर जंगल में ले गया। आठ दिनों में पैंथर का यह चौथा मानव शिकार है। गुरुवार को बच्ची का शव जंगल में क्षत-विक्षप्त हालत मिला। घटना से एक बार फिर ग्रामीण दहशत के साये में जीने को मजबूर हैं।

जानकारी के अनुसार पिछले दिनों एक आदमखोर पैंथर ने छाली पंचायत में 16 वर्षीय किशोरी, 65 वर्षीय वृद्ध और 45 वर्षीय महिला को शिकार बनाया था। अब पास की पंचायत की 5 वर्षीय बच्ची के शिकार से ग्रामीण दहल गए हैं। बच्ची के शिकार के बाद सवाल उठ रहे हैं कि क्या वन विभाग ने जिन पैंथर को पकड़ा है, वे वास्तव में वही आदमखोर पैंथर है, जो लोगों का शिकार कर उन्हें मौत के घाट उतार रहा था या आदमखोर पैंथर ने पूरे वन विभाग और पुलिस को चमका दे दिया है। 5 वर्षीय बच्ची के शरीर को जिस तरह पैंथर ने खाया है, यह उसके पहले शिकार छाली पंचायत के उंडीथल गांव की 16 वर्षीय किशोरी कमला से मिलता-जुलता है। पैंथर ने कमला का बायां हाथ और बायीं तरफ का ऊपरी हिस्सा खाया था, यही इस 5 वर्षीय बच्ची के साथ हुआ है। पैंथर ने शिकार के तुरंत बाद बच्ची का बायां हाथ, पैर और बायीं तरफ का चेहरा खा लिया।

गोगुंदा थाना क्षेत्र के कुंडाऊ गांव में आदमखोर पैंथर की शिकार बच्ची का क्षत-विक्षप्त शव मिला। (गोले में शव)

- पांच वर्षीय बालिका का दूसरे दिन जंगल में क्षत-विक्षप्त शव मिला, कुंडाऊ गांव के लोगों में भय
- पिछले दिनों एक आदमखोर पैंथर ने छाली पंचायत में 16 वर्षीय किशोरी, 65 वर्षीय वृद्ध और 45 वर्षीय महिला को शिकार बनाया था

आदमखोर पैंथर बुधवार रात करीब 7.30ः बजे जब बच्ची को घर के बाहर से उठा ले गया, तो बच्ची के चिल्लाने की आवाज सुनकर परिजनों ने ग्रामीणों के साथ मिलकर बच्ची को तलाशा लेकिन बच्ची नहीं मिली, फिर ग्रामीण बच्ची को तलाशने झुंड बनाकर जंगल के अंदर गए तो कुछ ही दूर बच्ची का कटा हुआ हाथ, पैर और क्षत-विक्षप्त खाया हुआ शव मिला। मौके पर पहुंची सरपंच ने वन विभाग और पुलिस को सूचना दी। रात करीब 9.30ः बजे शव के पास खडे होकर ग्रामीण कानूनी प्रक्रिया के लिए वन विभाग और पुलिस का इंतजार कर रहे थे कि तभी दुर्दांत हो चुके आदमखोर पैंथर ने फिर अटैक किया और ग्रामीणो के सामने बच्ची का शव उठा कर जंगल के अंदर ले गया।

सूचना पर गोगुंदा एसडीम डॉ. नरेश सोनी, थानाधिकारी शैतान सिंह नाथावत, वन विभाग की टीम और गोगुंदा तहसीलदार ओम सिंह लखावत मौके पर पहुंचे। अधिकारी ग्रामीणों की मदद से मासूम बच्ची के शव को ढूंढने की कोशिश की लेकिन रात 12 बजे तक बच्ची का शव नहीं मिला।

बच्ची की मां-पिता का रो-रो कर बुरा हाल है। गुरुवार को दोपहर में बच्ची का शव मिला जिसका पोस्टमार्टम के बाद परिजनों ने अंतिम संस्कार किया। दुर्दांत हो चुका आदमखोर पैंथर जिस तरह से ग्रामीणों के सामने दोबारा अटैक कर बच्ची का शव उठा कर ले गया, यह देखकर ग्रामीण बेहद घबराए हुए हैं और खुद को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। वही वन विभाग ने ट्रेप कैमरे से निगरानी करते हुए फिर तीन पिंजरे लगा कर आदमखोर पैंथर का पकड़ने की कवायद शुरू कर दी है।

झाड़ोल के जंगल में पैंथर ने ग्रामीण पर हमला किया, मौत

सरणा फला गांव के जंगल में बकरियों के लिए पत्ते लेने गया था व्यक्ति, पैंथर ने बनाया शिकार

उदयपुर, (निसं)। उदयपुर जिले में लगातार पैंथर का ग्रामीणों पर हमले का सिलसिला थम नहीं रहा है। अब झाड़ोल के सरणा फला में गुरुवार को बकरियों के लिए पत्ते लेने गए व्यक्ति पर पैंथर ने हमला कर उसे मारा डाला। मृतक का शव जंगल में खून से सना हुआ पड़ा मिला। मृतक की पहचान शंकर (50) पुत्र लिंबा खराडी के रूप में हुई है।

पुलिस के अनुसार सुबह मृतक शंकर खराडी पास के जंगल में बकरियों के लिए पत्ते लेने निकले थे। दोपहर तक वह वापस नहीं लौटे तो उनके परिवार को चिंता होने लगी। ऐसे में अपने पिता को उसके दोनों बेटे फतहलाल और धनराज जंगल में तलाशने पहुंचे। कई देर ढूंढने के बाद मृतक का शव जंगल में पड़ा मिला। इस हालत में पिता का शव देख बेटे हैरान रह गए। मृतक के पूरे कपड़े खून से सने हुए थे। पैर और सीने पर गंभीर घाव थे। सूचना पर झाड़ोल थानाधिकारी रामनिवास जाब्ते के साथ पहुंचे और रेंजर होरीलाल सैनी सहित वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची।

- मृतक का शव जंगल में खून से सना हुआ पड़ा मिला, वन विभाग की टीम पहुंची
- ग्रामीणों ने शव को मॉच्यूरी ले जाने से रोक दिया और ग्रामीण विरोध पर उतर आए

घटना का पता लगने पर बड़ी संख्या में ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। पुलिस शव पहाड़ी से नीचे उतारकर लेकर आई, लेकिन ग्रामीणों ने शव को मॉच्यूरी ले जाने से रोक दिया। ग्रामीण विरोध पर उतर आए। वे लेपर्ड को पकड़ने सहित मुआवजे की मांग पर अड़ गए। माहौल गर्माता देख डिप्टी महावीर सिंह शेखावत और एसडीएम हसमुख कुमार मौके पर पहुंचे। पुलिस प्रशासन ने ग्रामीणों से 2 घंटे तक समझाइश की। मुआवजा और पैंथर को जल्द पकड़ने के आश्वासन के बाद ग्रामीण माने। गोगुंदा की जिस छाली पंचायत में तक दो नाबालिग सहित 4 जनों को पैंथर ने हमला कर मार दिया, उसी गांव के जंगल से झाडोल क्षेत्र की सीमा जुडी हुई है।

वाहन मार्ग से जाने की बात करें तो झाड़ोल से गोगुंदा करीब 30 किमी है लेकिन बताया जा रहा है कि जंगल के रास्ते पहुंचने से पैंथर के लिए यह दूरी कम है। ऐसे में संभावना जताई जा रही है कि कहीं गोगुंदा में इंसानों का मारने वाले पैंथर ने यहां हमला किया होगा।

मानसून की विदाई के बीच मौसम का बदलाव

श्रीगंगानगर, (निसं)। बारिश से उपजी ठंडक के कारण लोग आधी रात के बाद कूलर और एसी बंद करने लगे थे, लेकिन बारिश का दौर थमने और मौसम शुष्क होने से तापमान में हुई बढ़ोतरी के कारण कूलर, एसी रातभर चलने लगे हैं। अधिकतम तापमान 40 डिग्री तक पहुंचने से गर्मी का अहसास होने लगा है। तापमान में हो रही बढ़ोतरी का असर खेती पर भी दिखाई दे रहा है।

प्रगतिशील किसान मनीराम पूनिया ने बताया कि इन दिनों सिंचाई करने पर जमीन में सात दिनों बाद बतर आती थी लेकिन अब तो तीन दिन में ही बतर आ रही है। सावणी की फसलों में इस मौसम में सिंचाई की जरूरत नहीं होती थी। अब मौसम का जो मिजाज है उसमें कॉटन के अलावा मक्का और गन्ना की फसल पानी मांग रही है।

उन्होंने बताया कि श्राद्ध पक्ष में सरसों की बिजाई शुरू हो जाती थी, लेकिन 40 डिग्री सेल्सियस तापमान में बोई गई सरसों का अंकुरण नहीं होता, इसलिए किसान सरसों बिजाई का जोखिम नहीं ले रहे। इस समय नरमा की फसल फाल पर होती है, इसलिए उसमें पानी की जरूरत नहीं होती।

Rajasthan Medical Services Corporation Ltd.
Gandhi Block, Swasthya Bhawan, Tilak Marg, Jaipur – 302005, Phone No: 0141-2223887, 2228065, Website: www.rmsc.health.rajasthan.gov.in, E-mail : edprmsc-rj@nic.in
No. : F-8(348)RMSC/EPM/M-2/NIB-844/2024-25/RajKaj No. 10736893 Dated :- 25/09/2024
NOTICE INVITING BID
Bid for item (i) Bubble CPAP Consumable, (ii) (PICU/PHDU) HFNC Consumable Kit & (iii) (PICU/PHDU) Ventilator Consumable Kit are invited from interested bidders up to Date: 24.09.2024: 04:00 P.M. Other particulars of the bid may be visited on Procurement portal website https://sppp.rajasthan.gov.in or www.diproline.org or https://eproc.rajasthan.gov.in or website http://rmsc.health.rajasthan.gov.in. UBN:- MSC2425GLRC00038
Raj.Samwad/C/24/5714 Executive Director (EPM)

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर 303329, जिला जयपुर (राजस्थान)
फोन नं. 01425-254022 (का.) e-mail id : dean.sknagri@sknau.ac.in
क्रमांक :- एफ.( )/सीएस/ई बिड/श्रीकनकृमावि/2024/1435 दिनांक :- 25/09/2024
ई-बिड सूचना
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर (जयपुर) के नवनिर्मित गर्ल्स छात्रावास, अन्य छात्रावास अतिथि गृह एवं एससी/एसटी छात्रावास हेतु फर्नीचर एवं इलेक्ट्रिक आईटम ई-बिड़ प्रपत्र वेबसाईट http://eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड किया जा सकता है एवं www.sppp.rajasthan.gov.in और www.sknau.ac.in देखा जा सकता है। ई-बिड़ प्रपत्र शुल्क राशि 1000/- धरोहर राशि 80000+28000=1,08,000/- का डिमाण्ड ड्राफ्ट/बैंकर चैक अधिष्ठाता (DEAN), श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर (जयपुर) के पक्ष में तथा MD, RISL, JAIPUR Fees 1500/- बनाकर दिनांक 04.10.2024 समय दोपहर 02.30 बजे तक अपलोड करवाना एवं अधिष्ठाता कार्यालय, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर में जमा करवाना होगा एवं दिनांक 07.10.2024 को प्रातः 11.00 बजे ई-बिड़ समिति द्वारा खोली जावेगी।
UBN : SKN2425GLBO00170
राज.संवाद/सी/24/5720 अधिष्ठाता

कार्यालय अधिशाषी अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड करौली
Address - Near old Collectorate Circle Karauli
E-Mail :-EEPWD.KARAULI@RAJASTHAN.GOV.IN
क्रमांक :- 2297-2309 दिनांक :- 17.09.2024
निविदा सूचना संख्या-05/2024-25
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की और से विभिन्न कार्यों के लिए उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदको एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनो/केन्द्रीय लोक निर्माण/डाक एवं दुर संचार विभाग/रेल्वे इत्यादि के पंजीकृत संवेदको जो कि राज्य सरकार के ए ए ए बी सी डी श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो से कार्यों हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदाओ से संबंधित विवरण बेवसाईट www.sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता हैं।
NIB Code :- PWD2425A 1634
UBN No.-PWD2425 W SOBO 5884
UBN No.-PWD2425WSOB05885
DIPR/C/9122/2024
(चन्द प्रकाश)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड करौली

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड खानपुर
क्रमांक :- 997 दिनांक :- 24.09.2024
ई-निविदा सूचना संख्या 14/2024-25
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से सड़क / पुलिया मरम्मत व निर्माण कार्यों के लिये, उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान में पंजीकृत संवेदकों एवं राज्य सरकार/केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवम् दूर संचार विभाग / रेलवे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के "एए", एवं "ए", "बी", सी श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है।
निविदा सेसम्बन्धित समस्त विवरण वेबसाईट "www.diproline.org", "www.eproc.rajasthan.gov.in" तथा "www.pwd.rajasthan.gov.in" पर देखा जा सकता है । इच्छुक संवेदकों को अपने डिजिटल हस्ताक्षर के माध्यम से वेबसाईट "www.eproc.rajasthan.gov.in" पर रजिस्टर करवाना आवश्यक है।
UBN No.(1) PWD2425WSOB06329
UBN No.(2) PWD2425WSOB06337
UBN No.(3) PWD2425WSOB06344
UBN No.(4) PWD2425WSOB06363
DIPR/C/9156/2024
अधिशाषी अभियंता
सा.नि.वि. खण्ड खानपुर

थाने से 200 मीटर दूरी पर की बदमाशों ने मकान पर फायरिंग

कोटा, (निसं)। गणेश उत्सव के दौरान हुई मारपीट के मामले में बदमाशों की ओर से बुधवार देर रात को एक घर पर फायरिंग करने का मामला सामने आया है। यह घटना मकबरा थाने से महज 200 मीटर दूरी पर स्थित एक मकान पर हुई है। फायरिंग में बेजुबान पालतू श्वान की मौत हो गई। पीड़ित परिवार का कहना है कि घटना में उनका 16 वर्षीय किशोर बाल-बाल बच गया। गोली उसके कंधे के नजदीक से गुजर गई।

जानकारी के अनुसार मामला नाबालिग किशोर की लड़ाई को लेकर शुरू हुआ था, जिसमें बदला लेने के लिए यह फायरिंग की गई है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दिलीप सैनी ने बताया कि पुराने विवाद को लेकर यह फायरिंग हुई थी। इस मामले में पुलिस जांच कर रही है। जांच के दौरान जिन भी धाराओं का अपराध बनता है उनके अनुसार कार्रवाई की जाएगी। श्वान की मौत पर पशु क्रूरता अधिनियम की धारा भी जोड़ी जाएगी। मामले के अनुसार मकबरा थाने से महज चंद दूरी पर रहने वाले जितेंद्र सिंह सोडा के भतीजे का झगड़ा 6 सितंबर की देर रात को कैथूनीपोल थाना इलाके में हुआ था। यह झगड़ा गणेश उत्सव के एक दिन पहले गणपति बैठाने के दौरान देर रात को हुआ था। इसमें दूसरे किशोर को चोट लगी थी।

सैनिक की मौत पर बीकानेर में बवाल, शहीद का दर्जा देने की मांग

बीकानेर, (निसं)। जिले के सैनिक की मौत पर ग्रामीणों ने प्रदर्शन शुरू कर दिया और परिवार ने शव लेने से इनकार किया है। परिजन ने सैनिक को शहीद का दर्जा देने की मांग रखी है। जानकारी के अनुसार नोखा उपखण्ड के पांचू निवासी भारतीय सेना के जवान रामस्वरूप कस्वां की जम्मू-कश्मीर में गोली लगने से मौत हो गई। घटना के समय जवान ड्यूटी पर था। सेना ने बुधवार (25 सितंबर) को शव जम्मू-कश्मीर से बीकानेर भेजा।

जिला सैनिक कल्याण अधिकारी कर्नल यश राठौड़ (सेवानिवृत) ने जिला कलेक्टर को भेजे पत्र में बताया कि सैनिक रामस्वरूप निवासी पांचू की मौत फिजिकल कैजुअल्टी का केस है। बैटल कैजुअल्टी (शहीद) का केस नहीं है। इस संबंध में सेना की कोर्ट ऑफ इंक्वायरी जारी है। रामस्वरूप के भाई ने बताया कि रामस्वरूप की मौत के समय वह ड्यूटी पर जम्मू-कश्मीर में था। परिवार की सरकार से मांग है कि रामस्वरूप को शहीद का दर्जा और केन्द्र सरकार की ओर से शहीद के अनुरूप सभी लाभ दिए जाएं। शहीद के नाम पर सड़क का नामाकरण करने, पांचू पंचायत समिति में शहीद स्मारक बनाने समेत कई मांग रखी हैं। वहीं ग्रामीणों ने म्यूजियम सर्किल के पास नेशनल हाईवे को जाम कर दिया, जिससे बीकानेर-जयपुर नेशनल हाईवे पर यातायात पूरी तरह ठप हो गया। यातायात पुलिस ने जिला परिषद के पास से वाहनों को डायवर्ट करना शुरू कर दिया। अतिरिक्त जिला कलेक्टर शहर, एसडीएम, अतिरिक्त पुलिस अधिकारी ग्रामीणों से वार्ता करने मौके पर पहुंचे। शहीद का दर्जा देने की मांग पर कोई आश्वासन नहीं दे सका।

पांचू पुलिस थाना के अनुसार 25 वर्षीय रामस्वरूप कस्वां करीब चार साल पहले भारतीय सेना के 65 आर्म्ड रेजिमेंट में सैनिक के रूप में भर्ती हुए थे। सवा साल पहले रामस्वरूप की शादी 15 मई 2023 को हुई थी। पिता मोटाराम कस्वां खेती करते हैं। उनके पांच पुत्रों में रामस्वरूप चौथे नम्बर पर थे। रामस्वरूप का बड़ा भाई श्रीराम कस्वां भी भारतीय सेना में है। गत जुलाई में ही रामस्वरूप छुट्टी बिताकर घर से जम्मू कश्मीर में ड्यूटी करने गए थे। देर शाम तक धरना स्थल पर बड़ी संख्या में ग्रामीणों का जमावड़ा बना हुआ था। जिला प्रशासन के साथ हुई वार्ता में सहमति नहीं बनने के कारण ग्रामीण धरना स्थल पर डटे रहे।

जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
विद्युत अधिनियम, 2003 की धारा 64(2) के अंतर्गत सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड जयपुर, ने जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (जेवीवीएनएल), जयपुर, अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (एवीवीएनएल), अजमेर और जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (जेडीवीवीएनएल), जोधपुर (डिस्कॉम्स के रूप में भी संदर्भित) की ओर से विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 62 (टैरिफ का निर्धारण) सपठित आरईआरसी (व्यवसाय का लेनदेन), विनियम, 2021 के विनियम 19 और 21 के अंतर्गत राजस्थान डिस्कॉम में पीएम-कुसुम योजना के घटक-ए के तहत 1,000 मेगावाट की सौर ऊर्जा क्षमता के कार्यान्वयन के लिए पूर्व-निर्धारण लेवलाइज्ड की मंजूरी के लिए आयोग के समक्ष याचिका दायर की है, इस पर टिप्पणियाँ/सुझाव आमंत्रित हैं।
याचिका संख्या 2261/24 की प्रतियां निरीक्षण/अवलोकन के लिए और विक्रय के लिए 50 रू के भुगतान पर आयोग कार्यालय एवं निम्नांकित स्थानों पर उपलब्ध है।
1. जेवीवीएनएल का मुख्यालय, विद्युत भवन जनपथ, ज्योति नगर, जयपुर।
2. एवीवीएनएल का मुख्यालय, विद्युत भवन, मकरवाडी रोड, पंचशील नगर, अजमेर।
3. जेडीवीवीएनएल का मुख्यालय, न्यू पावर हाउस, बासनी, जोधपुर।
याचिकाएँ निगमों की वेब साइट www.energy.rajasthan.gov.in/jvvnl, www.energy.rajasthan.gov.in/avvnl, www.energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl और रा.वि.वि.आ. की वेब साइट www.rerc.rajasthan.gov.in पर भी उपलब्ध हैं।
टिप्पणियाँ/सुझाव दाखिल करने के इच्छुक व्यक्ति इसे छह प्रतियों में सहायक विवरण के साथ प्राप्तकर्ता अधिकारी, आरईआरसी, विद्युत विनियामक भवन, निकट स्टेट मोटर गैराज, सहकार मार्ग, जयपुर-302001 को भेज सकते हैं या rercjpr@yahoo.co.in पर ई-मेल के माध्यम से भेज सकते हैं, ताकि प्राप्तकर्ता अधिकारी तक 04.10.2024 या उससे पहले पहुंच सकें ।
राज.संवाद/सी/24/5771 जेपीआर 2888 (2024) अधीक्षण अभियंता (रेगुलेशन)

शिक्षकों की मारपीट व अभद्रता से भयभीत छात्र-छात्राएं कलेक्टर कार्यालय पहुंचे

न्यू मथुरा गेट महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय के बच्चों ने विद्यालय के शिक्षकों पर मारपीट व गालियां देकर प्रताड़ित करने की शिकायत एडीएम प्रशासन को दी

भरतपुर, (निसं)। गुरूवार को जिला कलेक्ट्रेट के सामने चल रहे न्यू मथुरा गेट महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय के कक्षा सात व आठ के करीब एक दर्जन से अधिक छात्र-छात्राएं अपने विद्यालय के शिक्षकों के द्वारा मारपीट करने एवं गालियां देते हुए अभ्रद भाषा से प्रताड़ित करने की शिकायत को लेकर जिला कलेक्ट्रेट में कलेक्टर से मिलने पहुंचे। वहां अतिरिक्त जिला कलेक्टर प्रशासन घनश्याम शर्मा के पास पहुंच कर बच्चों ने उनको अपनी पीड़ा बताई।

विद्यालय के बच्चों ने बताया कि विद्यालय में शिक्षकों का पढ़ाई कराने पर बिल्कुल ध्यान नहीं रहता है। वहीं विद्यालय के शिक्षक राहुल, चेतन व महिला शिक्षिका आशा अभद्र भाषा का प्रयोग करते हैं और मारपीट करते हैं। आज भी विद्यालय के कई बच्चों के साथ मारपीट की है। बच्चों ने मारपीट से शरीर पर बने चोट के निशानों को भी एडीएम प्रशासन को दिखाया। बच्चे बुरी तरह भयभीत नजर आ रहे थे। जिस पर एडीएम प्रशासन ने उन्हें सांत्वना देकर समझाया कि आपके साथ हुए गलत व्यवहार की जांच कराकर कार्यवाही अमल में लाई जाएगी, जिस पर बच्चों ने थोडी राहत की सांस ली। मामले की गंभीरता को देखते हुए एडीएम प्रशासन घनश्याम शर्मा ने जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय प्रारंभिक आरडी बंसल को फोन कर इस मामले की गहनता से जांच कर रिपोर्ट पेश देने के निर्देश दिए। एडीएम प्रशासन के निर्देश पर जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय प्रारंभिक आरडी बंसल, महात्मा गांधी विद्यालय के उपनिदेशक दलबीर सिंह, सेवर के एसीबीईओ रामवीर सिंह जांच करने के लिए न्यू मथुरा गेट महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय पहुंचे। लेकिन स्कूल की शिफ्ट खत्म होने के कारण उन्हें शिक्षक नहीं मिले। जिस पर मामले की जांच को लेकर जांच कमेटी का गठन किया गया, जिनके द्वारा मीन दिन में जिला कलेक्टर को रिपोर्ट सौंपी जाएगी। जिला शिक्षा अधिकारी मुख्यालय प्रारंभिक आरडी बंसल ने बताया कि जांच कमेटी के द्वारा जांच कर रिपोर्ट पेश की जाएगी। अगर इसमें शिक्षकों की गलती पाई गई तो उनके खिलाफ कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

बच्चों ने विद्यालय के शिक्षकों पर मारपीट व गालियां देकर प्रताड़ित करने की शिकायत एडीएम प्रशासन से की।

- बच्चों ने मारपीट से शरीर पर बने चोट के निशानों को भी एडीएम प्रशासन को दिखाया

कार्यालय नगरपरिषद करौली (राज0)
फोन न0 07464-294024 ई-मेल आईडी np.karauli@yahoo.com
क्रमांक: 2012-13 दिनांक: 24.09.2024
ई - निविदा सूचना
सर्वसाधारण एवं उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों को सूचित किया जाता हैं कि नगरपरिषद करौली मय डिफेक्ट लाईबिलिटी पीरियड (कार्य दोष निवारण अवधि) के शहर करौली के विभिन्न वार्डो में विभिन्न प्रकार के विकास कार्य कराना चाहती हैं, जिस हेतु उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से ई-टैण्डरिंग के माध्यमसे ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती हैं। निविदा का विवरण व शर्तें www.sppp.raj.gov.in & www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता हैं।

कुल निविदा कार्य	नगरपरिषद क्षेत्र करौली में क्षतिग्रस्त सड़कों पर पेच मरम्मत कार्य ARC (वार्षिक दर अनुबंध)	मदनमोहन जी मंदिर के पास टीनशेड निर्माण कार्य	Operation & Maintinance of Sewage Treatment Plant 5MLD Near Charagah & sewage pumping station including all civil, electirical, mechanichal pumping and other alide works at Karauli town
निविदा की लागत	48.32 लाख	16.81 लाख	45.14 लाख
धरोहर राशि	अनुमानित लागत का 2 प्रतिशत प्रत्येक कार्य के लिए पृथक-पृथक (आयुक्त नगरपरिषद करौली के नाम से जरिये डी0डी0)		
ऑनलाईन निविदा फॉर्म मिलने /डाउनलोड की तारीख	27.09.2024 समय 2:00 पीएम से 11.10.2024 समय 6:00 पीएम तक		
ऑनलाईन निविदा फॉर्म जमा कराने की अन्तिम तिथि	11.10.2024 समय 6:00 पीएम तक		
भौतिक दस्तावेज प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि	12.10.2024 समय 5:00 पीएम तक		
ई-प्रोक्योरमेंट पोर्टल प्राप्त बिड की खोलने की तिथि	13.10.2024 समय 2:00 पीएम		
निविदा शुल्क	1000/- रूपयें प्रत्येक कार्य के लिए पृथक-पृथक (आयुक्त नगरपरिषद करौली के नाम से जरिये डी0डी0)		
निविदा प्रोसेसिंग शुल्क	500/-रूपये प्रत्येक कार्य के लिए पृथक-पृथक (MDRISL JAIPUR के नाम से जरिये डी0डी0)		
निविदा प्रपत्र व शर्तें डाउनलोडिंग बेबसाईट	eproc.rajasthan.gov.in		
कार्य दोष निवारण (डिफेक्ट लाईबिलीटी पीरियड)	6 माह	12 माह	06 माह
कार्य की समयावधि	12 माह	03 माह	24 माह
UBN. -	DLB2425WSOB08827	DLB2425WSOB08829	DLB2425WSOB08836

राज.संवाद/सी/24/5758 सभापति आयुक्त

फर्जी ई-चालान से बचने के लिए पुलिस मुख्यालय की एडवाइजरी

वैध-अवैध एस.एम.एस. की पहचान के बाद ही करे ऑनलाइन भुगतान

जयपुर (कासं)। पुलिस मुख्यालय की ओर से यातायात नियमों के उल्लंघन पर नागरिकों को प्राप्त होने वाले ई-चालानों के भुगतान से सम्बंधित लिंक में साइबर ठगों की हेराफेरी के बारे में आम नागरिकों के लिए एडवाइजरी जारी की है। आमजन फर्जी ई-चालानों से बचे तथा वैध और अवैध एसएमएस में अंतर की पहचान कर सके, इसके लिए एडवाइजरी में महत्वपूर्ण और उपयोगी जानकारी का समावेश किया गया है।

पुलिस महानिदेशक (डीजीपी), साइबर अपराध, एससीआरबी एवं तकनीकी सेवाएं हेमंत प्रियदर्शी ने बताया कि वर्तमान तकनीक युग में नागरिकों द्वारा यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर उनको ई-चालान- जारी किए जाते है, जो नियमों की अवहेलना करने वाले व्यक्ति के रजिस्टर्ड मोबाइल नम्बर पर एएएमएस द्वारा भेजे जाते हैं। प्रदेश में साइबर अपराधियों द्वारा फर्जी ई-चालान के माध्यम से तकनीकी पेचिदगियों से अनजान लोगों को ठगने के मामले प्रकाश में आए है। आमजन फर्जी ई-चालन के माध्यम से होने वाली धोखधडी या जालसाजी के शिकार नहीं हो, इसके लिए यह एडवाइलरी जारी की गई है। डीजीपी (साइबर अपराध) ने बताया कि ई-चालान ऑनलाईन वाहनों के चालान रजिस्ट्रेशन के समय दर्ज मोबाईल नम्बर पर केवल एसएमएस द्वारा ही भेजा जाता है, वाट्सएप एप्लीकेशन पर कभी नहीं भेजा जाता है। अधिकृत एसएमएस का हैडर केवल "वाहन" ही होता है। इस एसएमएस संदेश में विभाग द्वारा यातायात नियमों से सम्बंधित विवरण और चालान का भुगतान करने के लिए लिंक भेजा जाता है। साइबर ठग इससे मिलते-जुलते नाम से फर्जी ई-चालान बनाकर ठगी का प्रयास कर सकते है। ऐसे में वे नागरिक जिन्होंने यातायात नियमों का उल्लंघन किया ही नहीं हो, उनको भी फर्जी एसएमएस या वॉटसएप मैसेज भेजकर धोखाधड़ी का शिकार बनाया जा सकता है। उन्होंने नागरिको से अपील की है कि वे फर्जी और वैध एसएमएस की पहचान करके जालसाजी का शिकार होने से बचे।

- **लोग जागरूक रहें, ई-चालान का मैसेज कभी वॉट्सएप पर नहीं भेजा जाता : प्रियदर्शी**
- **उन्होंने बताया कि ई-चालान के लिए जो मैसेज प्राप्त होता है इसकी वैधता की पहचान या एसएमएस हैडर को जानने के लिए 1909 नम्बर पर एस.एम.एस. भेजा जा सकता है।**

प्रियदर्शी ने बताया कि ई-चालान के लिए जो मैसेज प्राप्त होता है इसकी वैधता की पहचान या एसएमएस हैडर को जानने के लिए 1909 नम्बर पर एसएमएस भेजा जा सकता है। डीजीपी (साइबर अपराध) ने बताया कि इसके बाद भी यदि भुगतान के लिए प्राप्त ई-चालान पर तनिक भी संदेह हो तो आम नागरिक यातायात पुलिस अधिकारी के पास उपलब्ध पोस मशीन पर चालान नम्बर की जांच के बाद भुगतान कर सकता है। इसके अलावा ई-चालान का भुगतान एप के माध्यम से भी किया जा सकता है।

'आर.यू.एच.एस. अस्पताल को रिम्स के रूप में विकसित करें'

- **चिकित्सा मंत्री ने एक्शन प्लान बनाने के दिए निर्देश, 750 करोड़ की लागत से चरणबद्ध रूप से होगा काम**

जयपुर । चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय से संबद्ध अस्पताल को एम्स की तर्ज पर राजस्थान इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज (रिम्स) में विकसित किया जाएगा। इसके लिए प्रभावी एक्शन प्लान बनाते हुए जल्द काम शुरू किया जाएगा। यह काम चरणबद्ध रूप से समय सीमा में पूरा किया जाएगा। आरयूएचएस अस्पताल में सुपर स्पेशलिटी सेवाओं के लिए आवश्यक स्टाफ भी लगाएंगे।

खींवसर गुरूवार को आरयूएचएस में आयोजित बैठक में विश्वविद्यालय, रिम्स के विकास एवं अन्य विषयों पर समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आमजन को अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध करवाने, सवाई मानसिंह अस्पताल का रोगी भार कम करने एवं चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने 750 करोड़ रूपए की लागत से आरयूएचएस को रिम्स के रूप में विकसित करने की घोषणा की है। अधिकारी इस घोषणा को निर्धारित टाइमलाइन में मूर्त रूप दें।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि रिम्स के विकास के लिए होने वाले निर्माण कार्यों, जांच एवं उपचार के लिए उपकरणों तथा चिकित्सकों एवं अन्य स्टाफ की आवश्यकताओं का आंकलन कर एक एक्शन प्लान तैयार करें। उन्होंने कहा कि रिम्स के रूप में इस संस्थान का विकास होने से न केवल जयपुरवासियों बल्कि प्रदेशभर से आने वाले रोगियों को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं सुलभ होंगी। खींवसर ने वर्तमान में संचालित स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर बनाने, सुपर स्पेशलिटी सेवाओं एवं भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए चिकित्सकों एवं अन्य स्टाफ की उपलब्धता की समीक्षा भी की। उन्होंने कहा कि अस्पताल में आईपीडी सेवाओं का पूरा उपयोग सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक स्टाफ नियोजित किया जाए। साथ ही, आवश्कतानुरूप भर्ती प्रक्रिया को भी आगे बढ़ाया जाए। प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने बताया आरयूएचएस में चिकित्सक व अन्य स्टाफ नियोजित करने के विभिन्न विकल्पों पर काम किया जा रहा है।

सार-समाचार

विद्यार्थियों ने केस स्टडी की प्रस्तुति दी

जयपुर । राजस्थान विश्वविद्यालय के व्यावसायिक प्रशासन विभाग में एम.कॉम (व्यावसायिक प्रशासन) प्रथम सेमेस्टर के छात्रों द्वारा केस स्टडी प्रस्तुति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डीन और विभाग अध्यक्ष प्रो. प्रदीप शर्मा उपस्थित रहे। विशेष अतिथि के रूप में प्रो. कृष्णा अग्रवाल मौजूद रहे। कार्यक्रम के प्रभारी प्रो. सरला शर्मा और प्रो. सुकांत शर्मा रहे, जबकि कार्यक्रम का संयोजन और आयोजन डॉ. यदुवीर यादव द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने कई समसामयिक और व्यावसायिक प्रबंधन से जुड़े विषयों पर केस स्टडी प्रस्तुत की। इनमें "मानव संसाधन का भविष्य," "कृत्रिम बुद्धिमत्ता" "व्यवसाय शिष्टाचार" और कर्मचारी प्रशिक्षण एवं विकास" जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रस्तुतियाँ दी गईं। छात्रों ने इन विषयों पर गहन अध्ययन और विश्लेषण प्रस्तुत कर अपने कौशल और ज्ञान को प्रदर्शित किया। मुख्य अतिथि प्रो. प्रदीप शर्मा ने छात्रों के प्रयासों की सराहना की। कार्यक्रम के अंत में प्रतिभाशाली छात्रों को उनकी उत्कृष्ट प्रस्तुतियों के लिए पुरस्कार भी प्रदान किए गए, जिससे छात्रों में उत्साह और प्रेरणा का संचार हुआ। कार्यक्रम का सफल समापन सभी अतिथियों, शिक्षकों और छात्रों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए हुआ।

जयपुर मेट्रो डिपो में श्रमदान शिविर

जयपुर । जयपुर मेट्रो में 17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक "स्वच्छता ही सेवा अभियान-2024" स्वभाव स्वच्छता, संस्कार स्वच्छता थीम पर जयपुर मेट्रो में आयोजित किया जा रहा है। इस अभियान के तहत् मानसरोवर मेट्रो डिपो के बाहरी हिस्से में कर्मचारियों, अधिकारियों एवं समस्त स्टॉफ द्वारा श्रमदान किया गया। इस श्रमदान शिविर के दौरान श्रम सेवकों द्वारा मेट्रो डिपो के मुख्य गेट के आसपास अनावश्यक कांटेदार झाड़ियां, कीचड़, मिट्टी, गंदगी, कचरा एवं नालों की साफ-सफाई की गयी। इस अवसर पर जयपुर मेट्रो के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक वैभव गालरिया ने संदेश दिया कि स्वच्छता अभियान का उद्देश्य न केवल देश को स्वच्छ बनाना है, बल्कि सभी नागरिकों के भीतर स्वच्छता को एक आदत के रूप में स्थापित करना है।

कौशल शिविर में जुटे 3 हजार उम्मीदवार

जयपुर । उप क्षेत्रीय रोजगार कार्यालय जयपुर द्वारा गुरुवार 26 सितंबर को सांभरलेक स्थित राजकीय शाकम्भर स्नातकोत्तर महाविद्यालय में एक दिवसीय कौशल, रोजगार, उद्यिमता शिविर एवं करियर सेमिनार का आयोजन हुआ। उप-प्रादेशिक रोजगार कार्यालय की उप निदेशक श्रीमती नवरेखा ने समारोह में अपने अनुभव साझा किये और विद्यार्थियों को प्रेरित किया और रोजगार के अवसरों तथा विभागीय योजनाओं की जानकारी प्रदान की। साथ ही उन्होंने बताया कि शिविर में 3 हजार 296 बेरोजगार युवा पंजीकृत हुए। शिविर में निजी क्षेत्र के 40 संस्थान एवं सार्वजनिक क्षेत्र के 8 संस्थानों ने भाग लेकर कुल 1 हजार 267 आशार्थियों को लाभान्वित किया। 707 आशार्थियों का प्रारम्भिक चयन, 350 आशार्थियों को प्रशिक्षण हेतु चयनित किया साथ ही 210 आशार्थियों का स्वरोजगार हेतु चयन किया गया। वहीं, करियर काउंसलिंग सत्र में विषय विशेषज्ञों ने युवाओं को बेहतर भविष्य की राह दिखाई। इस मेले को आयोजित कराने में आयकर अधिकारी रमेश सांभरिया, नागरिक विकास समिति, सांभर लेक के कार्यकारी अध्यक्ष अनिल गटटानी, प्रोफेसर (डॉ.) ज्ञान प्रकाश दायमा जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

स्मैक तस्करी में लिप्त बदमाश गिरफ्तार

जयपुर । जयपुर कमिश्नरेट की स्पेशल टीम ने ऑपरेशन आग और ऑपरेशन "क्लीन स्वीप" के तहत भांकरोटा इलाके कार्रवाई करते हुए स्मैक तस्कर व अवैध हथियार रखने वाले आरोपित करण सिन्धी को गिरफ्तार किया। पुलिस ने आरोपी के पास से 209 ग्राम 90 मिलीग्राम अवैध मादक पदार्थ स्मैक, अवैध पिस्टल और 52 हजार 600 रुपये व कार बरामद की है। पुलिस की प्रारम्भिक पूछताछ में सामने आया है कि आरोपित अवैध मादक पदार्थ अकलेरा झालावाड़ से लाकर जयपुर में सप्लाई करता है। जब्त की गई अवैध मादक पदार्थ स्मैक की अनुमानित बाजार मूल्य 10 लाख रुपये है। पुलिस आरोपित से पूछताछ करने में जुटी है। जयपुर पुलिस कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ ने बताया कि गिरफ्तार आरोपित करण सिन्धी अवैध मादक पदार्थ स्मैक अकलेरा झालावाड से लेकर आना बताया एवं अवैध हथियार के संबंध में बताया कि पिस्टल उसके पास काफी समय पहले की है। उसके काफी दुश्मन है उनसे बचने के लिये यह पिस्टल रख रखी थी। आरोपित अवैध मादक पदार्थ स्मैक मणिपाल यूनिवर्सिटी बगरु एवं भांकरोटा क्षेत्र में स्थित कॉलेजों के आस-पास सप्लाई करता है।गिरफ्तार आरोपी से अवैध मादक पदार्थ स्मैक एवं अवैध हथियार के सप्लायर एवं खरीददार के नेटवर्क के संबंध में पूछताछ की जा रही है।

अस्पताल में वृद्धा के जेवर चोरी

जयपुर । फोर्टिस अस्पताल में भर्ती महिला मरीज के कान से किसी ने जेवर चोरी कर लिए। घटना के सम्बंध में महिला के बेटे ने जवाहर सर्किल थाने में मामला दर्ज करवाया है। पुलिस के अनुसार झर बस्सी निवासी अजय कुमार ने मामला दर्ज करवाया कि वह यातायात पुलिस में कांस्टेबल के पर कार्यरत है। उसकी मां की तबीयत खराब होने पर फोर्टिस अस्पताल में भर्ती करवाया था। 19 सितम्बर को मां से मिलने गया तो उनके एक कार के सोने के जेवर गायब मिला। जबकि जब मां को एडमिट करवाया तो उसने दोनों कानों में जेवर पहन रखे थे। पीडित की शिकायत पर मामला दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। मामले की जांच एएसआई रामराज कर रहे हैं।

वेतन विसंगतियां दूर करने की मांग

जयपुर । मंत्रालयिक संवर्ग की वेतन विसंगतियों एवं अन्य समस्याओं के लिए राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ के शिष्टमंडल ने अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ एकीकृत के प्रदेश अध्यक्ष गजेंद्र सिंह राठौड़ औश्र राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ के प्रदेश महामंत्री देवेंद्र सिंह नरूका के संयुक्त नेतृत्व में मुख्यमंत्री कार्यालय तथा मुख्य सचिव एवं अतिरिक्त वित्त सचिव को ज्ञापन दिया। अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ एकीकृत के प्रदेश अध्यक्ष ने बताया कि मुख्यमंत्री द्वारा विधानसभा में बजट सत्र के दौरान 1 सितंबर 2024 से सभी की वेतन विसंगतियां दूर करने की घोषणा के बावजूद सितंबर माह खत्म होने को है लेकिन अभी तक ना तो सांवत और खेमराज समिति की रिपोर्ट सार्वजनिक की गई और ना ही कोई कार्यवाही की गई है। जिससे कर्मचारियों में भारी आक्रोश प्राप्त है। गत सरकार में कैबिनेट द्वारा संस्थापन अधिकारी की ग्रेड पे 6000 से बढ़ाकर 6600 अनुमोदित कर दी गई थी , लेकिन अभी तक उसके आदेश नहीं निकले हैं । सचिवालय एवं अन्य संवर्गों की भांति मंत्रालयिक संवर्ग को दूसरी पदोन्नित पर ग्रेड पे 4200, संस्थापन अधिकारी के आगे उप निदेशक प्रशासन का पद सृजित करने, पदोन्नितयों के खिलाफ स्टे निरस्त करवाने आदि प्रमुख मांगे हैं। राजस्थान राज्य कर्मचारी संघ की पुलिस अध्यक्ष राजेश पारीक एवं प्रदेश महामंत्री देवेंद्र सिंह नरूका ने कहा कि शीघ्र ही प्रांत स्तर की बैठक आयोजित कर आगे की रूपरेखा तय की जाएगी। ज्ञापन देने वाले शिष्टमंडल में गजेंद्र सिंह राठौड़, कुलदीप सिंह यादव, देवेंद्र सिंह नरूका, सतीश शर्मा, सुभाष लुगरिया आदि कर्मचारी नेता शामिल थे।

स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट में अब मिलेगी विश्वस्तरीय रेडियोथैरेपी की सुविधा

चिकित्सा मंत्री ने अत्याधुनिक लीनियर एक्सीलेटर और सी.टी. सिम्युलेटर मशीनों का लोकार्पण किया

चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट में लीनियर एक्सेलरेटर मशीनों और सीटी सिम्युलेटर मशीन का लोकार्पण करने के बाद अवलोकन किया और डॉक्टर्स से इनके बारे में पूरी जानकारी ली।

जयपुर । स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट में अब अत्याधुनिक रेडियो थैरेपी मशीन से कैंसर रोगियों को विश्व स्तरीय उपचार मिल सकेगा। यह मशीन बेहद कम समय में कैंसर ट्यूमर खत्म कर देती है। चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर ने इंस्टीट्यूट में रेडिएशन ऑन्कोलॉजी विभाग में स्थापित की गई लीनियर एक्सेलरेटर मशीनों व सीटी सिम्युलेटर मशीन का लोकार्पण किया। प्रदेश में रेडियोथेरेपी की यह नवीनतम मशीनें हैं।

इस अवसर पर चिकित्सा मंत्री ने मीडिया से बातचीत में कहा कि करीब 54 करोड़ रूपए की लागत से स्थापित इन अत्याधुनिक मशीनों के प्रारंभ होने से ब्रेस्ट, लंग, हैड और नेक कैंसर की जांच एवं उपचार में बड़ी मदद मिलेगी। लाखों रुपए खर्च कर होने वाला उपचार यहां नि:शुल्क प्राप्त हो सकेगा। इन मशीनों से ट्यूमर का पता लगाने एवं रेडियोथेरेपी में सटीकता आएगी तथा कैंसर रोगियों को विश्वस्तरीय उपचार मिल सकेगा। स्टेट कैंसर इंस्टीट्यूट के अधीक्षक डॉ. संदीप जसूजा ने बताया कि रेडियोथेरेपी की ये लीनियर एक्सेलरेटर मशीनें कहीं अधिक फोकस रेडिएशन एक्सपोजर देती हैं। जिससे ट्रीटमेंट टाइम बहुत कम हो गया है और इलाज भी आसान हो गया है। नवीनतम मशीनें स्टीरियो टैक्सी सर्जरी कर सकती हैं, जिससे एक ही बार में ट्यूमर खत्म हो सकता है। साथ ही आस पास के कैंसर सेल्स भी खत्म हो जाते हैं। इसमें रेडिएशन का पूरा प्रोसीजर 2 मिनट में खत्म हो जाता है। पहले की तरह रेडियोथेरेपी कराने वाले मरीजों में त्वचा पर कालापन आने और दूसरे साइड इफेक्ट्स इस मशीन से नहीं होंगे। इसका सबसे बड़ा फायदा यह रहेगा कि रेडिएशन एक्सपोजर के समय आस पास के अंगों को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचेगा। नई सीटी सिम्युलेटर मशीन से मरीज को स्कैन कर उसके ट्रीटमेंट की प्लानिंग सॉफ्टवेयर में ही वर्चुअली ही की जा सकेगी। इससे इलाज और ज्यादा सटीक हो जाएगा और इलाज के दौरान होने वाली जटिलता का बेहतर प्रबंधन किया जा सकेगा। ये सभी मशीनें शुक्रवार से सेवाएं देना शुरू कर देंगी। पूरे देश में कुछ ही सेंटर्स पर ऐसी तकनीक उपलब्ध है।

डेंटल कॉलेज में रेजिडेंट्स का प्रिंसिपल के खिलाफ प्रदर्शन

जयपुर । राजधानी के आरयूएचएस से संबद्ध शास्त्री नगर स्थित सरकारी डेंटल कॉलेज के रेजिडेंट्स डॉक्टर्स ने गुरुवार को प्रिंसिपल के खिलाफ मोर्चा खोलकर प्रदर्शन किया। रेजिडेंट्स ने प्रिंसिपल पर एक प्राइवेट महिला डॉक्टर का समर्थन करने का आरोप लगाते हुए कॉलेज में दखलअंदाजी का आरोप लगाया। हालांकि, प्रिंसिपल ने अपने उपर लगे इन आरोपों को झूठा बताया है।

शास्त्री नगर स्थित सरकारी डेंटल कॉलेज में रेजिडेंट चिकित्सकों ने जमकर हंगामा किया। प्रिंसिपल से इस्तीफा की मांग करते हुए स्ट्राइक कर दी और नारेबाजी की। नारेबाजी से नाराज होकर प्रिंसिपल ने प्रदर्शन के दौरान इस्तेमाल किए जा रहे पोस्टर्स को फाड़ दिया। रेजिडेंट्स डॉक्टर्स ने आरोप लगाए कि एक प्राइवेट प्रैक्टीशनर्स द्वारा रेजिडेंट चिकित्सकों को मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है। रेजिडेंट्स का कहना है कि प्राइवेट प्रैक्टीशनर्स ओरल सर्जरी विभाग के सभी मामलों और मरीजों के इलाज की प्रक्रिया में दखलअंजादी करती हैं, जबकि उनका अस्पताल से कोई लेना-देना नहीं है।

रेजिडेंट चिकित्सकों ने यह भी कहा कि प्राइवेट डॉक्टर ओपीडी में रेजिडेंट के नाम पर अधीकृत मरीजों को बहला कर उनकी सर्जरी करती है। रेजिडेंट्स के साथ बदतमीजी करना उनका रोजमर्रा का काम है। रेजिडेंट्स का आरोप है कि डेंटल कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. विनय कुमार का उन्हें पूरा समर्थन है। इस मामले में पहले भी आरयूएचएस को शिकायतें की जा चुकी हैं, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई है। रेजिडेंट्स डॉक्टर्स ने प्रिंसिपल को हटाने की मांग की है। कुछ समय पहले इस पूरे मामले को लेकर राजस्थान स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय की ओर से एक नोटिस भी डेंटल कॉलेज को जारी किया गया था। इसमें डॉक्टर को लेकर जानकारी मांगी गई थी। इसके बावजूद रेजिडेंट चिकित्सकों का आरोप है कि कॉलेज ने इस मामले पर कोई कार्रवाई नहीं की।

'एमनेस्टी स्कीम के दायरे में आने वाले बकायादारों से करें वसूली'

खान एवं पेट्रोलियम विभाग के प्रमुख शासन सचिव टी. रविकान्त ने गुरूवार को अधिकारियों की बैठक लेकर राजस्व वृद्धि के मुद्दे पर चर्चा की।

जयपुर (कासं)। खान एवं पेट्रोलियम विभाग के प्रमुख शासन सचिव टी. रविकान्त ने विभागीय एमनेस्टी योजना के दायरें में आने वाले सभी बकायादारों को पत्र जारी करने के साथ सीधे संपर्क कर उन्हें विभागीय बकाया व ब्याजमाफी योजना का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिए है।

उन्होंने कहा कि इससे बकाया वसूली के प्रकरणों का निस्तारण होगा वहीं राज्य सरकार में राजस्व की प्राप्ति और बकाया वसूली में लगने वाले समय व धन की बचत होगी। उन्होंने स्थानीय स्तर पर ऐसा मंच बनाने पर भी जोर दिया जहां लीजधारकों और विभागीय अफसरों के बीच परस्पर समन्वय से खनिज गतिविधियों को और अधिक विस्तारित किया जा सके।

खान एवं पेट्रोलियम प्रमुख सचिव टी. रविकान्त गुरुवार को खनिज विभाग में खान एवं भूविज्ञान विभाग के अधिकारियों से रुबरु हो रहे थे। उन्होंने कहा कि विभाग को स्थानीय स्तर पर ऐसा मैकेनिज्म विकसित करना होगा जिससे लीजधारकों की स्थानीय स्तर की समस्याओं का समय रहते समाधान हो सके। इससे खोज खनन कार्य में आ रही बाधाएं दूर होगी तो खनन व राजस्व में बढ़ोतरी होने के साथ ही अवैध खनन गतिविधियों पर अंकुश लग सकेगा। एमनेस्टी योजना की चर्चा करते हुए कहा कि बकायादारों से वन टू वन संपर्क करने से पुरानी बकाया की वसूली हो सकेगी। इसके लिए समयवद्ध टाइमलाईन तय की जा सकती है।

- **'लीजधारकों और विभाग के बीच बेहतर समन्वय हों, स्थानीय स्तर पर समस्याओं का समाधान करें'**

रविकान्त ने खनिज पट्टों की नीलामी के बाद पट्टाधारकों के सामने आने वाली समस्याओं की और इशारा करते हुए कहा कि इससे खनन गतिविधियां आरंभ होने में देरी होती है और अन्य ब्लॉकों की नीलामी में भी विपरीत असर पड़ता है। जिला कलक्टर की अध्यक्षता में गठित एसआईटी और माइनिंग कमेटी की मीटिंग से पहले इस तरह के बिन्दुओं को चिन्हित किया जाना चाहिए ताकि मीटिंग में हल निकाला जा सके। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि फील्ड में एलर्टनेस ने अवैध खनन गतिविधियों सहित बहुत सी समस्याओं का आसानी से समाधान हो सकता है। उन्होंने विधान सभा प्रश्नों, विशेष उल्लेख, ध्यानाकर्षण प्रस्तावों सहित विधान सभा से संबंधित लंबित प्रकरणों को शून्य स्तर पर लाने का कहा।

खराब सड़कों की मरम्मत के बजाय सही सड़कों पर डामरीकरण कर रहे हैं जे.डी.ए. के इंजीनियर्स

वंदे मातरम मार्ग पर पहले पेचवर्क कर लाखों रुपए बर्बाद किए, अब इस सड़क के नवीनीकरण के नाम पर पुनः डामर कर दी

वंदे मातरम और विजय पथ रोड पर जे.डी.ए. के इंजीनियर्स ने अच्छी-खासी सड़क का नवीनीकरण कर दिया।

जयपुर । जयपुर विकास प्राधिकरण के इंजीनियर्स की रूचि खराब सड़कों को सही करने की बजाय सही सड़कों का ही नवीनीकरण करने में हैं। ताजा मामला वंदे मातरम रोड और विजय पथ रोड का है। वंदे मातरम रोड बिलकुल सही है और ज्यादा टूटी हुई भी नहीं है। सड़क की चौड़ाई 200 फीट होने के कारण पानी का बहाव भी बरसात में आसानी से हो गया था। इस कारण सड़क नहीं टूटी। अब जेडीए ने इस सड़क के नवीनीकरण का काम हाथ में लेकर डामरीकरण शुरू हुआ है। डामर करने से पहले यहां डीबीएम किया जा रहा है। डीबीएम की मोटाई 50 एमएम होनी चाहिए लेकिन मौके पर 20 एमएम भी नहीं है। रोडी में डामर की मात्रा भी पूरी नहीं है।

वंदे मातरम मार्ग विजय पथ होटल हयात से शुरू होकर पत्रकार कॉलोनी, होता हुआ नारायण विहार में मिल जाता है। वर्तमान में वंदे मातरम मार्ग के आसपास की कालोनियों और विजय पथ पर जगह जगह सड़क बहुत ही खराब है। कई जगह तो टूट कर बिखर चुकी है। इस सड़क पर किसी तरह के पेचवर्क भी नहीं दिखे। केसर सर्किल पर तो हालात इतने बुरे है कि आए दिन दो पहिया वाहन चालक सडक से निकली रोडी-कंक्रीट से फिसल कर अपने हाथ पैर तुड़वा रहे हैं। इसके साथ ही आसपास की कालोनियों में सड़कों की स्थित खराब है। कई कालोनियों में तो मिट्टी पड़ी हुई है । स्थानीय निवासी जेडीए जा जाकर थक गए है लेकिन जेडीए के जोन 8 के एक्सईएन को जनता की परवाह नहीं है।

अभी वंदे मातरम मार्ग पर ट्रेफिक की बहुतायत नहीं है। सड़कें सूनी रहती है। मात्र कुछ वाहन चल रहे हैं। सही सड़क का नवीनीकरण करने में लागत कम आती है जबकि टूटी-फूटी सड़कों को सुधार कर डामरीकरण करने में खर्चा भी अधिक आता है। सही सड़क पर डामर करने में ठेकेदार को बचत काफी अच्छी हो जाती है। जेडीए के जोन 8 के इंजीनियर्स की रुचि भी इन्ही सड़कों को ठीक करने में रहती है।

वंदे मातरम रोड पर कुछ दिन पहले ही पेचवर्क किया गया था। पेचवर्क भी बाकायदा मशीन और लेवल लेकर किया गया था। इसमें लाखों रुपए का खर्चा किया गया था। इसे अभी सात दिन भी नहीं हुए कि सडक का नवीनीकरण शुरू कर दिया गया। जेडीए के जोन 8 के इंजीनियर्स को जब इस सडक का नवीनीकरण और डामरीकरण ही करना था तो पेचवर्क नहीं करना चाहिए। ऐसे में जेडीए का तो पैसा बर्बाद हुआ ही साथ में पेचवर्क करना भी बेकार हो गया। इस सड़क की वर्तमान स्थिति को देख कर यहां पेचवर्क से भी काम चल सकता है लेकिन इंजीनियर्स ने इसे नहीं माना और जेडीए का धन बर्बाद करने में जुट गए।

जेडीए के जोन 8 के एक्सईएन नरेन्द्र अग्रवाल का कहना है कि नए सिरे से डामरीकरण का काम किया जा रहा है। इसे बिलकुल सही और प्रॉपर तरीके से किया जा रहा है। कोई भी इसे चैक करा सकता है। हम सही काम कर रहे हैं, लेकिन वे यह नहीं बता सके कि टूटी सड़कों को ठीक करने में समय क्यों लग रहा है, जिससे जनता को जल्द राहत मिल सके।

ARBiT
it happens here...

World Tourism Day

Travel has been said to broaden the mind, exploring the world and seeing the broad vistas and cultures that the people of the world offer. Tourism can describe travel for pleasure, both foreign and domestic, and has been happening as long as mankind. *World Tourism Day* is your opportunity to broad your own world a little, find a location you've always wanted to make time to visit, and finally, get around to making time to do it. So, find your inner traveller and get out there, and experience the places you've always wanted to see.

राष्ट्रदूत
FRIDAY
27 September 2024
A-B

#COVID-19

Brain changes in people who lost sense of smell

Covid-19's direct impact on the olfactory system often leads to a more pronounced, and sometimes, longer-lasting loss of smell.

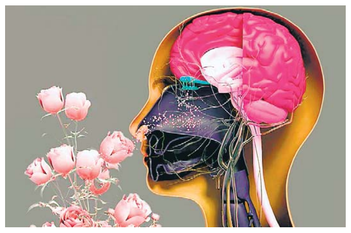

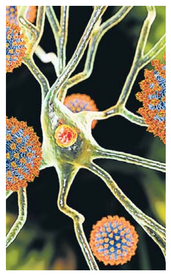

The symptoms of Long Covid, which has a lasting effect, continue to emerge. Now, a new study has shed light on apparent brain changes or neurological consequences of COVID-19, especially in those who lost their sense of smell, post-diagnosis. Published in *Scientific Reports*, the study found that those with anosmia (the loss of smell) during Covid-19 showed alterations in 'brain functionality and even physical structure during recovery.' According to reports, this study is among the first to link Covid-19 related loss of smell to significant brain changes.

The August 2024 study studied this subject, given the early reports of neurological symptoms in patients affected by Covid-19. "We wanted to contribute from our unique perspective to understanding the potential damage caused by SARS-CoV-2 infection in the central nervous system. This led us to initiate this study, in which we evaluated recovered Covid-19 patients using structural and functional magnetic resonance imaging. At the same time, they performed decision-making and cognitive control tasks, as well as tracking their evolution with electroencephalography," the authors noted.

"Loss of smell in Covid-19 occurs due to the virus' impact on the olfactory system in the nasal passages," said Dr. Ravi Shekhar Jha, Pulmonologist, Director, Pulmonology, MD, MRCP, Fortis Hospital, Faridabad. "Specifically, the SARS-CoV-2 virus targets cells in the upper part of the nasal cavity, where the olfactory neurons are located. These neurons are responsible for detecting smells and sending signals to the brain," explained Dr Jha.

According to him, the virus infects supporting cells around the olfactory neurons, causing inflammation and disruption of normal function. "This inflammation can lead to a blockage of the nasal passages or direct damage to the cells that help detect smells, resulting in temporary or prolonged loss of smell," said Dr. Jha.

Unlike other respiratory infections, where congestion may block the sense of smell, Covid-19's direct impact on the olfactory system often leads to a more pronounced, and sometimes, longer-lasting loss of smell, even in the absence of nasal congestion. That's not all. The research, done on 100 adults in Santiago, Chile, who had recovered from respiratory infections between February 2020 and May 2023, with the final sample, including 73 participants who had confirmed cases of Covid-19 (the remaining participants had respiratory diseases caused by other agents, as confirmed by multiple negative PCR tests), also had researchers using a combination of tests and brain scans across two sessions to assess the participant's brain function and structure. Notably, the participants ranged in age from 19 to 65 years, with none having severe cases of Covid-19 that required ventilators or intensive care.

Patients with anosmia were found to be more impulsive and made rapid changes in their decisions during neuropsychological testing. "Anosmia also correlated with brain measures, including decreased functional activity during the decision-making task, thinning of cortical thickness in parietal regions, and loss of white matter integrity," the study findings read.

The study further mentioned that the results highlight the importance of a history of olfactory dysfunction in relation to the presence of brain alterations. "Given the substantial number of patients recovering from Covid-19 worldwide, it is crucial to identify risk factors associated with potential brain damage. In this context, a history of olfactory dysfunction can be a useful criterion for prioritising deeper follow-up of these patients," it read.

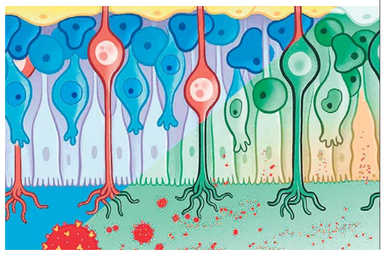

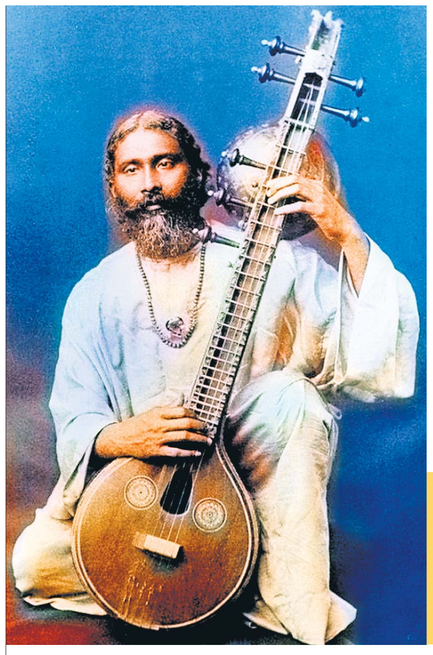

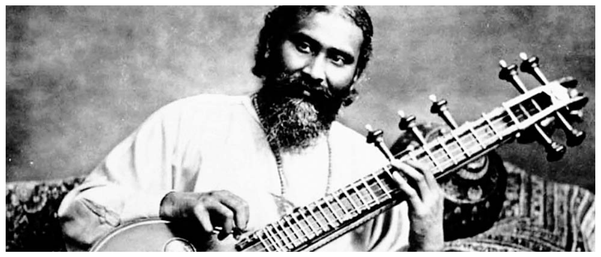

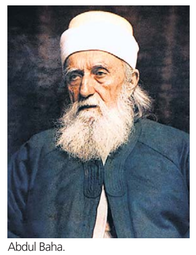

Abdul Baha.

The Sufi Hazrat Inayat Khan

PART:2

Inayat Khan's grandfather, Maula Baksh Sholay Khan was a renowned *Hindustani* musician and Sufi. For sometime, he was a musician in the court of Maharajah Ram Singh II of Jaipur. In his childhood, he had come under the influence of a *Brahmin* in Kerala, who introduced him to Hindu philosophy and teachings, which he incorporated into his own Sufi beliefs.

Maj. Chandrakant Singh VrC *(Retd.)*
Military Historian

Hazrat Inayat Khan, 1882-1927, was the father of Noor Inayat Khan, whose account was carried in Rashtradoot yesterday. He was born in Baroda to a family of hereditary court musicians whose ancestors had come to India from Central Asia, several centuries earlier. They were followers of the *Chishtiya Sufi Order*, whose main shrine is the *Ajmer Dargah*. The *Sufis* are the moderate face of Islam. Though originating in the Middle East, they are persecuted as apostates in their original homelands, and now, the only working centres are in India, mainly in Rajasthan. So, for the discerning readers of Arbit, Rashtradoot, it is appropriate that I begin my account with this Rajasthan connection.

Thanks to the initiative of *HH Maharajah Gaj Singh of Jodhpur* that this connection to India and Rajasthan, in particular, is being highlighted. Some years ago, *Baapji*, as HH Jodhpur is popularly addressed, in partnership with John and Faith Singh, started in Rajasthan, an International Folk Music Festival, which has now branched out to the *World Sufi Music Festival*, which is held every year in February at Nagaur and Jodhpur. This festival has a large international following and is a reminder that India is the last refuge and home of this Islamic tradition, much like it is for the Parsis, the Bahais and Bohras, who too, persecuted in their home countries, have come to India and found a welcoming home.

The Sufis, particularly their music and core beliefs, have been heavily influenced by the older Indian *Vedic* and *Bhakti* traditions, and are now a part of what we call the *Ganga-Jamni Tahzib*. To an optimist like me, it is not impossible to imagine that at some point in the future, this syncretic tradition will also become predominant in the Middle-East, displacing the fundamentalist *Wahabis* in Arabia and hardline *Ayatollahs* of Iran. This is very much possible and will do good to remind ourselves and the world that both, the Wahabis and the Iranian Ayatollahs, have deep rooted connections with India. The founder of the Wahabis was close to Ibn Saud, who, with his help, was able to dominate most of the Arabian peninsula. The Turks, fearful of resurgence of Arab nationalism, used their proxies, the Egyptians, to invade Arabia and many of the Wahabis were forced to flee to India, where they set up seminaries in Deoband and Bareilly.

A descendent of one of them, Shah Abdul Ghani, returned to Arabia, when the Ottoman hold on Arabia weakened and restarted the seminaries that had been shut down by the Turks. The *Saudis* acknowledge this and have helped to set up and patronise thousands of seminaries all over the world as affiliates of the Deoband Seminary. There are 600 Deobandi Seminaries in Britain alone. Another interesting and not often acknowledged fact is that most of the senior leaders of the *Taliban* are students of Deoband.

As for the Ayatollahs, the founder of the present dispensation in Iran is Ruhollah Khomeini, whose grandfather, father, Maula Baksh Sholay Khan was a renowned *Hindustani* musician and Sufi. For sometime, he was a musician in the court of Maharajah Ram Singh II of Jaipur. In his childhood, he had come under the influence of a *Brahmin* in Kerala, who introduced him to Hindu philosophy and teachings, which he incorporated into his own Sufi beliefs.

Inayat Khan was born in Baroda, where his father was a court musician and he, too, served in the Baroda Court. Later, he was to migrate to Mysore and some other princely courts. On the advice of his *music guru*, Inayat Khan travelled to the West in 1910, taking his Sufi and music teachings. His Master said to him, "Go to the Western World, my son, and unite East with West through the magic of your music." Obeying his master's command, Inayat set up the first Sufi centers in the US and Europe. One of his first stops was Moscow, where he composed and choreographed a ballet, *Shankuntala*, based on Kalidas's play. But why Shankuntala? I leave it to one of the greatest founding fathers of the *Age of Enlightenment* in Europe to answer this. Goethe, after studying the play, said, "If Heaven and Earth and everything else were to go by one name, I would name thee 'Shakuntala.'" Goethe understood that Shankuntala was the greatest literary and philosophical work of mankind and its message is as relevant today, as it was two thousand years ago, when it was first written by Kalidas.

In his lectures, he strongly emphasised the fundamental oneness of all religions. He was deeply concerned that many of the western religious traditions had lost knowledge of the 'science of the soul' and the prayer and meditation techniques necessary to develop higher consciousness in mankind. He drew inspiration from an earlier Sufi exponent from Andalusia in Spain, Ibn Arabi, and said, "Beware of confining yourself to a particular belief and denying yourself and denying all else. Be in yourself for all forms of belief, for God is too vast to be restricted to one belief or another."

These and other words of his echo the teachings of another Holy Master, Abdul Baha, the head of the Bahais. We do not know if he ever met Abdul Baha but we do know that he was travelling in the West at the same time as Abdul Baha was, and would definitely have come into contact with other Bahais, and in all, probably discussed matters concerning spirituality with them. Like the *Bahai House of Justice*, Inayat Khan set up centres of Universal Worship to show the people of different cultures the many common elements that they share in their religious traditions, and to create a sense of unity among them to read each other's scriptures and pray each other's prayers.

Putting all the evidence together, I am fully convinced that Inayat Khan was inspired by the teachings of Bahaullah and Abdul Baha, which he incorporated into his version of the Sufi tradition.

In 1914, Inayat Khan met Mahatma Gandhi and had long discussions with him. Finding the Mahatma's views to be in consonance with his own beliefs, he became an ardent admirer of Gandhji, which were transmitted to his own children.

Though Inayat Khan spent much time teaching his version of Sufism, he continued to give concerts, some of which were recorded and are still available. In many of his compositions, which are in Marwari, Gujarati and Braj Bhasa, he has incorporated *bhajans* of Meera Bai and other Hindu saints. He authored several books, including *Music and Spirituality*. His music is available on YouTube.

Although he travelled, India remained his permanent home. He died in 1927, and was buried in a quiet corner of bustling Old Delhi. Musical sessions are held at his graveside, every Friday.

rajeshsharma1049@gmail.com

#RARE PEOPLE

Vilayat Inayat Khan, 1916-2004

Son and spiritual heir of Inayat Khan, continuing his father's legacy became a teacher of meditation and the traditions of the Chishtiya Sufi order. His teachings were derived from the tradition of his father and incorporated elements of Buddhism, Yoga and the Upanishads. He is the founder of the Sufi Order of the West, now named the *Inayati Order*, and is tailored to the needs of Western seekers. Prior to his teaching career, he worked in London as an assistant to Ghulam Mohammed, the Pakistani Finance Minister and Prime Minister, Liaquat Ali Khan. In 1975, he founded the *Abode of the Message*, which serves as the residential community of the Sufi Order International. He died in 2004 at the Sufi centre in Suresnes, France. On his death, the Dalai Lama wrote, "I have much admiration for him. His passing away is a loss to all believers and promoters of spirituality."

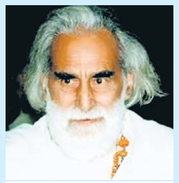

Vilayat Inayat Khan.

Nagaur's *Sufi Festival*.

A still from the Ballet, *Shakuntala*, performed at the Bolshoi Theatre.

#CLIMATE MODELS

A record of the Earth's Temperature

A strong link between carbon dioxide and global temperatures.

Global temperature records go back less than two centuries. But that doesn't mean we have no idea what the world was doing before we started building thermometers. There are various things, tree rings, isotope ratios, and more, that registered temperatures in the past. Using these temperature proxies, we've managed to reconstruct thousands of years of our planet's climate.

But going back further is difficult. Fewer proxies get preserved over longer times, and samples get rarer. By the time we go back past a million years, it's difficult to find enough proxies from around the globe and the same time period to reconstruct a global temperature. There are a few exceptions, like the Paleocene-Eocene Thermal Maximum (PETM), a burst of sudden warming about 55 million years ago, but few events that old are nearly as well understood.

Now, researchers have used a combination of proxy records and climate models to reconstruct the Earth's climate for the last half-billion years, providing a global record of temperatures, stretching all the way back to near the Cambrian explosion of complex life. The record shows that, with one apparent exception, carbon dioxide and global temperatures have been tightly linked, which is somewhat surprising, given the other changes that the Earth has experienced over this time.

Past Climates

The work done here by an international team involves a combination of proxy data and climate models. While there are a number of land-based proxies, they tend to come with very large uncertainties. So, the researchers focused on a single type of proxy, the ratio of oxygen isotopes found in the shells of sea organisms. There are some questions regarding the accuracy of these, as using them requires that the ratio of these isotopes in the oceans has remained constant over time. To compensate for that, the researchers used two methods of converting these proxies into temperatures. One method assumed that oxygen isotope ratios in seawater have remained constant, the second method used a slow, constant change over the time period covered.

Climate models provide a way of converting these proxies, which typically come from a single geographic location, to a global temperature. By using details like the continental configuration and carbon dioxide levels, the models can estimate which reasonable global temperatures are consistent with the proxy data, meaning a specific temperature at a specific location on the globe. The researchers used an ensemble of climate models so that the results weren't dependent on any particular implementation of atmospheric physics.

The results, which the researchers call *PhanDA*, estimate global temperatures over the last 485 million years, going back to the end of the Cambrian, the period that saw the diversification of the major groups of present-day animal life.

So, what does PhanDA look like? One key feature is that it overlaps with the Cenozoic, which started with the mass extinction that ended all non-avian dinosaur lineages. We've got a better history of the Cenozoic climates, so, these provide an important test of whether PhanDA's temperatures match those obtained independently. The consistency between them is an important validation of the new work.

Overall, the researchers find that the global mean temperature has likely varied from a low of about 11° C, seen in the recent glacial periods, up to a high of 36° C, seen about 90 million years ago, though, similar extremes were seen during the PETM. Other major climate events, such as the warming produced in the wake of the eruptions that formed the Siberian Traps, showed up in the record. There are both long periods of warming trends (such as one that covered most of the Mesozoic) alternating with cooling (which has dominated the past 50 million years, the Cenozoic). The researchers suggest that these are driven by the assembly and breakup of supercontinents.

More of this period was spent in warm greenhouse climates (41 per cent of the period) than in icehouse climates (31 per cent). The researchers found that most of the difference between these climates occur in the polar regions. Changes do occur in the tropics, but they're considerably smaller in magnitude. So, during an icehouse period, the difference between equatorial regions and high latitudes is on the order of 30° to 50° C. By contrast, during hothouse periods, the equator-to-pole difference tended to be on the order of 15° to 25° C.

Heating the globe

One thing that is clear from comparing this record with carbon dioxide is that there's a close correlation between the two. There are some exceptions, but the two tend to move in parallel throughout this entire period. The big exception is in the Cretaceous (a period dominated by dinosaurs), which saw a hothouse climate develop, while carbon dioxide levels appeared to remain flat. We've known about this discrepancy for a while but don't have a good explanation for it. The new research doesn't really change that situation.

THE WALL

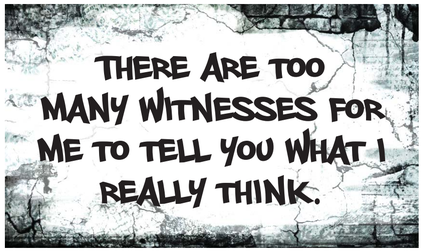

BABY BLUES By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS By Jerry Scott & Jim Borgman

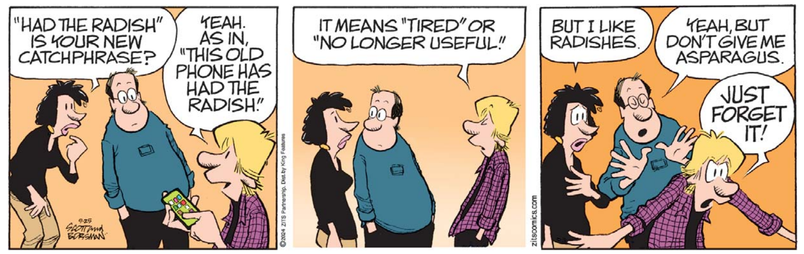

कोटा में करोड़ों रुपए के ऑक्सीजन प्लांट तीन साल में ही ठप हुये

कोटा में मेडिकल कॉलेज के अस्पतालों में 24 में से 20 ऑक्सीजन प्लांट ठप पड़े हुए हैं, सिलेंडर के भरोसे चल रही है व्यवस्थाएं

कोटा, (निसं)। कोविड-19 के दौरान कोटा में ऑक्सीजन की कमी को दूर करने के लिए मेडिकल कॉलेज कोटा के अस्पतालों में एक के बाद एक 24 प्लांट स्थापित किए गए थे। महज 3 सालों के अंतराल में ही हालात ऐसे बन गए हैं कि 20 प्लांट आज बंद की स्थिति में हैं। केवल चार प्लांट से ही ऑक्सीजन की सप्लाई हो रही है। ऐसे में मेडिकल कॉलेज के चारों अस्पताल जेके लोन, एमबीएस, न्यू हॉस्पिटल और सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक में सिलेंडर पर निर्भरता बढ़ गई है, जबकि इन अस्पतालों में लगे प्लांट की क्षमता इतनी है कि जिसे 1500 से ज्यादा सिलेंडर रोज भरे जा सकते हैं। इससे उलट अस्पतालों में रोज 400 से 500 सिलेंडर मंगवाए जा रहे हैं।

कोटा के अस्पतालों में ऑक्सीजन प्लांट बंद होने के चलते सिलेंडर के जरिए काम चलाना पड़ रहा है।

- अधिकांश ऑक्सीजन प्लांट कोटा डेवलपमेंट अथॉरिटी (तत्कालीन यूआईटी) ने तैयार करवाए थे, इसको लेकर केडीए और डीआरडीओ को भी लेटर भेजे गए हैं

अस्पतालों में स्थापित किए गए ऑक्सीजन प्लांट लगाने पर करोड़ों रुपए का खर्चा हुआ है। पीएम केयर फंड के अलावा राज्य सरकार ने भी पैसा लगाया था। स्थाई रूप से इनका उपयोग किए जाने पर लाखों रुपए महीने की बचत की जा सकती है लेकिन इनका रूटीन मेंटेनेंस भी नहीं हुआ। इसी के चलते अधिकांश प्लांट बंद हैं। कुछ तो गारंटी में ही बंद हो गए जिनको लगाने वाली कंपनी ने दुरुस्त नहीं किया है। मेडिकल कॉलेज के नए अस्पताल में पांच प्लांट हैं। इनमें एक लिक्विड ऑक्सीजन का 20 हजार लीटर का प्लांट है। यह प्लांट वर्तमान में काम कर रहा है जबकि चार प्लांट अलग-अलग क्षमता के हैं जिनमें कुल क्षमता करीब 2200 लीटर प्रति मिनट है। इनमें से एक ही प्लांट वर्तमान में काम कर रहा है। ऐसे में अस्पताल में सिलेंडर की निर्भरता बढ़ गई है। अस्पताल को हर दिन 250 से 300 के आसपास ऑक्सीजन सिलेंडर चाहिए। 120 के आसपास सिलेंडर वर्तमान में मंगवाए जा रहे हैं जबकि यह प्लांट चालू होते तो इन्हें मंगवाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसी तरह से एमबीएस अस्पताल में वर्तमान में रोज 150 सिलेंडर मंगवाए जा रहे हैं। इसी तरह से जेके लोन अस्पताल में करीब 100 से 125 के बीच सिलेंडर रोज मंगवाए जा रहे हैं।

दूसरी तरफ सुपर स्पेशियलिटी ब्लॉक (एसएसबी) की बात की जाए तो वहां पर 6 प्लांट अलग-अलग कैपेसिटी के हैं। इनकी कुल क्षमता 3500 लीटर प्रति मिनट की है। इनमें से एक ही प्लांट काम कर रहा है जबकि एक प्लांट ढाई साल से बंद है। शेष तीन प्लांट जनवरी मार्च और जुलाई में बंद हुए हैं। एक प्लांट ठेकेदार ने हैंडओवर नहीं किया है क्योंकि वह ठीक से ऑक्सीजन जेनरेट नहीं कर पा रहा था। अधिकांश ऑक्सीजन प्लांट कोटा डेवलपमेंट अथॉरिटी (तत्कालीन यूआईटी) ने तैयार करवाए थे। इसको लेकर केडीए और डीआरडीओ को भी लेटर भेजे गए हैं।

कोटा मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ.संगीता सक्सेना का कहना है कि चारों मेडिकल अस्पताल के सुपरीटेंडेंट इनकी निगरानी करते हैं। मेडिकल कॉलेज प्रशासन के द्वारा भी समय-समय पर केडीए (तत्कालीन यूआईटी) को इसके विषय पर लिखा जाता रहा है। उनके द्वारा कई बार इंस्टॉलेशन भी कराया गया है। कहीं प्लांट हैंडओवर नहीं हुए हैं वह भी एक समस्या सामने आ रही है। समस्या के समाधान के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल और सरकार लगातार प्रयासरत है।

जेके लोन अस्पताल की अधीक्षक डॉ.निर्मला शर्मा का कहना है कि हमने इन प्लांट को दुरुस्त करने को लेकर केडीए के अधिकारियों को कई बार लिखा है। व्यक्तिगत रूप से जाकर भी मुलाकात की है। वह जयपुर के स्तर से इन्हें दुरुस्त करने की बात कहते हैं। मेडिकल कॉलेज प्रिंसिपल की तरफ से भी पत्र व्यवहार किया गया है। हमने संभाग आयुक्त को भी इस संबंध में जानकारी दी है। डॉ. निर्मला शर्मा का कहना है कि ऑक्सीजन नेसेसरी है और तुरंत हमें लेनी भी आवश्यक है। इसीलिए सिलेंडर से आपूर्ति जारी रखने के लिए आदेश जारी किए गए हैं।

एमबीएस अस्पताल के सुपरिंटेंडेंट डॉ. धर्मराज मीणा का कहना है कि लिक्विड ऑक्सीजन और ऑक्सीजन जनरेशन के प्लांट भी बंद हैं। ऐसे में सिलेंडर के जरिए सप्लाई ली जा रही है। कुछ प्लांट से भी ले रहे हैं। इनको दुरुस्त करवाने को लेकर लगातार प्रयास भी किए जा रहे हैं।

अनियंत्रित कार दूध के टैंकर से टकराई, चार जनों की मौत

कार चालक सहित परिवार में से पिता, पुत्री व पुत्र की मौत हो गई

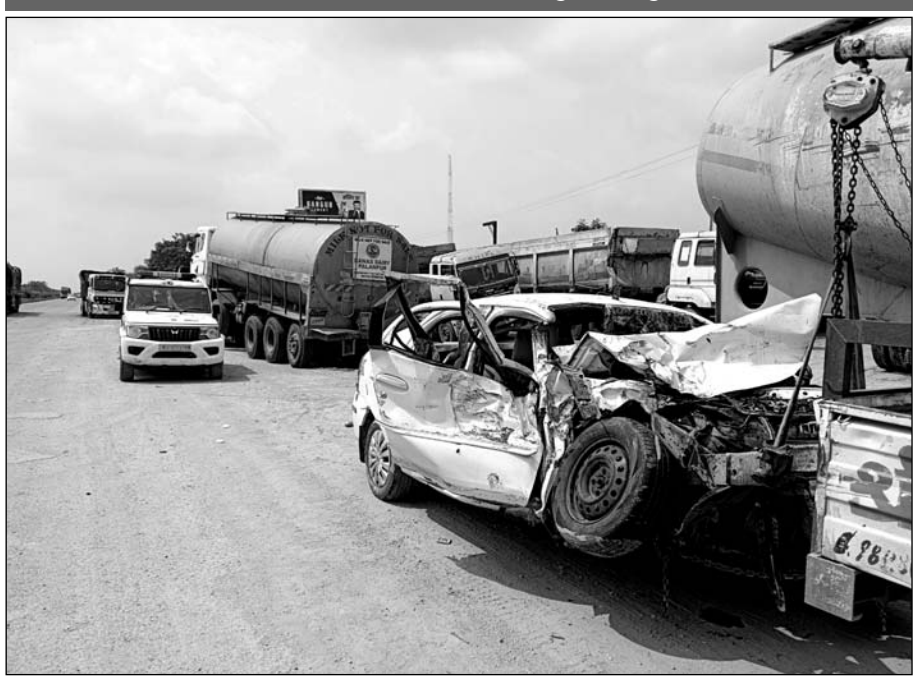

अचानक गलत दिशा से आए टैंकर की टक्कर से कार के परखच्चे उड़ गए।

सावरदा, (निसं)। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-48 पर गिदानी के पास गुरुवार को सुबह दस बजे बाद जयपुर से अजमेर कि ओर जा रहा एक दूध का टैंकर, अचानक अनियंत्रित होकर राजमार्ग के बीचों-बीच बने डिवाईडरों को लांघकर, राजमार्ग के दूसरे छोर पर अजमेर जयपुर मार्ग से गुजर रही एक कार से जा टकराया, जिसके चलते कार चालक सहित कार में सवार परिवार में से पिता पुत्री की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि पुत्र व उसकी मां को गंभीर घायल अवस्था में होने के चलते जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल ले जाया गया।

- कार में सवार परिवार देहरादून से तीर्थराज पुष्कर घूमने आए थे

प्राप्त जानकारी के अनुसार हादसे में गंभीर घायल पुत्र विकास ने भी अस्पताल में दम तोड़ दिया है। कार में सवार परिवार देहरादून से तीर्थराज पुष्कर घुमने आए थे। गुरुवार को वापस जयपुर की तरफ जा रहे थे। अचानक गलत दिशा से आए टैंकर की टक्कर से कार के परखच्चे उड़ गए। कार चालक गौरव (30) तथा कार सवार सहित सत्येन्द्र (62) उनकी पुत्री अंकिता (20) कि मौके पर ही मौत हो गई। जबकि दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल विकास पुत्र सत्येन्द्र गीता देवी पत्नि सत्येन्द्र को जिला अस्पताल में प्राथमिक इलाज के बाद जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल में भर्ती कराया गया है। दुर्घटना की सूचना मिलते ही अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवलाल बैरवा व मौजमाबाद थाना इंचार्ज संजय मीणा मौके पर पहुंचे तथा मौके पर एकत्र ग्रामीणों व अन्य वाहन चालकों की मदद से घायलों को दुर्घटनाग्रस्त कार से बाहर निकालकर अस्पताल भिजवाने के बाद घटना का मौका मुआयना किया।

मिड-डे-मील योजना के तहत कार्यरत 514 कुक कम हेल्परों को मानदेय नहीं मिला

कुक कम हेल्परों को करीब छह माह से मानदेय नहीं दिया जा रहा है, महिलाओं के घर में आर्थिक तंगी छाई

सूरतगढ़, (निसं)। एक तरफ राज्य सरकार सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों को गुणवत्तायुक्त भोजन उपलब्ध करवाने के दावे कर रही है। वहीं सूरतगढ़ ब्लॉक में 293 सरकारी विद्यालयों में मिड-डे-मील योजना के तहत कार्यरत 514 कुक कम हेल्परों को करीब छह माह से मानदेय नहीं दिया जा रहा है। स्कूलों में बच्चों को पोषाहार खिलाने वाली महिलाओं के घर में आर्थिक तंगी की वजह से चूल्हा जलाना मुश्किल हो गया है। इसको लेकर कुक कम हेल्परों में रोष बढ़ता जा रहा है।

ब्लॉक में मिड-डे-मील योजना के तहत 293 सरकारी विद्यालयों में कक्षा प्रथम से लेकर आठवीं तक के 24030 विद्यार्थियों को दोपहर का पोषाहार खिलाया जा रहा है। पोषाहार पकाने के लिए 514 कुक कम हेल्पर कार्यरत है। एक स्कूल में पचास बच्चों पर एक कुक कम हेल्पर है। कुक कम हेल्पर को अप्रैल 2024 से 2143 रुपये प्रति महीना मानदेय मिल रहा है। इसमें केंद्र सरकार की तरफ से 600 रुपये और राज्य सरकार की तरफ से 1,543 रुपये दिए जाते हैं। इस मंहगाई में प्रतिदिन कुक कम हेल्पर का काम करने वाली महिलाओं में विद्यालय की साफ सफाई से लेकर भोजन तैयार करने से लेकर परोसने तक का कार्य करना पड़ता है। इसके बावजूद ब्लॉक में करीब छह माह से इन महिलाओं को मानदेय नहीं मिल रहा। इससे इनके सामने अपने घर का चूल्हा जलाने की समस्या खड़ी हो गई है।

सूरतगढ़ ब्लॉक के कुक कम हेल्परों को मार्च माह के बाद से मानदेय भुगतान नहीं हुआ। अब तक 47.98 लाख रुपए का मानेदय भुगतान बकाया है। इस संबंध में सीबीईओ कार्यालय से जिला मुख्य शिक्षा अधिकारी कार्यालय को 11 सितम्बर को पत्र प्रेषित किया जा चुका है। इससे पूर्व में भी शिक्षक संगठनों की ओर से कई बार शिक्षा अधिकारियों को ज्ञापन दिए जा चुके हैं। इसके बावजूद समस्या का समाधान नहीं हो रहा। जानकारी के अनुसार ई-केवाईसी नहीं होने की वजह से भी पोषाहार पकाने वाली महिलाओं के बैंक खाते में मानदेय नहीं आ रहा। इस समस्या का भी अभी तक समाधान नहीं हो सका है।

पोषाहार पकाने के लिए कुक कम हेल्पर का इंतजाम करना शिक्षकों के लिए टेढ़ी खीर साबित हो रहा है। शिक्षक इस मजबूरी में पोषाहार में कटौती कर कुछ रुपए कुक कम हैल्पर को हर माह अतिरिक्त देते हैं, तब जाकर पोषाहार तैयार होता है। कई स्कूलों में शिक्षक खुद कलेक्शन करके देते हैं। भट्टी के पास तपकर सैकड़ों बच्चों का खाना बनाने वाली कुक कम हेल्पर को मनरेगा श्रमिक से चौथाई मानदेय दिया जाता है। विद्यालय में मिड-डे-मील योजना के तहत पोषाहार का मीनू भी तय है।

कुक कम हेल्पर मीनू, संतोष, सावित्री, ज्योति, लीलादेवी आदि का कहना है कि विद्यालयों में बच्चों के लिए प्रतिदिन भोजन तैयार करते हैं, लेकिन लम्बे समय से मानदेय नहीं मिल रहा। इस संबंध में विद्यालय प्रशासन को कई बार अवगत करवाया जा चुका है। लेकिन मानदेय नहीं मिल रहा। मानदेय के अभाव में घर का चूल्हा जलाना मुश्किल हो रहा है। उधार लेकर काम चलाया जा रहा है। इस समस्या का समाधान शीघ्र होना चाहिए। मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी मधुबाला ने बताया कि ब्लॉक के कुक कम हेल्परों का मानदेय को लेकर समस्या आ रही है। इसके लिए उच्चाधिकारियों को अवगत करवाया जा चुका है। मानेदय संबंधित समस्या का शीघ्र ही समाधान करवाएंगे।

बंदियों को सिम देने के मामले में जेल प्रहरी गिरफ्तार

अजमेर, (कासं)। अजमेर की सबसे सुरक्षित माने जाने वाली हाई सिक्योरिटी जेल के मुख्य जेल प्रहरी को सिविल लाइन थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया है। पुलिस प्रशासन ने आरोपी के गिरफ्तारी की सूचना जेल विभाग के उच्च अधिकारियों को दे दी है। आरोपी द्वारा जेल में बंद विचाराधीन बंदी के भाई से दो सिम मंगवाकर हार्डकोर बंदियों को दी थी। 27 जून को जेल प्रशासन के सर्च ऑपरेशन के दौरान एक की-पेड मोबाइल और सिम बरामद की थी। जेल अधीक्षक पारस जांगिड़ ने सिविल लाइन थाने में मुकदमा दर्ज करवाया था। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

- आरोपी द्वारा जेल में बंद विचाराधीन बंदी के भाई से दो सिम मंगवाकर हार्डकोर बंदियों को दी थी
- 27 जून को जेल प्रशासन के सर्च के दौरान एक की-पेड मोबाइल और सिम बरामद की थी

पुलिस उपाधीक्षक रूद्रप्रकाश शर्मा ने बताया कि 27 जून में हाई सिक्योरिटी जेल में मोबाइल और सिम मिलने के मामले में मुख्य जेल प्रहरी रूपनगर निवासी वीरपाल पुत्र किशन को देर रात गिरफ्तार किया गया है। प्रारंभिक पूछताछ में सामने आया था कि जेल से बरामद सिम केकड़ी निवासी कालूराम के नाम पर थी। पुलिस ने कालूराम को पूछताछ के लिए बुलाया था। पुलिस पूछताछ में उसने बताया कि वह जेल में बंद विचाराधीन बंदी अपने भाई मुकेश से मिलने आया था। इस दौरान उसकी मुलाकात मुख्य जेल प्रहरी वीरपाल से हुई थी। उसने कालूराम से अपने नाम पर दो सिम लाने को कहा था।

पुलिस उपाधीक्षक रूद्र प्रकाश शर्मा ने बताया कि जेल में रेप केस में बंद एक आरोपी के भाई से सिम मंगाई थी। कालूराम से दो सिम लेकर उसे सौंपी थी। वीरपाल ने यह सिम हार्डकोर बंदी सीकर निवासी विक्रम गुर्जर और जयपुर निवासी रोशन पुत्र गोपाल जाट को दी थी। पूर्व में पुलिस ने दोनों हार्डकोर बंदियों को गिरफ्तार किया था। दोनों आरोपियों ने पुलिस पूछताछ में बताया कि जेल प्रहरी वीरपाल ने सिम मुहैया करवाई थी।

सर्च ऑपरेशन में मिला था मोबाइल व सिम :- उल्लेखनीय है कि जेल में सर्च ऑपरेशन के दौरान बैरक नंबर दो में खिड़की के पास रखी एक किताब अंदर एक मोबाइल सिम और चार्जर बरामद हुआ था। उल्लेखनीय है कि विक्रम गुर्जर राजू ठेठ हत्याकांड सहित अन्य मुकदमों में जेल में बंद है। वहीं रोशन पॉस्को सहित अन्य धाराओं के मामलों में जेल में बंद है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने फुटबॉल प्रतियोगिता का उद्घाटन किया

समारोह के दौरान कैबिनेट मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ का माला पहनाकर स्वागत किया।

जयपुर। मां भगवती विद्यापीठ उच्च माध्यमिक विद्यालय, तसीमो (धौलपुर) में आयोजित 14 वर्ष आयु वर्ग की राज्य स्तरीय विद्यालयी फुटबॉल प्रतियोगिता सत्र 2024-25 का उद्घाटन कैबिनेट मंत्री एवं झोटवाड़ा विधायक कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने किया। इस आयोजन में राज्यभर से आए सैकड़ों युवा प्रतिभागियों ने भाग लिया और अपनी फुटबॉल कौशल का प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर कर्नल राज्यवर्धन राठौड़ ने कहा कि खेल न केवल शारीरिक विकास का साधन है, बल्कि मानसिक शक्ति और अनुशासन का प्रतीक भी है। प्रतियोगिताएं हमारे युवाओं को सही दिशा में प्रेरित करती हैं और उनके व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने खिलाड़ियों को मेहनत, अनुशासन, और समर्पण के महत्व पर जोर दिया और उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं। कर्नल राठौड़ ने भविष्य में ऐसे और भी बड़े आयोजनों की योजना पर जोर देते हुए कहा कि हमें 2036 ओलंपिक तक की तैयारी करनी है।

- 2036 ओलंपिक के लिए तैयारी करनी हैः कर्नल राज्यवर्धन

इस अवसर पर कर्नल राज्यवर्धन ने मैदान में जाकर खिलाड़ियों से मुलाकात की, उन्हें उत्साहित करते हुए कहा, कि प्रतिस्पर्धा में हार या जीत से ज्यादा महत्वपूर्ण खेल में पूर्ण मनोयोग से भाग लेना होता है।

उन्होंने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में खिलाड़ियों को अब विश्वस्तरीय सुविधाएं और संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। चाहे ओलंपिक प्रतियोगिता हो या एशीयन गेम्स, भारत के खिलाड़ी अब विश्व पटल पर भारत का गौरव बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य की भाजपा सरकार भी खिलाड़ियों के विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है, जिससे भारत की युवा शक्ति खेलों में नया आयाम स्थापित कर सके।

आनंदपाल गैंग का गुर्गा आजाद सिंह प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार

कड़े सुरक्षा बंदोबस्त के बीच पुलिस आरोपी को अस्पताल से लेकर गई।

अजमेर, (कासं)। सिविल लाइन थाना पुलिस ने कुख्यात आनंदपाल गैंग के गुर्गे आजाद सिंह को गुरुवार को प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया है। नागौर जिले के लाडनूं निवासी आजाद सिंह अजमेर की हाई सिक्योरिटी जेल में बंद है। 3 सितंबर 2022 को जेल में तलाशी के दौरान आजाद जिस बैरक में बंद था, उसमें से मोबाइल फोन बरामद हुआ था, जिसके बाद जेल प्रशासन ने सिविल लाइन थाने में उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। इस मामले में पुलिस ने अब उसे हिरासत में लिया है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

- जेल में तलाशी के दौरान आजाद सिंह के बैरक से मोबाइल मिला था

सिविल लाइन थाना पुलिस आरोपी आजाद सिंह की गिरफ्तारी के बाद उसे गुरुवार को भारी सुरक्षा के बीच जवाहर लाल नेहरु अस्पताल लाया गया, जहां उसका स्वास्थ्य परीक्षण हुआ। पुलिस मामले की जांच कर रही है और आजाद सिंह पर पहले से ही कई संगीन धाराओं में मुकदमे दर्ज हैं।

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों आजाद सिंह को एक अन्य मामले में डीडवाना कोर्ट में पेश किया गया था। बहुचर्चित इन्द्रचंद अपहरण मामले में हुई उसकी पेशी हुई थी, जहां उसके साथ अन्य आरोपी कुलदीप सिंह, गुलजारी और देवेंद्र सिंह को भी पेश किया गया था। हालांकि इस पेशी में मुख्य गवाह इन्द्रचंद कोर्ट में उपस्थित नहीं हो सका, जिसके चलते कोर्ट ने उसके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया है। पेशी के बाद सभी आरोपियों को वापस अजमेर हाई सिक्योरिटी जेल भेज दिया गया था।

मोटर बाइक से लद्दाख एडवेंचर पर निकले दो सीनियर सिटीजन का सम्मान

सेवानिवृत संजथ सिंह सैंगर और बृजमोहन खत्री सड़क मार्ग से लद्दाख तक आने-जाने की एडवेंचर यात्रा दो सप्ताह में पूरी करेंगे

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर से लद्दाख तक सड़क से एडवेंचर यात्रा करने के लिए मोटर बाइक पर दो सीनियर सिटीजन बुलंद हौसले के साथ बीकानेर से रवाना हुए। साठ वर्ष से अधिक उम्र के बाद दो मित्रों ने दो सप्ताह में ही दुर्गम पहाड़ों घाटियों को मोटर बाइक से एडवेंचर टूर को करने के जज्बे को सलाम करने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा उनका सम्मान कर रवाना किया गया।

जोधपुर प्रांत खेलो भारत प्रांत संयोजक हिमांशु सारस्वत ने बताया कि बीकानेर से दो सीनियर सिटीजन जिला शिक्षा अधिकारी से सेवानिवृत संजथ सिंह सैंगर और प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त बृजमोहन खत्री सड़क मार्ग से लद्दाख तक आने जाने की एडवेंचर यात्रा दो सप्ताह में पूरी करेंगे। दोनों सीनियर सिटीजन विद्यार्थी काल में एबीवीपी के कार्यकर्ता रहे हैं इसीलिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद बीकानेर महानगर की ओर से उनकी इस प्रेरणादायी एडवेंचर यात्रा की सफलता की कामना के साथ उनका तुलसी सर्कल बीकानेर में माल्यार्पण कर भव्य स्वागत किया गया तथा एबीवीपी ध्वज केसरिया झंडी दिखाकर रवाना किया गया।

मोटर बाइक से लद्दाख एडवेंचर पर निकले दो सीनियर सिटीजन का एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने सम्मान कर रवाना किया।

बीकानेर महानगर मंत्री रामनिवास बिश्नोई ने बताया कि माल्यार्पण एवं अभिनंदन कार्यक्रम में अभाविप खेलो भारत प्रांत संयोजक हिमांशु सारस्वत, बीकानेर महानगर खेलो भारत संयोजिका पूजा पडिहार, जिला संयोजक पुनित शर्मा, नगर मंत्री मोहित सिंह, कार्यालय मंत्री वेदांत शुक्ला, अभिलाष मेघवाल, छात्र कल्याण संघर्ष समिति के धनंजय सारस्वत, एनसपी कॉलेज छात्र संघ महासचिव राजेश साध, पूर्व महासचिव शबाना बानो, तनवीर भाटी, स्वरुप सिंह सोलंकी, राजकीय डूंगर कॉलेज के मनसुख डूडी व राजेश प्रजापत, रामपुरिया जैन कॉलेज से विक्रांत सिंह व नंदकिशोर, एमजीएस युनिवर्सिटी से पंकज शर्मा व हेमन्त कुमार, जैन कॉलेज के हिमांशु डांगी व प्रधुम्न सिंह, नेहरू शारदापीठ पीजी महाविद्यालय से सुरेश स्वामी व विशाल सिंह भाटी सहित बड़ी संख्या में छात्र नेता मौजूद रहे।

संक्षिप्त

43 उपभोक्ताओं के अवैध कनेक्शन काटे

निवाई, (निसं)। विद्युत विभाग के तत्वावधान में बकाया बिलों की वसूली के लिए अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान 2 लाख 75 हजार रूपए की वसूली की गई व 43 उपभोक्ताओं के विद्युत कनेक्शन काटे गए। विभाग के कनिष्ट अभियंता लक्की गोठवाल ने बताया कि गुरूवार को शहर सहित गांव झिलाय में बिल वसूली के दौरान 90 उष्भोक्ताओं से 2 लाख 75 हजार रूपए की वसूली की गई। उन्होंने बताया कि करीब 43 उपभोक्ताओं पर 1 लाख 60 हजार रूपए की बकाया राशि जमा नही करवाने पर उनके विद्युत कनेक्शन विच्छेद किए गए।

मलखम्ब में राहोली रही चैम्पियन

निवाई, (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयढाणी जुगलपुरा में आयोजित जिला स्तरीय तीरंदाजी व मलखम्ब प्रतियोगिता का रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ समारोह पूर्वक समापन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सेवानिवृत उपनिदेशक प्रारंभिक शिक्षा चन्दनमल खंगार, प्रधानाचार्या व प्रतियोगिता संयोजक अनिता जैन, जिला शिक्षा प्रतिनिधि देवेन्द्रकुमार जैन व प्रधानाचार्या लक्ष्मी शर्मा ने मां शारदे के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित करके किया। प्रधानाचार्या व प्रतियोगिता संयोजक अनिता जैन ने बताया कि तीरंदाजी 17 वर्ष में विशाल टेपण, अनिरूद्रसिंह, शाम्भवी, शताक्षी सिंह वनस्थली व अंकिता चौधरी मालपुरा विजेता रही। इसी प्रकार मलखम्ब में ऑल ऑवर राहोली चैम्पियन रही तथा द्वितीय स्थान पर वनस्थली विद्यापीठ की छात्राए रही।

बस अण्नियंत्रित होकर खाई में गिरी

निवाई/गुंसी, (निसं)। राष्ट्रीय राजमार्ग 52 पर गुंसी के समीप गुरुवार सुबह करीब 9:15 बजे सवारियों से भरी एक निजी बस अनियंत्रित होकर सड़क किनारे गहरी खाई में चली गई। इस दुर्घटना में बस में सवार सभी यात्री बाल बाल बच गए। राजस्थान लोक परिवहन की बस जयपुर से कोटा की ओर जा रही थी। सुबह सवा नो बजे इस बस के आगे चल रहे एक अन्य वाहन ने गायों के झुंड को बचाने के प्रयास में अचानक ब्रेक लगा दिए। जिस पर बस के चालक ने भी ब्रेक लगाए तो बस अनियंत्रित होकर आगे के वाहन से टकराती हुई सड़क किनारे खाई में चली गई। सूचना पर सदर पुलिस एएसआई मुकेश चौधरी घटनास्थल पर पहुंचे और यात्रियों को अन्य बस में बैठाकर रवाना किया।

भाजपा एससी मोर्चा अध्यक्ष ने पद से दिया इस्तीफा

मालपुरा (निस) भारतीय जनता पार्टी एससी मोर्चा मालपुरा के अध्यक्ष लक्ष्मण पेन्टर ने गुरूवार को मंडल अध्यक्ष त्रिलोक चन्द जैन को अपना ईस्तीफा सौंपते हुये अवगत करवाया कि उनके द्वारा अतिक्रमणो व फर्जी पट्टो की बार-बार शिकायत करने यहां तक की केबिनेट मंत्री व विधायक कन्हैयालाल चौधरी सहित जिला पदाधिकारियो को सरकार मे होते हुये पार्टी पदाधिकारियो की शिकायतो का निराकरण नही होने के साथ-साथ एससी वर्ग की अनदेखी से वो कुण्ठित है। संगठन व क्षैत्र मे उनकी प्रतिष्ठा धुमिल हो रही है। केन्द्र से लेकर राज्य के साथ-साथ मालपुरा तक भाजपा जनप्रतिनिधियों की कडी से कडी जुडने के बावजूद भाजपा पार्टी पदाधिकारियो की अनदेखी होने से कुण्ठित होकर उन्है अपने पद से ईस्तीफा दिया है।

लोहरवाडा प्रधानाचार्य हुई निलंबित

पीपलू, (निसं)। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लोहरवाडा की प्रधानाचार्य दीपिका भार्गव को राजकार्य में लापरवाही एवं लोकसेवक के आचरण के विपरित व्यवहार करने के कारण जिला कलेक्टर डॉ. सौम्या झा ने राजस्थान सिविल सेवा वर्गीकरण नियंत्रण एवं अपील नियम 1958 के नियम के अंतर्गत निलंबित किया है। साथ ही भार्गव को निलंबन काल में मुख्यालय कार्यालय मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी समग्र शिक्षा टोंक में उपस्थिति देने के आदेश दिए है।

स्वास्थ्य विभाग ने की कार्रवाई

टोंक, (निसं)। आमजन को शुद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने एवं शुद्ध आहार-मिलावट पर वार अभियान के तहत गुरुवार को जिले के देवली उपखंड में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने कार्यवाही की।

राजगढ़ चिकित्सालय को उप जिला अस्पताल बनाने की मांग रखी

राजगढ़, (निसं)। राजगढ़ के चिकित्सालय में मुख्यमंत्री निशुल्क दवा एवं जांच योजना का गुरुवार को योजना के स्टेट नोडल अधिकारी रामबाबू जायसवाल ने निरीक्षण कर चिकित्सा प्रभारी डॉ रमेश मीणा को दिशा निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार की योजनाओं का अधिक से अधिक मरीजों को लाभ मिले इसकी पुख्ता व्यवस्था हो। उन्होंने आमजन के लिए दवा एवं जांच योजना को प्रभावी ढंग से लागू करने के निर्देश दिया। इस अवसर पर उन्होंने भंडार मैं दवाइयों की स्थिति, उपलब्ध दवाइयों का स्टॉक, एवं दवा वितरण केंद्रों की स्थिति के बारे में समीक्षा की। चिकित्सालय में कार्यरत चिकित्सकों से भी निशुल्क दवा एवं जांच योजना के बारे में जानकारी की। नोडल अधिकारी ने राजगढ़ चिकित्सालय में तीन और दवा वितरण केंद्र खोलने एवं एक कंप्यूटर देने के निर्देश दिए। इस अवसर पर यदुवीर सिंह डायरेक्टर जॉन, ब्लॉक सीएमएचओ विशाल सिद्ध, चिकित्सा प्रभारी डॉक्टर रमेश मीणा एवं अन्य चिकित्सक, पैरामेडिकल स्टाफ व अन्य कर्मचारी

राजगढ़ चिकित्सालय में राजस्थान राजस्व विभाग के विशेष सचिव नरेंद्र गुप्ता ने मरीजों से जानकारी ली।

मौजूद रहे। इधर विशेष सचिव नरेंद्र गुप्ता राजस्व विभाग राजस्थान में गुरुवार को राजगढ़ चिकित्सालय का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायज लिया। मुल्तानी वार्ड में भर्ती मरीजों से रोगों की स्थिति एवं कुशलता की जानकारी ली। उन्होंने निशुल्क दवा एवं जांच योजना के बारे में भी मरीजों से जानकारी की।चिकित्सालय में उपलब्ध बेडो की स्थिति, एवं सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। प्रभारी मैं राजगढ़ चिकित्सालय को उप जिला अस्पताल बनाने की मांग रखी। इस पर विशेष सचिव ने इस बात को आगे पहुंचाने का आश्वासन दिया। उन्होंने महिला चिकित्सालय में भर्ती गर्भवती महिलाओं से भी जानकारी ली। इस अवसर पर उपखंड अधिकारी सीमा खेतान, नायब तहसीलदार छोटे लाल मीणा, ब्लॉक सीएमएचओ विशाल सिद्ध, जितेंद्र पाल, एवं अन्य चिकित्साकर्मी व पैरामेडिकल स्टाफ मौजूद रहा।

- **राजगढ़ चिकित्सालय में नोडल अधिकारी रामबाबू जायसवाल ने निरीक्षण कर चिकित्सा प्रभारी डॉ. रमेश मीणा को दिशा निर्देश दिए**
- **'सरकारी योजनाओं का लाभ मरीजों को मिले, इसके लिए पुख्ता व्यवस्था हो'**

मोहित कुमार जाट प्रथम रहे

श्रीमाधोपुर, (निसं)। कस्बे के एसबीएन पीजी महाविद्यालय में स्वच्छता पखवाड़े के तहत नगर पालिका श्रीमाधोपुर व एनएसएस के संयुक्त तत्वाधान में स्वच्छता क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़कर इसमें हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों से स्वच्छता संबंधित कई सवाल पूछे गए व इसका उत्तर विद्यार्थियों द्वारा दिया गया इस अवसर पर नगर पालिका एसबीएम अभियंता गणेश नारायण शर्मा ने विद्यार्थियों को बताया कि हम सबका दायित्व है कि स्वच्छता की शुरुआत हम अपने घर व मोहल्ले से करें व अपने आसपास के परिसर को स्वच्छ सुंदर बनाने में अपना योगदान दे । क्विज प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को स्वच्छता संबंधित जानकारी देना था। क्विज प्रतियोगिता में मोहित कुमार जाट ने प्रथम स्थान, रेखा सैनी ने द्वितीय व तृतीय स्थान आकाश कुमार गोडवाल ने प्राप्त किया ।

मिलावट के विरुद्ध खानापूर्ति भरी कार्रवाई कर डाली अधिकारियों ने

देवली, (निसं)। सीजन त्योहारों के चलते सरकार द्वारा समय-समय पर शुद्ध के लिए युद्ध अभियान चलाया जाता है। लेकिन इसी अभियान के तहत मिलावट के विरुद्ध किए जाने वाली कार्रवाई नाम मात्र की दिखाई पड़ती है।

इसीलिए आमजन को मिलावट खोर और अधिकारियों के बीच मिली भगत की आशंकाएं व्याप्त होती है। इसलिए की जब क्षेत्र में मिलावट का गोरख धंधा पनप रहा हो ।और इसके बीच मात्र एक दो मिलावट खोर व्यापारियों की यहां महज खाना पूर्ति भरी कार्रवाई हो कर रह जाए। तो खाद्य पदार्थ में मिलावट के गोरख धंधे पर अंकुश कैसे लग पाएगा। गुरुवार की शाम को यहां खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने शहर के गणेश रोड स्थित संचालित दो दूध डेयरी पर से मात्र घी के सैंपल लेकर कार्रवाई के नाम पर इतिश्री कर डाली।

खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने गणेश रोड स्थित संचालित दो दूध डेयरी पर से मात्र घी के सैंपल लेकर कार्रवाई के नाम पर इतिश्री कर डाली।

जबकि इन डेयरियों पर दूध दही छाछ मावा पनीर सहित कई खाद्य पदार्थ बेचे जाते हैं । ऐसे में मात्र धी की जांच की कार्रवाई करना आमजन को कितनी राहत पहुंचा सकेगा। यह कहे कि यह कार्रवाई आमजन के लिए कितनी उचित साबित होगी। इन दूध डेयरियों पर बिकने वाले सभी खाद्य पदार्थ की जांच करना या सैंपल लेना खाद्य सुरक्षा अधिकारी क्यों उचित नहीं समझ रहे हैं। जबकि आमजन को शुद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से विभाग विशेष अभियान चला कर मिलावट के विरुद्ध करवाई तो करता है लेकिन आमजन को मिलावट से फोरी फौरी राहत ही मिल पाती है। इसलिए की एक आध खाद्य पदार्थ के सैंपल लेकर विभागीय अधिकारी कार्रवाई के नाम इति श्री कर डालते हैं।

- **क्षेत्र में दर्जनों दूध डेयरिया संचालित खाद्य सुरक्षा अधिकारियों ने मात्र दो डेयरी से लिए घी के नमूने**

मांगों का शीघ्र समाधान किये जाने की मांग, कलेक्ट्रेट के बाहर प्रदर्शन

दौसा, (निसं)। अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ ज़िला शाखा दौसा के जिला अध्यक्ष ओमप्रकाश शर्मा के नेतृत्व में महासंघ के पदाधिकारियों ने गुरुवार को मुख्य सचिव, राजस्थान सरकार के नाम एक ज्ञापन जिला कलेक्टर दौसा को सौंपकर

- **मुख्य सचिव, व मुख्यमंत्री के नाम का ज्ञापन कलेक्टर को सौंपा**

महासंघ के पदाधिकारियों ने दौसा कलेक्टर को ज्ञापन दिया।

कर्मचारियों की विभन्न मांगों को तत्काल समाधान किये जाने की मांग की है। इधर ज्ञापन देने से पूर्व महासंघ के पदाधिकारियों ने कलेक्ट्रेट के बाहर जमकर प्रदर्शन किया तथा मांगों के समर्थन में धरना दिया।

संयुक्त महासंघ ज़िला मंत्री मुकेश चन्द मीना ने बताया कि महासंघ द्वारा दिये गये ज्ञापन में पीएफआरडीए अधिनियम को निरस्त करते हुए राज्य कर्मचारियों के 41 हजार करोड रुपए जीपीएफ खाते में जमा कराने, राजस्थान में परिभाषित पुरानी पेंशन योजना जारी रखी रखनेख् कर्मचारियों की वेतन विसंगति दूर कर वर्ष 2013 की अनुसूची 5 के अनुसार सातवें वेतन आयोग में वेतन निर्धारण किये जाने, आठवां वेतन आयोग का अभिलंब गठन किये जाने, प्रत्येक 5 वर्ष की अवधि में एक बार वेतन संशोधन लागू करने, 3, 9, 18 एवं 27 वर्ष की सेवा पर मुख्यमंत्री की बजट घोषणा संख्या 155 के अनुसार एसीपी के स्थान पर 7, 14, 21 एवं 28 वर्ष की सेवा पर पदोन्नित पद का वेतनमान स्वीकृत किये जाने, विभिन्न कर्मचारी संगठनों से सरकार द्वारा किए गए समझौता एवं सहमतियों को लागू किये जाने, जनवरी 2019 से जून 2021 तक का महंगाई भत्ते के एरिया का नगद भुगतान किये जाने, सहायक कर्मचारी को एमटीएस घोषित किये जाने, अध्यापकों के स्थानांतरण किये जाने, सभी कार्मिकों के लिए पारदर्शी स्थानांतरण नीति लागू किये जाने, ठाामीण क्षेत्र में कार्यरत कार्मिकों को ठाामीण भत्ता स्वीकृत किये जाने, 9 संविदा पर लगे हुए कर्मचारियों को नियमित किये जाने, प्रदेश के मंत्रालय कर्मचारियों को शासन सचिवालय के समान वेतन भत्ते स्वीकृत किये जाने, प्रदेश के विभिन्न विभागों पंचायत राज संस्थाओं एवं निगम बोर्ड के हजारों कर्मचारियों अधिकारियों की समय बाद पदोन्नित के लिए कार्मिक विभाग द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न विभागों के विभाग अध्यक्षों व सक्षम अधिकारियों को निर्देश प्रदान किये जाने सहित अन्य मागें शामिल है।

रक्तचाप, शुगर की हुई जांच

श्रीमाधोपुर, (निसं)। नगरपालिका श्रीमाधोपुर द्वारा "स्वच्छता ही सेवा पखवाडा" अभियान के तहत नगरपालिका परिसर में सफाई मित्र सुरक्षा शिविर का आयोजन गुरुवार को किया गया। पालिका में आयोजित शिविर में पालिका के समस्त कर्मचारियों ने भाग लिया। शिविर के दौरान चिकित्सकों की टीम द्वारा समस्त पालिका कर्मचारियो का शारीरिक परीक्षण किया गया। नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी छगनलाल यादव ने बताया कि इस शिविर का उदेश्य सफाई कर्मचारियों के स्वास्थय की सुरक्षा और स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाना है एवं पालिका के सफाई कर्मचारियों के स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना और कार्यस्थल पर सुरक्षा सुनिश्चित करना था। नगरपालिका के कार्यवाहक सफाई निरिक्षक शशीकान्त शर्मा ने कर्मचारियों को स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के लिये जागरूक किया एवं कार्यस्थल पर सावधानियां बरतने, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण का सही तरीके से उपयोग करने के लिये प्रेरित किया।

असामाजिक तत्वों ने तोड़ी तालाब की चादर, डेढ महीने से व्यर्थ बह रहा है पानी

मालपुरा, (निसं)। एक और जहां जल संसाधन विभाग टोंक के द्वरा राज्य सरकार के निर्देशों पर इस बार सभी

- **लगातार तालाब का पानी निकलने के बावजूद प्रशासन बेखबर**
- **चादर मरम्मत के लिये बजट का इंतजार, लेकिन ठेकेदारों को कर रहै हैं लाखों का भुगतान**

मालपुरा में प्रशासनिक अधिकारियों की लापरवाही अनदेखी से तालाब का हजारो लीटर पानी व्यर्थ मे बह जाने व तालाब खाली होने जैसा मामला आया सामने।

जलाशय भर जाने व अच्छी बारिश होने पर राजस्थान जल महोत्सव मनाया जा रहा है। तो वही मालपुरा में प्रशासनिक अधिकारियों की लापरवाही अनदेखी से तालाब का हजारो लीटर पानी व्यर्थ मे बह जाने व तालाब खाली होने जैसा मामला आया सामने। मालपुरा शहर के अतिप्राचीन व एक मात्र प्रमुख जलाशय बम्ब तालाब की चादर को असामाजिक तत्वों द्वारा तोड देने से बीते डेढ महीने से तालाब से लगातार निकल रहा है पानी। लेकिन प्रशासन जानकर भी बना बैठा है अनजान। तो कार्यालय से ठेकेदारो को लाखो रूपयो का भुगतान होने के बावजूद एक कट्टा सिमेंट के लिये प्रशासन व पालिका कर रही है बजट का इंतजार। मालपुरा उपखण्ड क्षैत्र मे गत माह हुई भारी बारिश के बाद 6 अगस्त को बम्ब तालाब ऑवरफ्लो हो जाने से तालाब की चादर चलना शुरू हुई थी।

रूक-रूक कर लगातार बारिश होने से तालाब मे पानी आने का क्रम जारी रहा। ऐसे मे असामाजिक तत्वो द्वारा तकरीबन 18 अगस्त को तालाब की चादर के बडे भाग को तोड़ देने के साथ ही तालाब से तेज गति से शुरू हुआ पानी निकलने का क्रम आज भी जारी है। प्रशासन को बार-बार सोशल मिडिया के माध्यम से अवगत करवाने के बावजूद ना तो पालिका और ना ही उपखण्ड प्रशासन ने तालाब की टूटी चादर को दुरस्थ करवाना मुनासिब नही समझा। प्रशासन की लापरवाही को लेकर पालिका कार्यालय मे सम्पर्क साधा गया तो संविदा पर कार्यरत कार्मिको ने बताया कि पालिका कोष मे बजट नही है।

लम्बे समय से बजट नही मिलने से कई महत्वपूर्ण काम अटके हुये है। जनवरी 2024 से पालिका ईओ का पद भी रिक्त चल रहा है। लेखाधिकारी जैसा महत्वपूर्ण पद वैकल्पिक व्यवस्था से चल रहा है। तो ईओ का अतिरिक्त चार्ज तहसीलदार राहुल पारीक देख रहै है। लेकिन बजट आने के बाद ही चादर की मरम्मत संभव है। कार्मिक ने नाम नही छापने की शर्त पर बताया गया है। गत माह लाखो रूपयो का बजट तो आया था लेकिन ठेकेदारो को भुगतान कर दिया गया। ऐसे मे प्रश्न यह उठता है कि चादर की मरम्मत करवाने मे महज एक कट्टा सिमेन्ट का खरीदने के लिये पालिका के पास बजट का अभाव है। तो फिर ठेकेदारो को किस कोष से किया जा रहा है लाखो रूपयो का भुगतान। इसका जवाब तो कोई स्थाई अधिकारी दे सकता है।

कलेक्टर ने जलभराव का किया निरीक्षण

पीपलू, (निसं)। जिला कलेक्टर डॉ. सौम्या झा ने ग्राम पंचायत रानोली में आयोजित चौपाल में ग्रामीणों की पेयजल, विद्युत, सड़क एवं चिकित्सा संबंधी समस्याओं को लेकर अधिकारियों को समाधान के निर्देश दिए है। साथ ही सरकारी कार्मिकों को कार्यालय में समय पर उपस्थिति होने, अपने दायित्व का जिम्मेदारी से निर्वहन करने की सख्त हिदायत दी। जनसुनवाई से पूर्व जिला कलेक्टर ने रानोली के मुख्य बाजार में जलभराव के कारण जमा कीचड से लोगों को हो रही परेशानी का मौके पर जाकर निरीक्षण किया।

विकास अधिकारी राजेश्वरी यादव को 2 दिन में समस्या का स्थाई समाधान करने के निर्देश दिए। राजकीय पशु चिकित्सालय, सामुदायिक शौचालय एवं निर्माणाधीन सामुदायिक भवन का निरीक्षण किया। वहीं टोंक से फागी वाया पीपलू, रानोली-कठमाणा स्टेट हाईवे पर जगह-जगह हो रखे गहरे गढ्ढों पर नाराजगी जताते हुए सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों को सड़क की मरम्मत तीन दिन में कराए जाने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने एडीएम दुर्गाशंकर मीणा, कार्यवाहक उपखंड अधिकारी अनीता खटीक, तहसीलदार इंद्रजीत सिंह चौहान सहित जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को ग्रामीणों की समस्याओं का तत्परता से निदान किए जाने के लिए निर्देशित किया। जनसुनवाई में सरपंच ममता सैनी, ग्राम विकास अधिकारी मुकेशकुमार गुर्जर सहित कई कर्मचारी मौजूद रहे।

- **जिला कलेक्टर डॉ. सौम्या झा ने सरकारी कार्मिकों को कार्यालय में समय पर उपस्थिति होने, अपने दायित्व का जिम्मेदारी से निर्वहन करने की सख्त हिदायत दी**

सार-समाचार

'पॉलिथीन पर्यावरण के लिए खतरा'

सांभरझील, (निसं)। प्लास्टिक और पॉलिथीन का उपयोग पर्यावरण और मानव जाति के लिए सबसे बड़ा खतरा है। जनहित में इसका उपयोग बंद करना चाहिए। यह विचार नगर पालिका के अधिशाषी अधिकारी शिवेश कांकरिया ने स्वच्छ भारत मिशन के तहत आयोजित कार्यक्रम के दौरान व्यक्त किये। इस मौके पर जागरूकता पैदा करने के लिए सांभर की अनेक सरकारी स्कूलों में स्वच्छता प्रन्नोत्तरी व निबन्ध प्रतियोगिता के साथ-साथ चित्र प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया। सर्वश्रेष्ठ रचना पर बच्चों को मौके पर ही पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान स्वच्छता शपथ में लगभग 350 विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा स्वच्छता ऐप, कचरा पृथक्करण, गीले कचरे के लिये हरा व सूखे कचरे के लिये नीला कचरा पात्र का उपयोग करने का संदेश दिया। इसके अलावा पॉलीथीन का पूर्णतया उपयोग बन्द कर इको-फ्रेंडली बैग का उपयोग करने का अनुरोध किया। कार्यक्रम के दौरान नगरपालिका के एम.आई.एस ईन्जीनियर राज कुमार कुमावत, कार्यावाहक सफाई निरीक्षक आशिष जेदिया, कनिष्ठ ऑपरेटर भीवाराम कुमावत, राजकीय दरबार स्कुल के नेमीचन्द कुमावत, गजानन्द कुमावत, कमलेश कुमावत, राजारात गोदारा, शिवकरण जाट, जितेन्द्र वर्मा, पुष्कर सैनी, दिप्ती सोलंकी, मोहन लाल, शंकरलाल मीणा, शंकर लाल रैगर, लक्ष्मी वाष्र्णेय, पंकज शर्मा सहित स्वच्छ भारत मिशन के ब्रांड एंबेसडर नरेश पाल गुर्जर की भी मौजूदगी रही।

हनुमान ध्वजा स्थापित की

अलवर, (निसं)। शिवाजी पार्क रामलीला मैदान में रामलीला महोत्सव के लिए तैयार हुए रंगमंच पर आज शाम पूजा अर्चना के साथ हनुमान ध्वजा स्थापित की गई। गौ सेवक भानु प्रताप शर्मा ने मंच पर हनुमान ध्वजा का पूजन कर उसे समर्पित किया। युवराज प्रताप रामलीला ट्रस्ट के अध्यक्ष श्याम शर्मा ने बताया कि शुक्रवार 27सितंबर से इस रंग मंच पर रामलीला का मंचन शुरू होगा। रामलीला परिवार के प्रवक्ता शिवचरण कमल ने बताया कि शुक्रवार रात आठ बजे भगवान श्री गणेश की आरती के साथ रामलीला का उदघाटन किया जाएगा। उदघाटन समारोह के मुख्य अतिथि भाजपा के जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता होंगे। इस मौके पर रामलीला के कथा व्यास पंडित गौरी शंकर पाराशर वेद मंत्रों के द्वारा गणेश जी महाराज का आव्हान करेगें।रामलीला में संगीत निर्देशक बृज कोकिला के नाम से मशहूर जितेंद्र गोप होंगे। साज सज्जा निर्देशक सतीश शर्मा और राहुल पाराशर होंगे।इस अवसर पर श्री गणेश जी महाराज की विशेष झांकी प्रस्तुत की जाएगी।रामलीला के लिए विशाल रंगमंच बनाया गया है। वाटर प्रूफ मंच के साथ ही रामलीला में रोल करने वाले कलाकारों के लिए भी वाटर प्रूफ ग्रीन रूम बनाया गया। रामलीला के निर्देशक महेंद्र शर्मा ने बताया कि गणेश पूजन के बाद नारद मोह की लीला का मंचन किया जाएगा।लीला में मुनि नारद जी श्री हरि विष्णु को पृथ्वी पर मानवावतार का श्राप देंगे। इस कारण त्रेता युग में भगवान श्री विष्णु ने रामजी के रूप में अवतार लेकर पृथ्वी को राक्षसों से मुक्त किया था। आज शाम रंग मंच पर ध्वजा स्थापित समारोह में सुरेश तिवाड़ी, जयप्रकाश गौतम, सुभाष स्वामी, समीर तिवाड़ी, दीपक खंडेलवाल, बाबूलाल सैनी,संजय जैन, अशोक अवस्थी, गोविन्द सैनी, बुद्ध सिंह, मंगतूराम जांगिड़, देवकी सैनी, रामू सैनी, मयंक गुप्ता, जगदीश जग्गी, सहित अनेक कलाकार एवं गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर की सफाई

पीपलू, (निसं)। राजकीय कन्या महाविद्यालय पीपलू में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की स्वयं सेविकाओं द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी जे पी वर्मा के नेतृत्व में महाविद्यालय परिसर तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पीपलू पहुंचकर संपूर्ण परिसर की साफ- सफाई की, मरीजों को सफाई रखने के बारे में समझाया, साथ ही आसपास में फैली प्लास्टिक अवशिष्ट को उठाकर एक जगह एकत्रित किया। स्वच्छता अभियान में महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर सौलत अली खान, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर एन के कुलदीप, प्रोफेसर विकाश नौटियाल, डॉ. धर्मेन्द्र वर्माए, प्रधान मीणा तथा तनुश्री विजय सहित कई छात्र मौजूद थे।

अपराधियों को दो घंटे में पकड़ा

चाकसू, (निसं)। शिवदासपुरा पुलिस की कस्टडी से फरार हुए दो अपराधियों को चाकसू थानाधिकारी राजूराम बामनिया के नेतृत्व में पुलिस ने सघन अभियान चलाकर 2 घंटे में गिरफ्तार करने में कामयाबी हासिल की है। थाना अधिकारी राजूराम बामनिया ने बताया कि शिवदासपुरा पुलिस चार आरोपियों को कोर्ट में पेशी के लिए ले गई थी। जिनमें से पेशी के बाद रवानगी के दौरान दो चोरी के आरोपी फरार हो गए थे। जैसे ही सूचना मिली शिवदासपुरा थाना इंचार्ज रणजीत सिंह जाप्ते के साथ आरोपियों की तलाश के लिए निकल गए। वही चाकसू थाने स्पेशल टीम बदमाशों की तलाश के लिए निकल गई सघन तलाशी अभियान के दौरान टिगरिया गांव के एक बाजरे के खेत में पुलिस स्पेशल टीम के कांस्टेबल राजेंद्र चौधरी ने पीछा करके पकड़ लिया। बदमाशों को गिरफ्तार कर शिवदासपुरा पुलिस को हैंडोवर कर दिया गया है। दोनों बदमाश उत्तर प्रदेश के हथरोही निवासी आकाश और सूरज है।

फसल खराबे के आंकलन की मांग

निवाई, (निसं)। किसान महापंचायत गांव ढाणी संग अभियान के अंतर्गत ग्राम पंचायत श्री रामपुरा में उपखंड अधिकारी के प्रतिनिधि हल्का पटवारी दीक्षित सोनी को मौके पर बुलाकर किसानों ने फसल खराबा का आंकलन करवाया। ब्लॉक अध्यक्ष दशरथसिंह चौहान ने बताया कि किसान महापंचायत द्वारा संचालित गांव ढाणी संग अभियान के अंतर्गत ग्राम पंचायत श्रीरामपुरा नयागांव में किसानों की बैठक आयोजित हुई जिसमें किसानों ने हल्का पटवारी को मौके पर बुलाकर फसल खराबे का आंकलन करवाया और खराबा फसल के मुआवजे की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा।

79 बालिकाओं और शिक्षकों की अनीमिया की जांच की

निवाई, (निसं)। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में कल्प सेंटर फॉर अनफोल्डिंग लर्निंग पोटेंशिअल्स एवं देसाई फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा शिक्षा विभाग के सहयोग से बाल स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया।

संस्था के सचिव डॉ. ओमप्रकाश कुलहरि ने बताया कि बाल स्वास्थ्य मेले मेकरीब 600 बालिकाओं ने भाग लिया। मेले का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वास्थ्य एवं विज्ञान के प्रति जानकारी एवं रुचि जागृत करना है। मेले में कक्षा 1 से 12 तक की बालिकाओं के अलग अलग समूह बनाए गए जिन्हें उनके निर्धारित गतिविधि कक्षों में बैठा कर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया गया। जिनमें बच्चों की एनीमिया जांच एवं जागरूकता, वृद्धि निगरानी, विज्ञान के प्रयोग एवं चमत्कार, विज्ञान के उपकरणों का परिचय, शारीरिक संरचना, फिल्म प्रदर्शन, विभिन्न प्रकार के खेल, प्राथमिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जागरूकता तथा किशोरी बालिकाओं के साथ माहवारी स्वच्छता प्रबंधन एवं जागरूकता प्रमुख रहे। स्वास्थ्य मेले में कुल 79 बालिकाओं और शिक्षकों की अनीमिया की जांच की।

बजट में घोषणाओं हेतु भूमि आवंटन के कार्य तत्परता से करने के निर्देश दिये

कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में राजस्व विभाग के अधिकारियों की मासिक बैठक हुई

खैरथल, (निसं)। जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में जिला सचिवालय पर राजस्व विभाग के अधिकारियों की मासिक बैठक हुई। बैठक में अतिरिक्त जिला कलेक्टर खैरथल शिवपाल जाट, अतिरिक्त जिला कलेक्टर भिवाड़ी अश्विन के पंवार, उपखंड अधिकारी मुंडावर सुरेंद्र प्रसाद, तिजारा संजीव वर्मा, कोटकासिम सुभाष यादव, टपूकड़ा लाखन सिंह गुर्जर, किशनगढ़ बास मनीष कुमार जाटव सहित तहसीलदार मौजूद रहे।

खैरथल जिला सचिवालय पर कलेक्टर किशोर कुमार ने राजस्व विभाग की मासिक समीक्षा बैठक ली।

बैठक के दौरान जिला कलेक्टर ने एसडीएम व तहसीलदार स्तर पर लंबित सरकारी, चारागाह, सिवायचक भूमि अतिक्रमण के प्रकरणों, तलफी, पत्थरगड़ी, तरमीन कार्य, एलआर एक्ट, पीडीआर एक्ट, एलआर एक्ट, रोड़ा एक्ट, सीएमओ, स्टेट एवं लोकायुक्त के प्रकरणों पर कार्यवाही कर जल्द निस्तारित करने के निर्देश दिए। जिला कलेक्टर ने राजस्व अधिकारियों से सभी प्रकरणों की समीक्षा करते हुए चारागाह भूमि अतिक्रमण को चिन्हित कर हटाने के निर्देश दिए। जिले के लिए बजट में हुई घोषणाओं हेतु भूमि आवंटन के कार्य तत्परता से करते हुए पूरे करने के निर्देश दिए।

बैठक के दौरान जिला कलेक्टर ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के तहत सत्यापन का कार्य पूर्ण कर पात्र सभी लाभार्थियों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। उन्होंने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को पालनहार योजना के अंतर्गत आने वाले सभी छात्रों का अध्ययन प्रमाण पत्र बनाने के निर्देश दिए ताकि कोई भी बच्चा योजना से वंचित न रहे।

उन्होंने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस (एक अक्टूबर) से 7 अक्टूबर तक समाज कल्याण सप्ताह का आयोजन किया जाना है। समाज कल्याण सप्ताह के आयोजन का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जातियों, जनतातियों, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक, विशेष योग्यजन, महिलाओं एवं बच्चों के कल्याण के लिए संचालित योजनाओं के माध्यम से लाभान्वित करने के साथ-साथ सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों के विरूद्ध जनचेतना जाग्रत करना है। उन्होंने अधिकारियों को समाज कल्याण सप्ताह के दौरान कि जाने वाली गतिविधियों हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

सार-समाचार

हथियार बेचने वाले चार आरोपी पकड़े

निवाई, (निसं)। निवाई थाना पुलिस ने डीवाईएसपी मृत्युंजय मिश्रा के निकट सुपरविजन में अवैध हथियार बेचने वाले चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है। सभी गिरफ्तार आरोपी बिहार राज्य के रहने वाले हैं। थानाधिकारी हरिराम वर्मा ने बताया कि सभी आर्म्स एक्ट प्रकरण में वांछित अपराधी थे। उन्होंने बताया कि आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए विशेष टीम का गठन किया गया। टीम ने आरोपी को डिटेन किया। इसके पश्चात गिरफ्तार कर लिया गया। उन्होंने बताया कि पुलिस ने आरोपी नयन पटेल पुत्र रंजीत धानू निवासी पुराना ब्लॉक देगरा बाजार वार्ड नंबर 4 धनियालमपुर थाना देगरा बेगूसराय बिहार, अभिनंदन कुमार पुत्र तिलक महतो निवासी छोटी पहाडी थाना अगमकुआं जिला पटना बिहार, आशिक राज उर्फ आशिक कुमार पुत्र राम किशनू महतो निवासी जयपुर धनकी बडी पहाडी गुलजरबाग पटना बिहार व सूरजकुमार पुत्र सुधीर बिंद निवासी वार्ड नंबर 4 मकरोता बेरीगंज नालंदा बिहार को गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों से अवैध हथियार खरीद फरोख्त के संबंध में पुलिस पूछताछ कर रही है।

एसपी सागवान ने किया पदभार ग्रहण

टोंक, (निसं)। हॉल में ही हुए आईपीएस अधिकारियों किए तबादले के अन्तर्गत हनुमानगढ़ से टोंक आए पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान ने 26 सितम्बर को पदभार ग्रहणकर पुलिस अधीक्षक कार्यालय पंहुचकर गार्ड ऑफ ऑनर लिया। इस दौरान उन्होने प्रेस वार्ता करते हुए कहा कि जिले में अवैध गतिविधियों पर कडी नजर रखी जायेगी। उन्होने कहा कि अपराध, अवैध बजरी और पत्थर खनन, शहर में फैले अवैध नशे के कारोबार करने वाले लोगो पर अंकुश लगेगा साथ ही जिले में हो रही अवैध माईनिग पर भी विशेष ध्यान दिया जायेगा। इस मौके पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ज्ञान प्रकाश नवल, सुरेश मेघवाल ने विकास सागवान को बुके भेंट कर जिले के पुलिस अधिकारियों से परिचय करवाया, जिसके बाद पूजा अर्चना कर विधिवत रूप से कार्यग्रहण किया। इस अवसर पर टोंक वृर्ताधिकारी राजेश विधार्थी, सदर थाना अधिकारी, ब्रजमोहन कविया, कोतवाल भंवर लाल वैष्णव, पुरानी टोंक उदयवीर सिंह, मेहंदवास थानाधिकारी सुरेश चौधरी, निवाई थाना अधिकारी हरिराम वर्मा, अलीगढ थानाधिकारी मानवेन्द्र सिंह सहित जिले के समाजसेवी लोगो ने नवनियुक्त पुलिस अधीक्षक का आभार व्यक्त कर टोंक जिले के हालतो से रूबरू करवाया।

दुष्कर्म के आरोप में बीस साल की सजा

मालपुरा (निस) टोडारायसिंह क्षैत्र मे एक नाबालिग से दुष्कर्म के मामले मे आरोपी को आज पॉक्सो कोर्ट मे सुनाई बीस साल कठोर कारावास की सजा। अभियोजन पक्ष के अधिवक्ता मोहम्मद मियां गुलजार ने पैरवी करते हुये आरोपी के विरूद्ध न्यायालय मे रखे साक्ष्यो व ठोस दलील पर पॉक्सो न्यायालय ने अभियुक्त हीरालाल उर्फ विजयराज को बीस साल के कठोर कारावास की सजा सुना अभियुक्त पर लगाया 2 लाख 5 हजार रूपये का आर्थिक जुर्माना।

मेले में मॉडल्स व चाट का किया प्रदर्शन

निवाई, (निसं)। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद के दिशा निर्देशानुसार पीएमश्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में युसीईईओ स्तरीय किशोरी मेले का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य देवेंद्रपाल सिंह ने बताया कि युसीईईओ स्तरीय किशोरी मेले में प्रारंभिक व माध्यमिक विद्यार्थियों के 6 जोन वाइज प्रदर्शन एवं प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। उपप्राचार्य रामकिशन विजय ने विजेता छात्राओं की घोषणा की। उन्होंने बताया कि विजेता छात्राएं निवाई ब्लॉक स्तरीय किशोरी मेले में प्रदर्शन करेंगी। मेले में बालिकाओं ने पूरे जोश से भाग लेकर अनेक मॉडल्स और चार्ट का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन पर यूसीईईओ देवेंद्रपाल सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर मेला प्रभारी निशा भट्ट, मीना चौधरी, प्रहलाद गुर्जर, मोहरपाल गुर्जर, रामबाबू शर्मा, हरसहाय मीना, सरिता भट्ट, असमा बानो, पूजा गोस्वामी, सीमा सोगानी, स्वाति जनकावत, सुमन महावर, पूजा बंसल, कुमकुम मौर्य, सुमन मीणा, रचना मीना, प्रतिभा मीना, तनूजा माथुर व अनिता पारीक सहित युसीईईओ विद्यालयो के कार्मिक व कई विद्यार्थी मौजूद थे।

बिजली कनेक्शन और ट्रांसफॉर्मर बदलने में देरी नहीं हो : आरती डोगरा

जयपुर, (कासं)। डिस्कॉम्स चेयरमैन एवं जयपुर विद्युत वितरण निगम की प्रबन्ध निदेशक आरती डोगरा ने बिजली निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि उपभोक्ताओं की बिजली संबंधी समस्याओं का पूरी संवेदनशीलता से निराकरण किया जाए।

डिस्कॉम्स चेयरमैन गुरूवार को अलवर एवं भिवाड़ी वृत्त के अभियन्ताओं की बैठक में समीक्षा कर रही थीं। इस दौरान उन्होंने बिजली कनेक्शनों, ट्रांसफार्मर बदलने, लोड बढ़ाने आदि को लेकर पेंडेंसी दूर करने के अभियंताओं को दिशा -निर्देश दिए। उन्होंने आरडीएसएस तथा पीएम सूर्यघर योजना को लेकर भी प्रगति की समीक्षा की और गति लाने के निर्देश दिए। बैठक में अलवर वृत्त के सभी अधीक्षण अभियंता, अधिशासी अभियंता एवं सहायक अभियंता तथा भिवाडी सर्किल के अधीक्षण एवम अधिशासी अभियंता मौजूद थे। डिस्कॉम्स चेयरमैन ने इससे पहले विभिन्न सब-डिवीजन कार्यालयों का निरीक्षण किया। उन्होंने इन कार्यालयों में फाइलों के निस्तारण, स्टोर में मेटेरियल एवं ट्रांसफार्मरों की उपलब्धता, लम्बित कनेक्शनों की स्थिति तथा उपभोक्ताओं की शिकायतों के निराकरण आदि की जानकारी ली। उन्होंने बगड मेव सब-डिवीजन में कनेक्शनों की पत्रावलियों को देखा और इनके निस्तारण में लग रहे समय के कारणों की जांच के लिए टीम गठित करने के निर्देश अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता (गुणवत्ता नियंत्रण) को दिए। यहां मेटेरियल एवं ट्रांसफार्मरों के गेट पास एवं स्टॉक रजिस्टर का भी निरीक्षण किया। अलवर शहर के ए-द्वितीय उपखण्ड कार्यालय में डोगरा ने पीएम सूर्यघर नि:शुल्क बिजली योजना हेल्प डेस्क का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि योजना में आवेदकों से फोन पर भी सम्पर्क कर उन्हें रूफ टॉप सोलर लगवाने तथा सब्सिडी का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने मालाखेडा सब डिवीजन कार्यालय का अवलोकन कर यहां कनेक्शनों, भार वृद्धि, स्टोर शाखा, कनेक्शन में नाम बदलने आदि से संबंधित पत्रावलियों का अवलोकन किया।

- डिस्कॉम्स चेयरमैन आरती डोगरा ने बिजली कनेक्शनों, ट्रांसफार्मर बदलने, लोड बढ़ाने आदि को लेकर पेंडेंसी दूर करने के दिशा-निर्देश दिए

डस्कॉम्स चेयरमैन आरती डोगरा ने बिजली निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए।

प्रतियोगिता में मॉडल स्कूल निवाई रही प्रथम

निवाई, (निसं)। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद के आदेशानुसार क्लस्टर स्तरीय साइंस क्विज प्रतियोगिता स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल दौसा में आयोजित हुई।

प्रतियोगिता में स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल निवाई के छात्र सारांश राजावत ने सीनियर लेवल साइंस क्विज में व ईशांत मीणा ने जूनियर लेवल साइंस मॉडल एग्जिबिशन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इसी प्रकार छात्रा कुसुम मीणा ने सीनियर लेवल साइंस मॉडल एग्जिबिशन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है। विद्यालय के प्रधानाचार्य कुंभाराम चौधरी ने बताया कि विजेता छात्र 28 सितंबर को मॉडल स्कूल सिमलवाडा जिला डूंगरपुर में राज्य स्तर पर क्लस्टर प्रतियोगिता का प्रतिनिधित्व करेंगे।

विजेता विद्यार्थियों, टीम प्रभारी ललितकुमार बेनीवाल एवं सोनू सोनी का विद्यालय पहुंचने पर विद्यालय परिवार ने तिलक लगाकर एवं माला पहनाकर स्वागत किया। इस अवसर पर व्याख्याता विनोदकुमार शर्मा, योगेशकुमार शर्मा, कमलसिंह गुर्जर, विकास गुर्जर, अंकिता राजावत, सुनीता गुर्जर, रमेशचंद मीणा, सुदेश बाई, सोनू सोनी, पूजा चंदेला, अमितकुमार शर्मा एवं निखिलेश सैन सहित समस्त स्टाफ मौजूद रहा।

कार्रवाई से नाराज श्मशान पहुंचे लोग

अलवर, (निसं)। अलवर यूआईटी की ओर से बुध विहार कच्ची बस्ती की तरफ श्मशान के टीनशेड को बुलडोजर से तोडने के विरोध में गुरुवार सुबह लोग श्मशान घाट पहुंचे।

खुलकर यूआईटी प्रशासन के खिलाफ विरोध जताया। इसके बाद कलेक्टर को ज्ञापन देने गए। यह चेताया कि इसी जगह श्मशान को विकसित नहीं किया तो बडा आंदोलन किया जाएगा।

यहां पार्षद दुर्गा सिंह व निवासी राम किशोर ने बताया कि यह श्मशान घाट करीब 150 साल पुराना है। बगल में सेना की जमीन भी है। सेना ने भी कुछ जमीन श्मशान घाट के लिए छोड दी थी। अब यूआईटी श्मशान की जमीन को बेचना चाहती है। जो किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जन मानस में गुस्सा है। सरकार व प्रशासन ने नहीं सुनी तो जनता रोड पर आ जाएगी। यूआईटी के दफ्तर को आग लगा देंगे। यूआईटी सचिव स्नेहल का कहना है कि यहां टीनशेड केवल डेढ साल पहले लगा है।

आसपास में श्मशान घाट हैं। उस जगह को विकसित करा दिया जाएगा। आमजन की मांग को देखते हुए सही निर्णय करेंगे। ताकि किसी को भी परेशानी नहीं हो।

कोठी नातमाम टोंक ने जीता क्रिकेट खिताब

मालपुरा (निस) तिलक बाल विद्यापीठ सीनियर सैकेण्डरी स्कुल द्वारा मालपुरा मे आयोजित 68वीं जिला स्तरीय 18 वर्ष छात्र क्रिकेट प्रतियोगिता का खिताब कोठी नातमाम विद्यालय टोंक की टीम ने जीता। गुरूवार को प्रतियोगिता के समापन समारोह मे अतिरिक्त पुलिस अधिक्षक रामकुमार कस्वा, खण्ड मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. संजीव चौधरी, बार अध्यक्ष एडवोकेट रवि कुमार जैन, एडवोकेट कृष्णकांत जैन, जिला शिक्षा अधिकारी प्रतिनिधि प्रेमचन्द व निर्णायक मंडल के शारीरिक शिक्षक नसरूदीन ने विजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान कर दी जीत की बधाई। प्रतियोगिता आयोजक एवं शाला सचिव प्रकाश चन्द पाटनी ने क्रिडा प्रतियोगिता का प्रतिवेदन रखा।

भाजपा के पक्ष में वोट करे : कुमारी

चेनेनी, (निसं)। आज जम्मू कश्मीर विधानसभा चुनाव को लेकर चेनेनी घोरडी विधानसभा में आयोजित विजय संकल्प सभा आयोजित हुई।

सभा के जिसके मुख्य वक्ता केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह रहे। इस बीच राजस्थान से प्रवास पर आई भाजपा नेत्री रत्ना कुमारी शाहपुरा ने अपने संबोधन में बताया की भाजपा ने धारा 370 / 35 को हटा कर जम्मू कश्मीर में आतंकवाद की खत्म किया और कांग्रेस एनसी उसको वापस लाने की बात कर रही है।

- 'कांग्रेस ने देश में आतंकवाद बढ़ाया'

उन्होंने कहा कि भाजपा है तो भरोसा है सभी मतदाताओं को भाजपा पर भरोसा कर भाजपा के पक्ष में वोट करना चाहिए जिससे देश सुरक्षित हो क्योंकि एनसी कांग्रेस ने आतंकवाद बढ़ाया है। जम्मू कश्मीर को गोलियों से भूना है। हमे इन पार्टियों को कभी माफ नहीं करना चाहिए। इसी बीच उन्होंने भाजपा की कल्याणकारी योजनाओं के बारे में अवगत कराया और भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपील की। सभा में हजारों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

किसानों ने मुआवजे की मांग को लेकर किया विरोध-प्रदर्शन

निवाई में किसान संघ ने एसडीएम सुरेश कुमार हरसोलिया को ज्ञापन सौंपा।

निवाई, (निसं)। भारतीय किसान संघ निवाई ने फसल खराबा के मुआवजे की मांग को लेकर उपखण्ड कार्यालय में धरना प्रदर्शन करके एसडीएम सुरेशकुमार हरसोलिया को ज्ञापन सौंपा। जिला मंत्री रामगोपाल रोलनिया ने बताया कि जिलाध्यक्ष रमेश चौधरी के नेतृत्व में विभिन्न ग्राम पंचायतो से किसान कृषि मण्डी निवाई में एकत्रित हुए। प्रान्त अध्यक्ष कालूराम बागडा, मंत्री लटूरसिंह गुर्जर, प्रदेश सदस्य सुमेरसिंह, प्रान्त राजस्व प्रमुख रामस्वरूप धाकड, संभाग अध्यक्ष पोखरलाल जाट एवं विनय चौधरी टोंक ने किसानों को संबोधित किया। इसके बाद किसान रैली के रूप में नारे लगाते हुए उपखण्ड अधिकारी कार्यालय पहुँचकर उपखंड कार्यालय परिसर में धरना दिया। जिलाध्यक्ष रमेश चौधरी व तहसील अध्यक्ष रामराय जाट ने बताया कि इस वर्ष किसानों की 80 प्रतिशत फसलें अधिक वर्षा के कारण नष्ट हो गई है। लेकिन सरकार की मंशा में खोट होने के कारण 15.20 प्रतिशत ही खराबा दिया जा रहा है। इसलिए जब तक सरकार किसानों को मुआवजे देने की मांग को नहीं मान लेती तब तक धरना प्रदर्शन जारी रहेगा। इसके बाद तत्पश्चातु उपखण्ड अधिकारी सुरेशकुमार हरसोलिया एवं तहसीलदार ने किसान संघ के पदाधिकारियों से चर्चा की। करीब 2 घंटे की चर्चा के बाद एसडीएम के धरना प्रदर्शन समाप्त किया। तहसील अध्यक्ष रामराय जाट एवं तहसील मंत्री नारायण प्रजापत ने बताया कि अगर तय समय पर रिपोर्ट नहीं भेजी गई तो बडा आंदोलन किया जाएगा।

उपचुनाव के लिए ईवीएम की प्रथम स्तरीय जांच शुरू

अलवर, (निसं)। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं जिला कलेक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने बताया की राज्य निर्वाचन आयोग के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवीन महाजन के निर्देशानुसार 26 सितम्बर गुरूवार से अलवर जिले के रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के उपचुनाव के लिए इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) की प्रथम स्तरीय जांच (एफएलसी) की प्रक्रिया भारतीय जनता पार्टी के प्रतिनिधि जितेन्द्र शर्मा, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधि रामप्रकाश शर्मा, आम आदमी पार्टी के प्रतिनिधि दिव्यन्दु शर्मा व जगन्नाथ गोयल तथा सीपीआईएम के प्रतिनिधि भोलाराम की मौजूदगी में शुरू हो गई है।

उन्होंने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार निष्पक्ष, स्वतंत्र एवं पारदर्शी चुनाव के लिए मशीनों की जांच प्रक्रिया मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों की मौजूदगी में होती है। एक विधानसभा क्षेत्र के लिए मतदान के लिए आवश्यक कुल मशीनों की संख्या के 200 प्रतिशत की प्रथम स्तरीय जांच की जाती है। भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के क्रम में आज रामगढ़ विधानसभा उपचुनाव के लिए भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड बेंगलुरू के 6 विशेषज्ञ इंजीनियरों की टीम द्वारा ईवीएम और वीवीपैट मशीनों की प्रथम स्तरीय जांच का कार्य प्रारंभ किया।

सड़कों पर पैदल भ्रमण कर अतिक्रमियों से की समझाइश

यातायात को सुगम बनाने के लिए थाना अधिकारी ने नगर पालिका और व्यापारिक संगठनों के प्रतिनिधियों के साथ अतिक्रमियों से की समझाइश

किमचशनगढ़ बास, (निसं)। पुलिस थाना अधिकारी जितेंद्र शेखावत ने नगर पालिका और व्यापार महासंघ के पदाधिकारीयों के साथ खैरथल तिजारा मुख्य सड़क मार्ग व गंज रोड एवं मेंन बाजार की सड़कों पर पैदल निकल कर दुकानदारों व ठेली लगाकर फ्रूट सब्जी तथा अन्य सामान बिक्री करने वालों को समझाइश की ओर चेतावनी भी दी अगर दोबारा से सड़क पर आड़ी तिरछी ठेली को लगाकर रखा और दुकानों के चबूतरे से नीचे समान पाया तो सीधे जप्त कर चालान किया जाएगा।

थाना अधिकारी जितेंद्र शेखावत ने बताया बुधवार को पुलिस थाने पर हुई सीएलजी सदस्यों की बैठक में शहर के मुख्य मार्गो व बाजारों में सड़क पर अस्थाई अतिक्रमण कर रोड को जाम करके रखने से हो रही यातायात बाधित की समस्या को लेकर सीएलजी सदस्यों की ओर से मुद्दा उठाया गया था। गुरुवार सुबह व्यापारिक संगठनों के पदाधिकारी व नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि सतीश सिंघल की टीम के साथ तिजारा अलवर खैरथल रोड पर सड़क के दोनों और लगे सब्जी फ्रूट ठेले वालों को समझाइश की गई है। व्यापार महासंघ अध्यक्ष परमानंद लखयाणी ने बताया पुलिस व नगर पालिका अधिकारियों के साथ व्यापारिक संगठनों की ओर से सड़क पर खड़े फ्रूट सब्जी ठेला वालों के साथ दुकानदारों को खड़े होने व दुकानों के बाहर चबूतरे से नीचे समान नहीं रखने के लिए समझाइश की है। ठीक इसी प्रकार गंज रोड और मेंन बाजार में दुकानदारों को नीचे समान नहीं रखने तथा बाइकों को ठीक से खड़ी करवाने के लिए कहा गया है। व्यापारियों ने समझाइश के दौरान कहा समझाने से मान जाओ वरना फिर मत कहना पुलिस और नगर पालिका वाले आए थे सामान उठा ले गए।

- अतिक्रमण नहीं हटाने पर चालान काटने या सामान उठा ले जाने की चेतावनी दी

किशनगढ़ बास में सड़कों पर लगी आड़ी तिरछी ठेली वालों से थाना अधिकारी व व्यापारिक संगठनों के पदाधिकारियों ने समझाइश की।

इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि सतीश सिंघल के साथ नगर पालिका अधिकारियों की टीम व व्यापार महासंघ अध्यक्ष परमानंद लखयाणी हरमेश खुराना मदन लाल अग्रवाल जनेश भूटानी प्रभु दयाल सिंधी संतोष अग्रवाल आदि व्यापारिक संगठनों के पदाधिकारी व व्यापारी मौजूद रहे।

सीनियर टीम का माहौल बहुत अच्छा है सभी सीनियर बड़े भाइयों की तरह हैं जो अधिकतर समय माहौल को हल्का रखते हैं। एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में यह मेरे लिए एक स्वप्निल पदार्पण था। **- गुरजोत सिंह**

भारतीय हॉकी खिलाड़ी, हीरो एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 2024 में भारतीय पुरुष हॉकी टीम में चयन होने पर।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

शाकिब अल हसन

बांग्लादेश के स्टार ऑलराउंडर शाकिब अल हसन ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया है। हालांकि, उनका ये रिटायमेंट तत्काल प्रभाव से नहीं है। टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट से उन्होंने तत्काल प्रभाव से रिटायमेंट लेने की घोषणा कर दी है। शाकिब अल हसन भारत के खिलाफ 27 सितंबर से कानपुर में खेले जाने वाले दूसरे टेस्ट में खेलेंगे। इसके बाद बांग्लादेश के लिए वह एक और सीरीज साउथ अफ्रीका के खिलाफ अपने घरेलू मैदान में खेलेंगे। शाकिब अल हसन ने खुलास किया है कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ आगामी घरेलू टेस्ट सीरीज इस प्रारूप में उनका आखिरी सीरीज होगी।

क्या आप जानते हैं ?... द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान फीफा के इतालवी उपाध्यक्ष डॉ. ओटारियानो बैरासी ने विश्व कप ट्रॉफी को अपने पलंग के नीचे एक जूते के डिब्बे में छुपाए रखा।

शतरंज विजेता खिलाड़ियों से मिले पीएम मोदी, कहा देश की बड़ी उपलब्धि

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 45वें शतरंज ओलंपियाड के भारतीय विजेताओं से अपने आवास पर मुलाकात की। विजेता शतरंज खिलाड़ियों से मुलाकात का ये वीडियो सोशल मीडिया पर शेयर किया गया। पीएम ने विजेता शतरंज

खिलाड़ियों को उनकी उपलब्धि के लिए बधाई और शुभकामनाएं दी। शतरंज ओलंपियाड आर वैशाली, डी हरिका, तानिया सचदेव, विदित गुजराती, अर्जुन एरिगेसी और प्रज्ञानानंद को पीएम मोदी से बातें करते हुए वीडियो में देखा जा सकता है। इस बीतचीत के दौरान शतरंज खिलाड़ियों ने पीएम मोदी को शतरंज की बिसात का उपहार भी दिया। इस दौरान शतरंज की एक बाजी भी खेली गई। बता दें कि, हंगरी के बुडापेस्ट में भारत की पुरुष और महिला टीमों ने शतरंज प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीता। पुरुष टीम ने 22 में से 21 अंक हासिल किए। शतरंज ओलंपियाड के 97 साल के इतिहास में पहली बार भारतीय खिलाड़ियों ने गोल्ड जीता है। पुरुष टीम ने अमेरिका ने रजत और उज्बेकिस्तान ने कांस्य जीता था। वहीं महिलाओं की टीम ने 19 अंक हासिल किए थे। महिलाओं में दिव्या देशमुख ने तीसरे और वंतिका अग्रवाल ने चौथे बोर्ड पर गोल्ड जीता।

शतरंज ओलिंपियाड जीतने वाली भारतीय टीम के लिए इनाम का ऐलान

नयी दिल्ली, 26 सितंबर । अखिल भारतीय शतरंज महासंघ ने 45वें शतरंज ओलंपियाड में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय पुरुष और महिला टीमों के लिए ईनामी राशि का ऐलान किया है। एआईसीएफ के अध्यक्ष नितिन नारंग ने बुधवार को सम्मान समारोह के दौरान घोषणा करते हुए बताया कि

ओलंपियाड में जीतने वाली टीमों को तीन करोड़ 20 लाख रुपये की ईनामी राशि दी जाएगी। विजेता टीम के हर सदस्य को 25-25 लाख रुपये मिलेंगे, जबकि पुरुष और महिला टीमों के कोच अभिजीत कुंटे और श्रीनाथ नारायण को 15-15 लाख रुपये दिए जाएंगे। भारतीय दल के प्रमुख ग्रैंडमास्टर दिव्येंदु बरुआ को 10 लाख रुपये और सहायक कोचों को 7.5 लाख रुपये दिए जाएंगे। एआईसीएफ के अध्यक्ष नारंग ने सम्मान समारोह के दौरान कहा कि, गोल्ड की भूख हंगरी में जाकर खत्म हुई, लेकिन सफलता की इच्छा आगे भी जारी रहेगी। ओपन वर्ग में हमने दबदबा रखा और महिला वर्गम में हमने जीत छीन के ली। शतरंज बोर्ड पर हमारे खिलाड़ी शार्प शूटर साबित हुए। विश्वनाथन आनंद ने जो बीज बोया था वो अब पेड बन गया है।

टी-20 विश्वकप में हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे : दीप्ति

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। भारतीय महिला क्रिकेट टीम की ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा ने कहा है कि हम बिना किसी दबाव के टी-20 विश्वकप में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। दीप्ति ने कहा, किसी भी खिलाड़ी के लिए विश्वकप एक बड़ा टूर्नामेंट है और निश्चित रूप से दबाव होगा, लेकिन व्यक्तिगत रूप से पुरुष टीम की विश्व कप जीत से मैं बहुत प्रेरित हूं। हमने पिछले कुछ सीरीज और टूर्नामेंट में अच्छा किया है और हम यहां भी अपना सर्वश्रेष्ठ देंगे। मैं इसे दबाव नहीं कहूंगी। उन्होंने कहा, 2017 के विश्वकप में हम जिस तरह से खेले, अचानक से बहुत कुछ बदल गया। व्यक्तिगत रूप से मुझे पहचाना जाने लगा। ऐसे किसी मॉल में जाना या पैदल टहलना मुश्किल हो गया। अगर हम विश्वकप जीतते तो चीजें और भी बदलती। तब हर लड़की क्रिकेट खेलना चाहती। हालांकि इस बार हम सर्वश्रेष्ठ की उम्मीद कर रहे हैं। उन्होंने कहा, विश्वकप आपको बहुत आत्मविश्वास देता है कि हम अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकते हैं। जब हम बेंगलुरु में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ खेल रहे थे तब हमारे पास कई क्रिकेट खेलने वाली लड़कियां ऑटोग्राफ और सेल्फी के लिए आईं। तब हमने उनसे कहा, उम्मीद नहीं खोएं और परिणाम की चिंता किए बिना अपना सर्वश्रेष्ठ दें। उन्होंने कहा,एक टीम के रूप में हम बहुत सकारात्मक हैं, हम बहुत अच्छा कर रहे हैं। हमारे लिए हर एक मैच महत्वपूर्ण है।

कानपुर में परिस्थितियां और पिंच देखकर उतरेंगे अभिषेक

कानपुर, 26 सितंबर। भारतीय टीम के बल्लेबाजी कोच अभिषेक नायर ने बुधवार को कहा कि टीम के सभी खिलाड़ी फिट और खेलने को लेकर उत्साहित हैं मगर कानपुर टेस्ट में परिस्थितियों और पिच को देखकर भारत अपनी रणनीति तैयार करेगा। मैच की पूर्व संध्या पर आयोजित प्रेस कांफ्रेंस में अभिषेक ने कहा "ईमानदारी से कहूं तो मुझे अभी तक नहीं पता कि हम किस सतह पर खेलने जा रहे हैं लेकिन यहां तैयार दोनों पिचें काफी अच्छी दिख रही हैं। कानपुर को अक्सर अच्छी पिचों के लिए जाना जाता है। मैं अभी उछाल के बारे में निश्चित नहीं हूं। परिस्थितियों और पूर्वानुमान के साथ यह दिलचस्प होने वाला है कि जब हम सुबह जाने के लिए निकलते हैं तो स्थितियां कैसी होती हैं। बहुत कुछ इस पर निर्भर करेगा क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं कि टेस्ट विकेट में पिच कैसे खेलती है, इसमें परिस्थितियां एक बड़ा कारक हो सकती हैं।

कामेंदु मेंडिस ने टेस्ट क्रिकेट में रचा सबसे बड़ा कीर्तिमान, 132 साल में पहली बार हुआ कारनामा

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। टेस्ट क्रिकेट को खेले जाते अब तक करीब 132 साल हो गए हैं। लेकिन आज जो काम श्रीलंका के बल्लेबाज कामेंदु मेंडिस ने किया, वो इससे पहले कभी भी किसी भी बल्लेबाज ने नहीं किया। कामेंदु मेंडिस का रिकॉर्ड क्रिकेट की दुनिया में अनोखा और अकेला है। वे अब दुनिया के ऐसे पहले बल्लेबाज बन गए हैं, जिन्होंने अपने टेस्ट डेब्यू के बाद लगातार आठ मैचों में आठ अर्धशतक जड़ने का काम किया है। अब तक वे पाकिस्तान के सऊद शकील की बराबरी पर थे, लेकिन अब उनका कोई तोड़ ही नहीं है।

न्यूजीलैंड की क्रिकेट टीम इस वक्त श्रीलंका के दौरे पर है, जहां टेस्ट सीरीज खेली जा रही है। पहला मैच श्रीलंकाई टीम ने अपने नाम कर लिया था। अब आज से गॉल में सीरीज का दूसरा टेस्ट मैच खेला जा रहा है। इसमें श्रीलंका की टीम पहले बल्लेबाजी के लिए उतरी। उनके सलामी बल्लेबाज पथुम निसंका केवल एक ही रन

बनाकर आउट हो गए। हालांकि इसके बाद टीम संभल गई और जल्दी विकेट नहीं गिरा। बात यहां पर कामेंदु मेंडिस की करें तो वे नंबर पांच पर बल्लेबाजी के लिए। उन्होंने दिन का खेल खत्म होने से पहले ही 51 रन ठोक दिए। जैसे ही उन्होंने अपने 50 रन पूरे किए नया कीर्तिमान रचने का काम किया, जो आज तक दुनिया का कोई भी बल्लेबाज नहीं कर पाया है।

कामेंदु मेंडिस ने टेस्ट क्रिकेट में अपने पहले आठ मैचों में हर मुकाबले में कम से कम 50 रन जरूर बनाए हैं। एक बार फिर 50 प्लस रन की पारी खेलकर कामेंदु ने ऐसा करने वाले पहले खिलाड़ी बनकर इतिहास की किताबों में अपना नाम दर्ज करा लिया है। पिछले ही साल पाकिस्तान के सऊद शकील टेस्ट इतिहास में अपने पहले सात मैचों में से प्रत्येक में 50 प्लस रन बनाए थे और वे ऐसा करने वाले पहले खिलाड़ी बने थे, लेकिन अब वो बात पुरानी हो गई है।

कामेंदु ने अपना डेब्यू टेस्ट जुलाई 2022 में खेला था। उसी मैच की पहली पारी में उन्होंने 61 रन बनाए थे। इसके बाद साल 2024 में बांग्लादेश के खिलाफ अपने दूसरे मैच में उन्होंने 102 और 164 रनों की पारी खेली। मार्च 2024 में जब वे अपने तीसरे मैच के लिए मैदान में उतरे तो उन्होंने नाबाद 92 रन बनाए। तीन मैचों में लगातार रिकॉर्ड तोड़ पारियां खेलने के बाद भी वे रुके नहीं। अपने चौथे मैच में उन्होंने 113 रन बनाए। इसके बाद भी अपने रथ पर सवार रहे। अब कामेंदु के नाम रिकॉर्ड तो बन ही गया है, लेकिन देखना ये होगा कि कितने मैचों तक से सिलसिला जारी रखते हैं।

क्या ऋषभ पंत बनेंगे 2025 में नए कप्तान

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। बीसीसीआई की ओर से जल्द ही आईपीएल 2025 के लिए रिटेंशन पॉलिसी जारी की जा सकती है। इस वक्त भले ही भारत और बांग्लादेश के बीच टेस्ट सीरीज खेली जा रही हो, लेकिन फैंस की नजर इस रिटेंशन पॉलिसी पर है, क्योंकि इसी के बाद तय होगा कि टीमें अपने कितने खिलाड़ी रिटेन कर सकती हैं।

इस बीच कुछ खिलाड़ियों के रिटेंशन को लेकर भी तरह तरह की बातें हो रही हैं। इतना ही नहीं सोशल मीडिया पर फेक न्यूज भी खूब दिख रही हैं। इसी तरह की एक खबर ऋषभ पंत को लेकर भी आई, जिसका करारा जवाब इस बल्लेबाज की ओर से दिया गया है।

आईपीएल 2025 के रिटेंशन से पहले सोशल मीडिया पर सूत्रों के हवाले से कई सारी खबरें फैलाई जा रही हैं। जो विशुद्ध रूप से फर्जी हैं। इनका कोई सिर पैर नहीं होता है। ऐसी ही एक खबर सामने आई कि ऋषभ पंत अगले आईपीएल सीजन में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु यानी आरसीबी से खेलने के लिए संपर्क कर रहे हैं। हालांकि कुछ ही देर बाद ऋषभ पंत ने इसे फर्जी खबर करार दिया है। इतना ही नहीं उन्होंने अपने फैंस से सोशल मीडिया पर गलत सूचना फैलाने से दूर रहने की भी बात कही है। एक फैंस ने ट्विटर पर एक अपडेट पोस्ट किया कि पंत ने कप्तान बनने के लिए आरसीबी से संपर्क किया था, लेकिन आरसीबी मैनेजमेंट ने उनके अनुरोध को स्वीकार नहीं किया।

भारत-बांग्लादेश टेस्ट पर इंद्रदेव की नजर

कानपुर, 26 सितंबर। भारत और बांग्लादेश के बीच शुक्रवार से यहां शुरु होने वाले दूसरे टेस्ट मैच पर बारिश के व्यवधान डालने के आसार हैं। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार कानपुर और आसपास के क्षेत्र में कम से कम अगले तीन दिनो तक हल्की से मध्यम वर्षा के आसार हैं। इस दौरान अधिकतम तापमान 29 डिग्री और न्यूनतम 25 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने का अनुमान है। इस अवधि में आसमान बादलों से ढका रहने और उमस में इजाफा होने का अनुमान है। हालांकि 31 और एक अक्टूबर चटक धूप निकलने और तापमान में तेजी से इजाफा होने की संभावना है। मैच की पूर्व संध्या पर भी ग्रीनपार्क के आसमान में बादलों का जमावड़ा लगा रहा और इस दौरान हल्की बारिश भी हुयी हालांकि तब तक टीम इंडिया अपना अभ्यास सत्र पूरा कर चुकी थी। बारिश के कारण बांग्लादेश की नेट प्रैक्टिस पर असर पड़ा। इस दौरान पूरे मैदान को कवर कर दिया गया था।

भारतीय टीम ने किया ऑस्ट्रेलिया का सूपड़ा साफ, टूटा 30 साल पुराना रिकॉर्ड

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। भारतीय अंडर 19 टीम ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की यूथ वनडे सीरीज के आखिरी मुकाबले में भी अपना विजयी अभियान जारी रखते हुए उसे 7 रनों से अपने नाम किया। पुडुचेरी के मैदान पर खेले गए सीरीज के इस आखिरी मुकाबले में भारतीय टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 50 ओवर्स में 8 विकेट के नुकसान पर 324 रन बनाए थे, तो वहीं इसके जवाब में ऑस्ट्रेलियाई टीम की तरफ से भी बेहतरीन बल्लेबाजी प्रदर्शन देखने को मिला लेकिन वह 50 ओवर्स में 7 विकेट के नुकसान पर 317 रनों के स्कोर तक ही पहुंचने में कामयाब हो सके और उन्हें सीरीज के इस आखिरी मुकाबले में भी हार का सामना करना पड़ा। इस मैच में 30 साल पुराना एक बड़ा रिकॉर्ड भी ध्वस्त हो गया।

ऑस्ट्रेलियाई अंडर 19 टीम के कप्तान ने यूथ वनडे सीरीज के इस आखिरी मुकाबले

में टॉस जीतने के बाद पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया था, जिसके बाद भारतीय टीम की तरफ से बल्लेबाजी में ओपनिंग में उतरे साहिल पारख और रुद्र पटेल के बीच पहले विकेट के लिए 34 रनों की साझेदारी देखने को मिली। साहिल के 20 के निजी स्कोर पर पवेलियन लौटने के बाद रुद्र को हरवंश का साथ मिला और दोनों के बीच दूसरे विकेट के लिए 100 से अधिक रनों की साझेदारी देखने को मिली। हरवंश जहां 46 रन बनाकर आउट हुए तो वहीं रुद्र के बल्ले से 77 रन देखने को मिले।

एशियाई खेलों में मेरा पदार्पण सपने जैसा : गुरजोत सिंह

बेंगलुरु, 26 सितंबर । युवा फॉरवर्ड गुरजोत सिंह ने कहा कि हाल ही में चीन के मोकी में हीरो एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 2024 में उनका भारतीय पुरुष हॉकी टीम में पदार्पण सपने के पूरा होने जैसा है। भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) में ट्रायल के दौरान गुरजोत का प्रदर्शन आकर्षक रहा। उन्होंने हीरो एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 2024 के सभी सात मैच खेले, हालांकि वह गोल नहीं कर पाए, लेकिन उन्होंने खुद को बेहतर साबित करने के लिए मैदान पर समर्पण और कड़ी मेहनत दिखाई। गुरजोत ने कहा, सीनियर टीम का माहौल बहुत अच्छा है सभी सीनियर बड़े भाइयों की तरह हैं जो अधिकतर समय माहौल को हल्का रखते हैं। एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी में यह मेरे लिए एक स्वप्निल पदार्पण था। मैं चीन के खिलाफ खेलने के लिए उत्साहित था मुझे लगा कि मैं अपने पदार्पण पर एक गोल करूंगा लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सका। मैंने खेल में अच्छा प्रदर्शन करते हुए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। खेल से पहले हरमनप्रीत सिंह ने मुझे आश्वस्त किया कि ज्यादा सोचने या डरने की जरूरत नहीं है। मुझे बस वैसे ही खेलना है जैसे मैं आमतौर पर शिविर में खेलता हूँ, आजादी से खेलना है और गलतियाँ करने के बारे में नहीं सोचना है। उन्होंने मुस्कान के यादों के झरोखे में जाते हुए कहा, दुर्घटना के बाद, मुझे कुछ सालों तक थोड़ी कमज़ोरी रही, लेकिन जब मैं 10 साल का हुआ।

रिकी पोंटिंग के आते ही पंजाब किंग्स टीम में हुआ बदलाव

रिटेंशन पॉलिसी से पहले इन 2 दिग्गजों की हुई छुट्टी

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। इंडियन प्रीमियर लीग यानी आईपीएल के अगले साल होने वाले सीजन को लेकर पंजाब किंग्स टीम अपने कोचिंग स्टाफ में लगातार कई बड़े बदलाव कर रही है। एक तरफ सभी फ्रेंचाइजियों की नजरें बीसीसीआई की तरफ से मेगा प्लेयर ऑक्शन को लेकर जारी होने वाली रिटेंशन पॉलिसी को लेकर टिकी हुईं हैं तो वहीं पंजाब किंग्स ने कुछ दिन पहले ही अगले सीजन के लिए अपनी टीम के नए हेड कोच के तौर पर रिकी पोंटिंग को जिम्मेदारी सौंप दी थी। उनके आने के बाद से ये तय हो गया था कि कोचिंग स्टाफ में अभी कई और बड़े बदलाव भी देखने को मिलेंगे, जिसमें अब ट्रेवर बेलिस और संजय बांगर दोनों की छुट्टी कर दी गई है।

रिकी पोंटिंग जो आईपीएल 2024 में दिल्ली कैपिटल्स टीम के लिए हेड कोच की जिम्मेदारी को निभा रहे थे तो वहीं अब उन्होंने पंजाब किंग्स की जिम्मेदारी को संभाल लिया है। ईसएपीएन क्रिकइंफो की खबर के अनुसार बेलिस और संजय बांगर को उनके पद से हटाने का फैसला फ्रेंचाइजी के चार सह-मालिकों के बीच हुई मीटिंग के बाद लिया गया। बेलिस ने साल 2023 में पंजाब किंग्स के हेड कोच के तौर पर जिम्मेदारी संभाली थी जिसमें उनके कार्यकाल के दौरान टीम ने 2 आईपीएल सीजन में बेहद शर्मनाक प्रदर्शन किया था। इस दौरान पंजाब किंग्स जहां आईपीएल 2023 में 8वें नंबर पर रही थी को वहीं पिछले आईपीएल सीजन में टीम 9वें नंबर पर थी। वहीं संजय बांगर को पंजाब किंग्स की टीम ने अपना क्रिकेट डेवलपमेंट का हेड बनाया था उन्हें भी उनकी जिम्मेदारियों से अब पंजाब किंग्स ने मुक्त कर दिया है।

आईपीएल 2025 के मेगा प्लेयर ऑक्शन से पहले पंजाब किंग्स कौन-कौन से प्लेयर्स को रिटेन करती है इस पर भी सभी की नजरें रहने वाली हैं, तो वहीं उन्हें अगले सीजन के लिए नए कप्तान को भी चुनना होगा। ऐसे में पंजाब किंग्स के लिए ये ऑक्शन काफी अहम रहने वाला है क्योंकि टीम आखिरी बार साल 2014 के आईपीएल सीजन में प्लेऑफ तक पहुंचने में कामयाब हो सकी थी लेकिन उसके बाद से अब तक वह लीग मुकाबलों के बाद टॉप-4 में खत्म करने में कामयाब नहीं हो सके हैं।

नहीं दिखेगा ग्रीनपार्क का ऐतिहासिक स्कोर बोर्ड

कानपुर, 26 सितम्बर । अपनी हरियाली और बेहतरीन खूबियों वाले मैनुअल स्कोरबोर्ड के कारण दुनिया में दशकों तक अलग पहचान रखने वाले ग्रीनपार्क मैदान में 27 सितंबर से शुरु होने वाले मैच में ऐतिहासिक स्कोरबोर्ड के अवशेष के भी दर्शन नहीं होंगे। वर्ष 1952 में तैयार और 1957 में यहां वेस्टइंडीज के खिलाफ हुये टेस्ट मैच में पहली बार इस्तेमाल होने वाला अनूठा स्कोरबोर्ड रखरखाव के अभाव के कारण कबाड़ में तब्दील हो चुका है।

हालांकि स्कोरबोर्ड का कुछ हिस्सा अब भी मैदान के प्राचीन स्वरुप को दिखाने और दुनिया भर के क्रिकेट प्रेमियों को आकर्षित करने के लिये काफी है मगर कल शुरु होने वाले मैच में इस स्कोरबोर्ड को एक पान मसाला कंपनी के विज्ञापन बोर्ड से ढक दिया गया है। यहां दिलचस्प है कि ग्रीनपार्क स्टेडियम की विजिटर गैलरी में मैदान के ऐतिहासिक महत्व को दर्शाया गया है मगर मैदान की शान रहे स्कोरबोर्ड को तवज्जो नहीं दी गयी है।

आईपीएल 2025 के लिए बीसीसीआई का नया नियम, तो मुंबई इंडियंस को मिलेगी राहत

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। इसी साल दिसंबर के महीने में आईपीएल ऑक्शन 2025 का आयोजन किया जाएगा। लेकिन उससे पहले ही बीसीसीआई एक बड़े नियम में बदलाव कर सकता है। दरअसल, अब तक हर टीम को ऑक्शन से पहले 3 खिलाड़ियों को रिटेन करने की अनुमति थी लेकिन अब ये संख्या तीन से पांच हो सकती है। इस नियम के लागू होने का मतलब है कि मुंबई इंडियंस का बड़ा सिरदर्द खत्म हो जाएगा।

इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट्स के मुताबिक बीसीसीआई हेडक्वार्टर में हाल ही में अहम बैठक हुई थी जिसमें 10 टीमों के मालिक मौजूद थे। ज्यादातर टीम मालिक 5 से 6 खिलाड़ियों को रिटेन करने की अनुमति चाहते थे। रिपोर्ट्स के मुताबिक फ्रेंचाइजी मालिकों के कहने के बाद बीसीसीआई इसके लिए तैयार हो गया है। बोर्ड को लगता है कि ऐसा करने से टीमों की ब्रांड वैल्यू बनी रहेगी। 2022 मेगा ऑक्शन के दौरान हर टीम को

चार खिलाड़ियों को रिटेन की अनुमति थी। इन चार खिलाड़ियों में तीन से ज्यादा भारतीय, और दो से ज्यादा विदेशी नहीं हो सकते थे। बीसीसीआई पांच खिलाड़ियों को रिटेन करने के बारे में तो मान गया है लेकिन ये तय नहीं है कि इसमें कितने भारतीय और कितने विदेशी खिलाड़ी होंगे। अगर पांच खिलाड़ियों को रिटेन करने का नियम आता है तो मुंबई इंडियंस की परेशानी दूर हो सकती है। बीते कई सालों से टीम के मुख्य खिलाड़ी टीम में बने हुए हैं। बीते साल हार्दिक पंड्या को टीम ने बतौर कप्तान टीम में शामिल किया है।

3000 हजार स्कूली बच्चों को नाश्ता-पानी के साथ मैच दिखायेगा यूपीसीए

कानपुर, 26 सितंबर। करीब तीन साल बाद टेस्ट मैच की मेजबानी कर रहा ग्रीनपार्क प्रशासन शुक्रवार से शुरु हो रहे भारत बांग्लादेश मैच के दौरान हर दिन तीन हजार स्कूली छात्र छात्राओं को नाश्ते पानी के साथ फ्री में मैच दिखायेगा। ग्रीनपार्क के वेन्यू डायरेक्टर संजय कपूर ने शुक्रवार को यहां एक प्रेस कांफ्रेंस में यह ऐलान किया। उन्होने कहा हमने तय किया है कि क्रिकेट में दिलचस्पी रखने वाले नौनिहालों को हम पूरे पांच दिन मुफ्त में मैच दिखायेंगे। इसके लिये तीन हजार सीटें रिजर्व रखी जा रहीं हैं। इतना ही नहीं, हम उनके खानपान का भी प्रबंध करेंगे। इसके पीछे हमारा मकसद खेल के प्रति स्कूली छात्र छात्राओं में उत्साह का संचार करना है। उन्होने बताया कि ग्रीनपार्क में पिछले एक महीने में जीर्णोद्धार का काम पूरी तेजी से किया गया।

रोशनी टांक राजस्थान फुटबॉल संघ की महिला विंग की नई चेयरपर्सन बनी

राजस्थान फुटबॉल संघ के 2024-28 के कार्यकाल की प्रथम एग्जीक्यूटिव मीटिंग आयोजित

जयपुर, 26 सितंबर। दिनांक 26-9-2024। राजस्थान फुटबाल संघ के 2024-28 के कार्यकाल की प्रथम एग्जीक्यूटिव मीटिंग आज मिर्जा स्माइल रोड स्थित गोल्डन टयूलिप होटल में आयोजित हुई। मीटिंग की अध्यक्षता राजस्थान फुटबाल संघ के अध्यक्ष कर्नल मानवेंद्र सिंह जसोल ने की। जसोल ने रोशनी टांक को राजस्थान फ़ुटबॉल संघ की महिला विंग की नई चेयरपर्सन बनाए जाने की घोषणा की।

मीटिंग में राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीप सिंह शेखावत और कोषाध्यक्ष कैलाश चंद खटीक, उपाध्यक्ष - महेंद्र सिंह बिजारणिया, मांगीलाल काबरा, शकील अहमद, निर्मल मातोड़िया और अरविंद पाल सिंह के साथ जॉइंट सेक्रेटरी रफीक अहमद सिंधी, कृष्ण अवतार शर्मा, सुनील राव, दिनेश सिंह चौहान और मानवेंद्र सिंह राघव और सदस्य के तौर पर मांगीलाल सोलंकी और गुरमीत मान ने भाग लिया।

मीटिंग में आगामी वर्ष में की जाने वाली विभिन्न खेल गतिविधियों और प्रतियोगिताओं के बारे में राजस्थान फुटबाल संघ के टेक्निकल डायरेक्टर सतीश जांगिड़ ने बताया जिस पर सभी सदस्यों ने विस्तार से विचार विमर्श किया। इस मीटिंग के प्रमुख बिंदु में अगले महीने होने जा रही सीनियर महिला फुटबॉल चैंपियनशिप की मेजबानी राजस्थान फुटबाल संघ के द्वारा की जाना है। यह प्रतियोगिता राजस्थान फुटबाल संघ पहली बार आयोजित करने जा रहा है जिसमें पूरे देश से 8 टीमें 6 अक्टूबर से 17 अक्टूबर के मध्य जयपुर के नव निर्मित टर्फ फुटबॉल ग्राउंड पर मुकाबला खेलेगी।

राहुल टेस्ट में बार-बार फ्लॉप, लेकिन कोच ने बांधे तारीफों के पुल

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। भारतीय क्रिकेट टीम इस वक्त कानपुर में है, जहां भारत और बांग्लादेश के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज का दूसरा मुकाबला खेला जाएगा। दूसरा मैच 27 सितंबर से शुरू होगा। इस बीच मैच से एक दिन पहले भारतीय टीम के सहायक कोच अभिषेक नायर मीडिया से रूबरू हुए और केएल राहुल की जमकर तारीफें करते हुए नजर आए। ये हाल तब है, जब केएल राहुल पिछली कई पारियों से लगातार फ्लॉप चल रहे हैं, उनके बल्ले से रन नहीं बन रहे हैं, बावजूद इसके वे लगातार प्लेइंग इलेवन में अपनी जगह बनाते चले जा रहे हैं। वहीं बाकी बल्लेबाज जो उनसे बेहतर खेल दिखा रहे हैं, उन्हें बाहर बैठना पड़ रहा है।

कानपुर टेस्ट में टीम इंडिया की प्लेइंग इलेवन क्या होगी, जब इसके बार में

अभिषेक नायर से बात की गई तो उन्होंने साफ कह दिया कि मैच की सुबह पिच को देखकर टीम का सेलेक्शन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि उत्तर प्रदेश क्रिकेट संघ ने इस मैच के लिए दो पिचें तैयार की हैं। लेकिन मैच किस पिच पर होगा, ये अभी तय नहीं है। नायर ने कहा कि उन्हें नहीं पता कि किस पिच पर मैच खेला जाएगा। दोनों पिच अच्छी दिख रही है। कानपुर को अच्छी पिच तैयार करने के लिए जाना जाता है। उनका कहना है कि अभी नहीं पता कि इससे उछाल मिलेगी या नहीं। इसके बाद जब अभिषेक नायर से केएल राहुल को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि राहुल अपने खेल को अच्छी तरह से समझते हैं। दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने खास पारियां खेली थी। उन्होंने विश्वास जताया कि वह अच्छा प्रदर्शन करेंगे। उनका कहना है कि टीम के हेड कोच और वे खुद जिस तरह का संयोजन चाहते हैं, उम्मीद है कि हम उसमें राहुल से भी अच्छा प्रदर्शन करवाने में सफल रहेंगे।

बड़ी बात ये है कि जब बीसीसीआई की ओर से टीम का ऐलान इसी सीरीज के लिए किया गया था, तब कप्तान के तौर पर तो रोहित शर्मा का नाम लिखा गया था, लेकिन उपकप्तान का कॉलम खाली था। जब इस बारे में अभिषेक नायर से सवाल किया गया तो उन्होंने दो टूक कहा कि इसकी जरूरत नहीं है। उनका कहना है कि इस टीम में कई कप्तान हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने समालखा, सोनीपत व करनाल में चुनावी सभाएं कीं

उन्होंने राहुल गांधी से पूछा, ''देश के विरोधी लोगों के साथ अपना रिश्ता बताएं''

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने हरियाणा विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान समालखा, सोनीपत व करनाल में चुनावी सभाएं की।

- **मु.मंत्री ने कहा, पड़ोसी राज्य होने के कारण राजस्थान और हरियाणा में बहुत गहरा रिश्ता है। खाटू श्याम जी 100 करोड़ के कॉरिडोर से दर्शनार्थियों के लिये सुविधाएं बढ़ेगी।**
- **उन्होंने कहा, देश में कांग्रेस से बड़ी झूठी, भ्रष्ट और बेईमान कोई पार्टी नहीं है। कांग्रेस भ्रष्टाचार की जननी है।**

हरियाणा, 26 सितंबर। मुख्यमंत्री भजनलाल ने गुरुवार को हरियाणा के ''समालखा'' विधानसभा प्रत्याशी मनमोहन भडाना के समर्थन में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि राहुल गांधी दुनिया में देश को शर्मसार करने का कोई मौका नहीं छोड़ते। वे उन लोगों के साथ खड़े होते हैं, जो देश- विरोधी गतिविधियों में लिप्त हैं। राहुल गांधी यह बताएं कि उनका देश विरोधियों से क्या रिश्ता है? कांग्रेस का असली चरित्र यही है। इनका राष्ट्रहित से कोई सरोकार नहीं है।

उन्होंने कहा कि हरियाणा की जमीन वह तपोभूमि है, जिसने सनातन धर्म और संस्कृति को लगातार मजबूत करने का काम किया है। पड़ोसी राज्य होने के कारण, राजस्थान और हरियाणा में बहुत गहरा रिश्ता है। उन्होंने कहा कि राजस्थान सरकार 100 करोड़ रुपये की लागत से खाटू श्याम में कॉरिडोर विकसित करेगी, जिससे दर्शनार्थियों के लिए सुविधाएं विकसित होंगी।

शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सैनी के कुशल नेतृत्व में हरियाणा में पिछले 10 वर्षों में पारदर्शी तरीके से परीक्षाएं आयोजित हो रही हैं। सैनी किसानों व मजदूरों के दर्द को समझते हैं। हरियाणा में जब एम.एस.पी. पर बाजरा खरीदा जा रहा था, तब राजस्थान के किसान राज्य में भी एम.एस.पी. खरीद के लिए आंदोलन कर रहे थे। यही कारण रहा कि राजस्थान में किसानों को बाजरे के 1200 रुपये मिले और हरियाणा में 2200 रुपये। उन्होंने कहा कि यहां के लोगों का उत्साह यह बता रहा है कि जनता ने हरियाणा में भाजपा को जिताकर हैट्रिक लगाने का फैसला कर लिया है। शर्मा ने कहा कि देश में कांग्रेस से बड़ी झूठी, भ्रष्ट और बेईमान कोई पार्टी नहीं है। कांग्रेस भ्रष्टाचार की जननी है।

शर्मा ने कहा कि इतनी बड़ी संख्या में लोग बड़े उत्साह तथा उमंग के साथ अपना समर्थन देने आए हैं, जो यह दर्शाता है कि क्षेत्र में अधिक से अधिक सीटें भारतीय जनता पार्टी जीतेगी। उन्होंने भाजपा प्रत्याशी को अधिक से अधिक मतों से विजयी बनाने की अपील की।

शर्मा ने कहा कि विकसित भारत और विकसित हरियाणा के लिए सभी को मिलकर कार्य करना होगा। उन्होंने आमजन से गहलावत को अधिकाधिक मतों से विजयी बनाने की अपील की। इस दौरान हरियाणा भाजपा के वरिष्ठ कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित थे।

बिलकीस बानो केस में गुजरात सरकार की याचिका खारिज

नयी दिल्ली, 26 सितंबर। बिलकिस बानो मामले में गुजरात सरकार को सुप्रीम कोर्ट से बड़ा झटका लगा है। सर्वोच्च न्यायालय ने गुजरात सरकार की पुनर्विचार याचिका खारिज कर दी और बिलकिस बानो मामले में दोषियों की रिहाई से जुड़े अपने आदेश में की गई टिप्पणियों को हटाने से इंकार कर दिया है।

गुजरात सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दायर की थी। इस याचिका में कहा गया था कि बिलकिस बानो मामले में दोषियों की रिहाई के समय कोर्ट ने गुजरात सरकार को लेकर जो टिप्पणियां की थीं, उन्हें हटाया जाना चाहिए। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने यह याचिका खारिज कर दी है।

गुजरात सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर कर 2002 के दंगों के दौरान बिलकिस बानो बलात्कार मामले में 11 दोषियों की समय पूर्व रिहाई को खारिज करने के फैसले में गुजरात सरकार के खिलाफ कुछ टिप्पणियों को अनुचित बताते हुए उसे हटाने का अनुरोध किया था।

'अपने स्वार्थ के लिये गहलोत ने सरकार व शासन कर दुरुपयोग किया'

क्लीन चिट के बाद जोधपुर में गजेन्द्र सिंह शेखावत ने गहलोत पर तीखे हमले किये

- **उन्होंने कहा, ''पूर्व मुख्यमंत्री ने मेरी दिवंगत मां के लिये जिन शब्दों का प्रयोग किया, उसके बाद मैंने दिल्ली में मानहानि का मुकदमा दर्ज किया था।''**
- **''अपने प्रतिद्वंदी को फंसाने की उनकी परिपाटी रही है। राजेन्द्र चौधरी, मदेरणा परिवार व रामसिंह जी का परिवार इसका उदाहरण हैं।''**

जोधपुर, 26 सितम्बर (कासं)। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने संजीवनी प्रकरण में हाईकोर्ट से क्लीन चिट मिलने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर तीखा हमला बोला। जोधपुर पहुंचे शेखावत ने कहा कि अपने प्रतिद्वंद्वी को इसी तरह से फंसाने की उनकी पुरानी परिपाटी रही है। उनकी राजनीति एक बार फिर उजागर हुई है। शेखावत ने आरोप लगाया कि पूर्व मुख्यमंत्री ने अपने राजनीतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए सरकार और शासन व्यवस्था का दुरुपयोग किया।

गुरुवार को केन्द्रीय मंत्री शेखावत जोधपुर में पत्रकारों से रू-ब-रू हुए। उन्होंने नाम लिए बगैर पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत पर तीखे हमले करे और कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री ने मुझे और मेरे परिवार को बदनाम करने के तमाम प्रयास किए। मेरी दिवंगत माता के लिए किस तरह के शब्दों का उपयोग किया, मैं वापस उन्हें दोहराना नहीं चाहता। मैंने उसके बाद दिल्ली में मानहानि का मुकदमा दर्ज किया था।

पूर्व मुख्यमंत्री पर हमलावर होते हुए शेखावत ने कहा, केवल पुत्र मोह नहीं था, कुर्सी पर बने रहने और अपनी सिमटी राजनीतिक जाजम को बचाने के लिए अपने प्रतिद्वंद्वी को इसी तरह से फंसाने की उनकी पुरानी परिपाटी रही है। ऐसे अनेक उदाहरण आप उनके दल में और दल के बाहर देख सकते हैं। राजेंद्रसिंह चौधरी, मदेरणा परिवार और रामसिंहजी के परिवार के साथ में किस तरह की घटनाएं हुईं। ऐसी अनेक घटनाएं सूत्र में पिरोकर देख लीजिए, सत्य उद्घटित हो जाएगा।

फोन टैपिंग प्रकरण के सवाल पर शेखावत ने कहा कि कल फोन टैपिंग प्रकरण में पूर्व मुख्यमंत्री के पूर्व ओ.एस.डी. से छह घंटे की पूछताछ में सारा विवरण खुलकर सामने आया है। किस तरह तत्कालीन मुख्यमंत्री अपने विधायकों, अपने मंत्रियों और विपक्षी नेताओं के फोन टैप करवाते थे। किस तरह से उन्होंने फोन टैप कर ऑडियो पैन ड्राइव में डालकर लोकेश शर्मा को दिया था। लोकेश शर्मा ने उनके निर्देश पर टैप को वायरल किया।

संजीवनी के निवेशकों को उनका पैसा वापस मिलने के सवाल पर शेखावत ने कहा कि निश्चित रूप से उसकी प्रक्रिया चालू है। शेखावत ने कहा कि मैं पूरे प्राण प्रण की ऊर्जा से निवेशकों का डूबा हुआ पैसा उनको मिल सके, इसलिए उनके साथ में खड़े रहकर काम करने के लिए पहले भी संकल्पबद्ध था और अभी भी हूं।

चीन की आक्रामक विदेशी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इस हेट क्राइम ने, जापानी लोगों और उनके देश के विरुद्ध अधिकारिक मीडिया तथा पब्लिक पॉलिसी फोरम द्वारा लगातार चलाये जा रहे हेट कैम्पेन को लेकर देश के लोगों की आँखें खोल दी हैं। चीन पूरे विश्व पर अपने प्रभुत्व का प्रचार करके एक तरह के उग्र राष्ट्रवाद को बढ़ावा दे रहा है।

हेट कैम्पेन और विदेशी लोगों के प्रति नफरत को देश के सर्वोच्च नेता शी जिनपिंग ने बढ़ावा दिया था, ताकि बाहरी दुनिया के साथ अपने व्यवहार में देश का एक कट्टर राष्ट्रवादी चेहरा सामने लाया जा सके। शी व्यक्तिगत रुप से, चीन की श्रेष्ठता के अपने दावों को न्यायसंगत ठहराने के लिए इस तरह के कट्टरपंथी राष्ट्रवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। वे पड़ोसी क्षेत्रों में चीन के स्वामित्व के दावे भी करते रहे हैं।

अमेरिका- विरोधी नारे भी कट्टरपंथी राष्ट्रवाद अभियान का हिस्सा रहे हैं, जिसमें अमेरिकियों को, युद्ध के लिए उकसाने वाले और वैश्विक क्षेत्र में चीन के उदय के खिलाफ साजिश रचने वालों के रुप में दिखाया गया है। यहाँ तक कि प्राइमरी स्कूलों को भी कट्टर राष्ट्रवाद अभियान से अछूता नहीं रखा गया है।

शी और उनके सहयोगियों ने युवाओं के मन में अपने देश को लेकर गर्व तथा बाकी विश्व के लिए हीनता की भावना को बैठाने का काम किया है।

कूटनीति के माध्यम से चीन अपनी आक्रामक विदेश -नीति को आगे बढ़ा रहा है। इसके राजनयिकों ने, जो ''वुल्फ डिप्लोमैट्स'' के नाम से जाने जाते हैं, कूटनीतिक मानदंडों से हटकर, सामान्य कूटनीतिक चर्चाओं में आलोचना करने में एक चरम रवैया अपनाया है।

चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी शाखाएं जापानियों पर विशेष रुप से कठोर रहे हैं, दूसरे विश्व युद्ध के दौरान देश के बड़े हिस्से पर जापान के कब्जे को याद करके।

बेशक, युद्ध के दिनों में जापानियों ने बहुत अधिक क्रूर व्यवहार किया था और पार्टी के नेता जापान विरोधी भावनाएं भड़काने के लिए इन पर जोर देते रहे हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि शी ने अपने पड़ोसियों तथा कथित दुश्मनों, जिनमें उनके धुर विरोधी अमेरिका व जापान शामिल हैं, के साथ व्यवहार में बहुत आक्रामक रुख रखा है। वे यह साबित करना चाहते हैं कि चीन मानव सभ्यता के उच्चतम स्वरुप का प्रतिनिधित्व करता है, और इसकी उपलब्धियाँ बेमिसाल हैं।

वे निकट व दूर के देशों में साम्राज्यवादी आधिपत्य स्थापित करना चाहते हैं।

वर्षों तक ऐसी भावनाएं भड़काने के परिणामस्वरुप, देश में उग्र चीनी युवाओं के समूह नज़र आते हैं, जो किसी भी कीमत पर अपना प्रभाव व शक्ति साबित करना चाहते हैं। अब यह अभियान पलटवार कर रहा है चीन की मानसिक स्थिति पर।

हिमाचल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विरूद्ध हैं। ग्रामीण विकास मंत्री अनिरुद्ध सिंह ने अभी हाल ही में हिमाचल में ''रोहिंग्याओं तथा बाँग्लादेशियों के प्रवेश को रोकने'' की बात कही थी। राज्य कांग्रेस के अन्य ग्रुपों का दृष्टिकोण इस से पूरी तरह भिन्न है। यह स्थिति राज्य कांग्रेस के अन्दर गंभीर अंदरुनी लड़ाई का रूप ले सकती है।

पूर्व मंत्री महेश ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शादी के लिए दबाव डाला था। उसने रोहित पर उसकी पत्नी को तलाक देने व उसके साथ शादी करने के लिए कहा था। जवाब में शिकायतकर्ता की ओर से एडवोकेट शिवमंगल शर्मा ने कहा कि मामले में दुष्कर्म सहित अन्य गंभीर आरोप हैं।

ऐसे में एफआईआर व चार्जशीट को रद्द करने वाली याचिका सुनवाई किए जाने योग्य नहीं है। उन्होंने अदालत से आग्रह किया कि शिकायतकर्ता को सुने बिना कोई भी आदेश जारी नहीं किया जाए। गौरतलब है कि इस मामले में रोहित जोशी के खिलाफ शिकायतकर्ता पीड़िता ने दिल्ली के सदर बाजार पुलिस थाने में 9 मई, 2022 को रिपोर्ट दर्ज कराई थी। याचिका में रोहित जोशी पर दुष्कर्म, गर्भपात कराना और अप्राकृतिक कृत्य सहित अन्य आरोप लगाए गये थे।

ऑर्गन ट्रांसप्लांट मामले में हाई कोर्ट ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है। जस्टिस गणेश राम मीना ने यह आदेश आरोपियों की जमानत याचिकाओं पर दिया।

अदालत ने फैसले में कहा कि डॉ. संदीप गुप्ता ने अस्पताल प्रशासन को एन.ओ.सी. पेश करने के बाद ही ऑपरेशन किए थे, ऐसे में यह नहीं कहा जा सकता कि दोनों डॉक्टर्स फर्जी एन.ओ.सी. लेने की कार्रवाई में शामिल रहे हैं या उन्हें फर्जी एन.ओ.सी. की जानकारी थी। इसके अलावा टोहो अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार भी, एन.ओ.सी. तैयार करने में भी उनकी कोई भूमिका नहीं रही है। वहीं, अदालत ने बचाव पक्ष की इस दलील को भी माना कि टोहो एक्ट की धारा 22 के तहत केस में पुलिस की चार्ज शीट के आधार पर कोर्ट प्रसंज्ञान ही नहीं ले सकता। अदालत ने आरोपी बांग्लादेशी नागरिक नुरूल इस्लाम सहित अन्य की जमानत याचिकाएं यह कहते हुए खारिज कर दीं कि उनके खिलाफ ऑर्गन ट्रांसप्लांट करवाने के लिए फर्जी एन.ओ.सी. लेने का अपराध प्रथम दृष्टया साबित है और यह गंभीर अपराध है। दरअसल कंपाउंडर भानू लववंशी ने अधिवक्ता दीपक चौहान, डॉ. संदीप गुप्ता ने अधिवक्ता हेमंत नाहटा व डॉ. जितेन्द्र गोस्वामी ने अधिवक्ता रिपुदमन सिंह के जरिए जमानत याचिकाएं दायर कर अदालत से जमानत दिए जाने का आग्रह किया था।

डॉ. संदीप गुप्ता की ओर से कहा गया कि पूरे मामले में राज्य सरकार के अफसरों ने अनुसंधान अधिकारी के साथ मिलकर कानूनी तौर पर धोखा किया है। मामले में कोई पीड़ित व्यक्ति ही नहीं है और ना ही कोई मानव तस्करी का शिकार व्यक्ति पेश हुआ है। ऐसे में उनकी ओर से कोई अपराध ही नहीं किया है, जबकि नुरूल इस्लाम व अन्य की ओर से कहा गया कि उन्होंने तय कानूनी प्रक्रिया के तहत ही आर्गन ट्रांसप्लांट करवाए थे। उन्हें यह नहीं पता था कि आर्गन ट्रांसप्लांट के लिए फर्जी एन.ओ.सी. ली गई है।

100 करोड़ रूपए ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के दावे में संजय राउत को दोषी करार दिया है।

उद्धव ठाकरे गुट के नेता संजय राउत ने आरोप लगाया था कि सोमैया दंपत्ति शौचालय निर्माण के लिए धन का दुरुपयोग करके 100 करोड़ रुपये के घोटाले में शामिल हैं। इसके बाद मेधा किरीट सोमैया ने संजय राउत के खिलाफ शिकायत की थी और100 करोड़ रुपये की मानहानि का केस दर्ज कराया था। मानहानि के इस मामले में संजय राउत दोषी करार दिए गए है।

यमुना एक्सप्रेस वे पर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

चालकों को 270 रुपये देना होता था।

अब बस चालकों को 935 रुपये टोल देना होगा। इससे पहले बसों के लिए टोल 895 रुपये निर्धारित था। वहीं, ओवर साइज़ वाहनों के लिए टोल अब 1760 से बढ़ाकर 1835 रुपये कर दिया गया है।

टोल बढ़ोतरी से उन यात्रियों को जेब हल्की करनी पड़ेगी, जो कार-बाइक या बस से रोजाना यमुना एक्सप्रेस वे पर सफर करते हैं। हालांकि यमुना प्राधिकरण का दावा है कि टोल वृद्धि वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए जे.पी. इंफ्राटेक द्वारा प्रस्तुत प्रस्तावों पर आधारित है, जिसे अब 2024-25 में लागू किया जाएगा। प्राधिकरण ने दावा किया है कि इससे यात्रियों पर ज्यादा बोझ नहीं पड़ेगा। गुरुवार को हुई 82वीं बोर्ड बैठक में टोल बढ़ोतरी के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई।

कर्नाटक ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

के खिलाफ सार्थक जाँच नहीं कर सकती है। विपक्ष की मांग है कि सिद्धारमैया को नैतिक जिम्मेवारी लेते हुए इस्तीफा दे देना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने इस मांग को सिरे से खारिज कर दिया और कहा कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है और केस रद्द हो जाएगा। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता मुख्यमंत्री पर मुकदमा चलाने की अनुमति देने के लिए गवर्नर की आलोचना कर रहे हैं उनका कहना है कि राज्यपाल ने जानबूझकर इस मामले में मुख्यमंत्री पर निशाना साधा है तथा इस कांड में फायदा उठाने वाले अन्य लोगों पर कुछ नहीं कहा है क्योंकि इसके कई वरिष्ठ भाजपा नेता व केन्द्रीय मंत्री एच.डी. कुमारास्वामी भी शामिल हैं। राज्य के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार तथा आई.टी. मंत्री प्रियांक खड़गे व अन्य वरिष्ठ मंत्रियों, विधायकों व दिल्ली के वरिष्ठ नेताओं ने मुख्यमंत्री को पूर्ण समर्थन दिय है। उन्होंने कहा कि भाजपा हमेशा केन्द्रीय संस्थाओं का दुरुपयोग करती है और विपक्षी नेताओं पर झूठे केस लगाती है खासकर तब जब चुनाव हो। इस समय जम्मू-कश्मीर तथा हरियाणा में विधानसभ चुनाव है।

प्र.मंत्री मोदी ने डॉ. मनमोहन सिंह...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

स्नेहपूर्वक याद किया। उन्होंने सिंह को अत्यावश्यक कल्याणकारी नीतियों को आगे लाने का श्रेय दिया। उन्होंने कहा, ''मनमोहन सिंह जी ने जनता को, चकित कर देने वाली कल्याणकारी नीतियाँ तथा मनरेगा एवं भोजन का अधिकार, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार जैसे अधिकार दिये। ईश्वर आपको अच्छा स्वास्थ्य एवं लंबी आयु प्रदान करे।''

सिंह की सराहना करने वाले नेताओं के समूह में आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविन्द केजरीवाल भी शामिल थे। केजरीवाल ने कहा, ''पूर्व प्रधानंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को जन्म दिन की बधाई। उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुदीर्घ जीवन के लिये मंगल कामनाएँ।''

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सिंह को सम्मान सहित याद करते हुए उन्हें ''राजनीति के क्षेत्र में सादगी, गरिमा एवं विद्वत्ता (इंजीन्यूटी) का दुर्लभ एवं साकार रूप बताया। अपने भावभीने स्मरण में उन्होंने कहा, ''पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी के जन्म दिन के अवसर पर, मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ। वे एक स्वप्नदृष्टा राजनेता रहे, जिनके कार्य उनके शब्दों से ज्यादा मुखर थे। हम देश के लिये उनके जबरदस्त एवं अमूल्य योगदान के लिये, उनके हृदय से कृतज्ञ हैं।''

असम के मुख्यमंत्री हिमन्ता बिस्वा सरमा ने भी सिंह को जन्म दिन की भावनापूर्ण बधाई और कहा, ''पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को उनके जन्म दिन पर हार्दिक बधाई। उनके लम्बे एवं स्वस्थ जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना है।''

कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी, जो सिंह के प्रशंसक के रूप में प्रसिद्ध हैं, ने पूर्व प्रधानमंत्री को एक ''महान स्वप्नदृष्टा'' बताया, जिनके कार्य उनके शब्दों से कहीं ज्यादा मुखर थे। उन्होंने ''एक्स'' पर पोस्ट किया, ''महान स्वप्नदृष्टा एवं पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के जन्म दिन की शुभकामनाएँ, जिन्होंने वैश्विक नेताओं को बात कम करना तथा ज्यादा काम करना सिखाया, ताकि वे भारत जैसे देश की तरह ग्रोथ के लक्ष्य हासिल कर सकें, उन्होंने कहा कि सिंह ने भारत की अत्यधिक गतिशील एवं स्थाई तरक्की की नींव रखी। ईश्वर उन्हें स्वस्थ रखे एवं लम्बा जीवन प्रदान करे।''

एन.सी.पी. (एस.पी.) अध्यक्ष शरद पवार ने कहा, ''देश के पूर्व प्रधानमंत्री तथा वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ. मनमोहन सिंह को जन्म दिन की बधाई। ईश्वर आपको स्वस्थ रखे एवं सुदीर्घ जीवन प्रदान करें।''

कर्नाटक के उप मुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने सिंह की नेतृत्व-शैली पर अपने विचार व्यक्त करते हुये उनकी ''सादगी एवं विज़न'' की प्रशंसा की। उन्होंने लिखा, ''पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को जन्म दिन की बधाई। जिस सादगी एवं विज़न के साथ आपने देश का नेतृत्व किया है तथा दृढ़ इच्छा शक्ति एवं सत्यनिष्ठा का परिचय दिया है, वह सचमुच ही उल्लेखनीय है तथा सभी पार्टियों के नेताओं को प्रेरित करने वाला है।''

एन.सी.पी. (एस.पी.) की कार्यकारी अध्यक्ष सुप्रिया सुले ने सोशल मीडिया पर सिंह की आर्थिक बुद्धिमता की प्रशंसा करते हुए कहा, ''भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एवं महान अर्थशास्त्री, माननीय डॉ. मनमोहन सिंह सर को जन्म दिन की बहुत-बहुत बधाई। ईश्वर आपको लम्बा एवं स्वस्थ जीवन प्रदान करे।''

कांग्रेस ने के.सी. वेणुगोपाल ने सिंह के कार्यकाल को भारत की अपूर्व ग्रोथ को दौर बताया। उन्होंने कहा, ''मैं पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को, उनके जन्म दिन के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई देता हूँ। यू.पी.ए. शासनकाल के दौरान डॉ. सिंह के कार्यकाल में, भारत ने अपूर्व ग्रोथ, उन्नति तथा कायाकल्प देखा। उन पर अनेक हमले भी होते रहे, जैसा कि उन्होंने एक बार कहा था, इतिहास उनके प्रति अधिक दयालु रहेगा तथा भारत के विकास में उनका योगदान इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।''

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंभाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908